श्रीः

श्रीबृहत्कवचसंग्रहः

आचार्य-शिवप्रसाद द्विवेदी

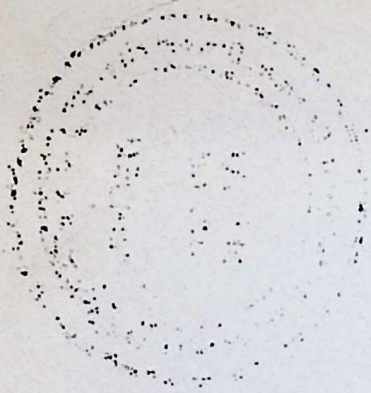

श्रीः

श्रीबृहत्कवचसंग्रहः

सम्पादकः

आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी

प्राचार्यः

श्रीहनुमत् संस्कृत महाविद्यालय

हनुमानगढ़ी, अयोध्या.

प्रकाशक :

भारतीय विद्या प्रकाशन

दिल्ली वाराणसी

(भारत)

© प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन
(1) 1 यू०बी०, जवाहर नगर, बैंग्लोरोड, दिल्ली-110007. फोन : 2521570
(2) पो० बॉ० 1108, कचौड़ी गली, वाराणसी-221001. फोन : 322376

संस्करण : 2003

मूल्य : 60.00 (साठ रुपये मात्र)

मुद्रक :
जैन अमर प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली-110007

विषयानुक्रम

क्रम सं०		पृ० सं०	क्रम सं०		पृ० सं०
१.	श्रीरामकवचम्	१	२.	श्रीसीताकवचम्	४
३.	श्रीजानकी-कवचम्	६	४.	श्रीलक्ष्मण-कवचम्	८
५.	श्रीभरत-कवचम्	१०	६.	श्रीशत्रुघ्नकवचम्	१२
७.	श्रीसुदर्शन-कवचम्	१४	८.	श्रीनारायण-कवचम्	२०
९.	श्रीनृसिंहकवचम्	२५	१०.	विष्णुपञ्जरस्तोत्रम्	२६
११.	श्रीएकमुखी हनुमत्-कवचम्	२९	१२.	श्रीपञ्चमुखी हनुमत्-कवचम्	३५
१३.	गरुडकवचम्	४०	१४.	श्रीभगवती-कवचम्	४०

क्रम सं०		पृ० सं०	क्रम सं०		पृ० सं०
१५.	वैरिनाशनं कालिकवचम्	४१	१६.	श्रीदुर्गाकवचम्	४४
१७.	अमोघशिवकवचम्	४९	१८.	श्रीदत्तात्रेयबज्र कवचम्	५५
१९.	श्रीमाहेश्वर-कवचम्	६२	२०.	बगलमुखीकवचम्	६४
२१.	रामरक्षास्तोत्रम्	६६	२२.	श्रीगणेश-कवचम्	६९
२३.	सूर्यकवचम्	७१	२४.	श्रीराधा-कवचम्	७३
२५.	श्री हयग्रीव-कवचम्	७५	२६.	श्री तुलसी-कवचम्	७६
२७.	मृतसंजीवन-कवचम्	७८	२८.	श्रीहनुमदघोरास्त्रम्	८०
२९.	श्रीहनुमल्लोललांगूलशत्रुञ्जयस्तोत्रम्	८४	३०.	श्रीहनुमत् जंजीरा	८७
३१.	श्रीहनुमत् स्त्रोत्रम्	८८	३२.	श्रीहनुमत् मालामन्त्रः	८९
३३.	श्रीहनुमदापदुद्धारस्तोत्रम्	९०	३४.	वाडवानलस्तोत्रम्	९१
३५.	श्रीहनुमद्दुर्गास्तोत्रम्	९३	३६.	श्रीरामस्तवराज-स्तोत्रम्	९६
३७.	श्रीरामसर्वस्व-स्तोत्रम्	१०४	३८.	श्रीरामदुर्ग स्तोत्रम्	१०५
३९.	संग्रामविजयविद्या	१०८	४०.	त्रैलोक्यविजयविद्या	११०

क्रम सं०		पृ० सं०	क्रम सं०		पृ० सं०
४१.	श्रीशालग्रामस्तोत्रम्	१११	४२.	श्रीदेव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्	११४
४३.	श्रीरामाष्टोत्तरशतनामवलिः	११६	४४.	श्रीहनुमदष्टोत्तरशतनामार्वालः	११७
४५.	इन्द्रकृतलक्ष्मी स्तुतिः	११८	४६.	कनकधारा श्रीलक्ष्मीस्तवराजस्तोत्रम्	१२१
४७.	श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्	१२५	४८.	नेत्रोपनिषत्	१२८
४९.	सरस्वतीस्तोत्रम्	१२९	५०.	सभी राशियों के अलग-अलग पन्द्रहा यन्त्र	१३२
५१.	विविध उपयोगी यन्त्र	१३३	५२.	श्रीसीता अष्टोतरशत नामावलिः	१३४
५३.	श्रीसीता अष्टोतर शत नामावलिः	१३५			

श्रीः

श्रीबृहत्कवचसंग्रह

।। अथ श्रीरामकवचम्।।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।। पार्वत्युवाच।। भगवन्सर्व-देवेश सर्वदेवनमस्कृत।। सर्वं मे कथितं देव राममन्त्रो विशेषतः।। १।। त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं पूर्वसूचितम्।। कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा।। २।। ईश्वर उवाच।। शृणु वक्ष्यामि देवेशि कवचं परमाद्भुतम्।। अत्यन्तगोपनं गुह्यं सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।। ३।। ओमस्य श्रीरामत्रैलोक्यमोहनकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता मम चतुर्वर्गसाधने विनियोगः।। प्रणवो मे शिरः पातु तारको ब्रह्मरूपकः।। अन्नतोऽग्न्यासनः सेन्दुर्नासामेकाक्षरोऽवतु।। १।। रां रामाय नम इति षड्वर्णोभुक्तिमुक्ति दः।। भालंपायान्नेत्रयुग्मं रामोद्व्यक्षरसंज्ञकः।। २।। क्लीं मे पायाच्छ्रोत्रयुग्ममेकाक्षरश्च

मोहनः।। क्लीं रामाय नम इति मुखं मे परिरक्षतु।। ३।। रां रामचन्द्राय स्वाहा अष्टार्णो मे भुजद्वयम्।। श्रीरामाय नम इति स्कन्धौ पातुखरान्तकः।। ४।। श्रीरामचन्द्राय रक्षोघ्नाय नम इति द्वांदशाक्षरः।। हृदयं मे सदा पातु रघुवंशसमुद्भवः।। ।। ५।। ह्रीं रामचन्द्राय नम इति पातु मे ऊरुयुग्मकम्। श्रीरामद्राय स्वाहा नाभिमष्टाक्षरोऽवतु।। ६।। क्लीं रामभद्राय सीतायाः पतये नमः।। सक्थिनी सततं पातु राक्षसेन्द्रविमर्दकः।।७।। प्रणवो रामचन्द्राय हृदित्यष्टाक्षरोऽवतु।। जानुनी मे सदा पातु रक्षः कुलविनाशकः।। ८।। प्रणवो रामभद्राय द्विष्ठान्तोऽष्टाक्षरोऽवतु।। पादयुग्मं सदा पातु वानरेन्द्रश्रियःप्रदः।। ९।। ह्रीं सीतापतये नमः प्राच्यां मां सर्वदावतु।। ह्रीं जानकीवल्लभायपातु याम्ये सदा प्रभुः।। १०।। क्लीं जानकीनाथायेति प्रतीच्यां मां सदावतु।। श्रीरघुनाथाय नमः कौबेर्य्यां दिशि रक्षतु।। ११।। हुं जानकीवल्लभाय स्वाहाग्नेय्यां सदावतु।। ॐ ह्रीं भरताग्रजाय रामाय क्लीं स्वाहेति नैॠत्यां सदा प्रभुः।। १२।। ॐ रां श्रीजानकीवल्लभाय स्वाहेति वायव्ये मां सर्वदावतु।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दाशरथये नम इति ईशाने मां सर्वदावतु।। १३।। ॐ नमो भगवते ब्रूयाच्चतुर्थ्या रघुनन्दनम्।। रक्षोघ्नविशदायेति मधुरादिसमीरयेत्।। १४।। प्रसन्नवदनायेति पश्चादमित तेजसे।। बलाय पश्चाद्रामाय विष्णवे तदनन्तरम्।। १५।। प्रणवादिनमोन्तं च मालामन्त्रमुदीरयेत्।। राजस्थाने सदा पातु

रघुवंशसमुद्भवः॥ १६॥ ॐ नमो भगवते ब्रूयाद्रामाय तदनन्तरम्॥ महापुरुषाय प्रोच्य पश्चान्नम उदीरयेत्॥१७॥ इत्यष्टाक्षरो मन्त्रो मामेवं सर्वदावतु॥ ध्यायेत्तु पुण्डरीकाक्षं परंज्योतिः परात्परम्॥ १९॥ राम एव परं ब्रह्म सच्चिदानन्दलक्षणः॥ इति ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥ १९॥ अथ रामगायत्री॥ ॐदाशरथाय विद्महे, सीतावल्लभाय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात्॥ २०॥ इति श्रीरामगायत्री बीजमन्त्रप्रवर्द्धिनी। गायत्रीजपमात्रेण भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ २१॥ इति ते कथितं देवि सर्वमन्त्रौघविग्रहम्। त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम्॥ २२॥ प्रातः काले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टं फलमाप्नुयात्॥ पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः॥२३॥ कीर्तिश्रीकान्तिमेधायुर्बृहितो भवति ध्रुवम्॥ राममन्त्रमयं ब्रह्म कवचं मन्मुखोदितम् ॥२४॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं हि पठेत्ततः॥ द्विः सकृद्वा यथान्यायं सोऽपि पुण्यवतां वरः॥ २५॥ देवमभ्यर्च्य विधिवत् पुरश्चर्य्यां समाचरेत्॥ अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनादिकम्॥ २६॥ ततस्तु सिद्धकवचः सर्वकार्य्याणि साधयेत्॥ मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्यां विना ततः॥ २७॥ गद्यपद्यमयी वाणी तस्य वक्त्रात्प्रवर्तते॥ वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमलानिश्चला गृहे॥२८॥ पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत्॥ अपि वर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्॥ २९॥ विलिख्य भूर्जपत्रेण स्वर्णस्थं धारयेद्यदि॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ स

कुर्य्याद्दासवज्जगत्।। ३०।। त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत्।। तद्गात्रं प्राप्यशस्त्राणि ब्रह्मास्त्रदीनि यानि च।। ३१।। माल्यानि कुसुमानीव सुखदानि भवन्ति हि।। स्पर्द्धामुद्भूय भवने लक्ष्मीर्वाणी मुखे वसेत् ।। ३२।। इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्राममन्त्रकम्।। शतलक्षं प्रजप्तोपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः।। ३३।। सशस्त्राघातमाप्नोति सो चिरान्मृत्युमाप्नुयात्।। सम्यज्ज्ञात्वा तु कवचं मन्त्रः स्याच्छीघ्रसिद्धिदः।। ३४।। इति श्रीब्रह्मयामले तन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे रामकवचं सम्पूर्णम्।। विधिः।। प्रथमदिने गायत्रीजपः ।। १०८।। दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।। मन्त्रसमर्पणम्।। गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।। लक्षम् १००००० होमः।। ॐ रां सीतावल्लभाय जुहोमि स्वाहा।। तर्पणम् १०००।। ॐ रां सीतावल्लभय तर्पयामि स्वाहा।। अभिषेकः।। ॐ रां सीतावल्लभाय अभिषिञ्चामि स्वाहा।। मार्जनम् १००।। ॐ रां सीतावल्लभाय मार्जयामि स्वाहा।। ब्राह्मणभोजनम्।। १०।। सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीसीताकवचम्।।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।। लक्ष्मण उवाच।। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा नत्त्वा शिरसि लक्ष्मणः।। उवाच परमं

दिव्यं सीतायाः कवचं परम्।। १।। त्वत्तः श्रोतुमिच्छामि त्रैलोक्यमोहनं महत्।। कथयस्व रघुश्रेष्ठ दिव्यं कवचमुत्तमम्।। २।। श्रीराम उवाच।। शृणु वत्स महादिव्यं महामङ्गलदायकम्।। महासिद्धिकरं पुंसां महासंपत्तिदायकम्।। ३।। त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम्।। यः पठेत्सततं भक्त्या अपुत्रः पुत्रवान्भवेत्।। ।। ४।। अष्टाक्षरमहामन्त्रं पठेत्कवचसंयुतम्।। ततः सिद्धिमवाप्नोति अकीलमतुलं वरम्।। ५।। ॐ अस्य श्रीसीतात्रैलौक्यमोहनकवचमन्त्रस्य श्रीराम ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसीता देवता श्रीसीताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। अथ ध्यानम्।। नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालंकृतां गौराङ्गीं शरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम्।। कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां ध्यायेद्भक्तजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम्।। १।। ॐ शिरो मे भूभवा पातु ललाटे जनकात्मजा।। नेत्रे पातु कुजा चैव वैदेही श्रुतिरक्षिणी।। २।। जिह्वां मे जानकी पातु ग्रीवां जनकनन्दिनी।। स्कन्धौ पातु महामाया भुजौ पातु सुलोचना।। ३।। करौ पातु सदा सीता ऊरू मे रामपार्श्वगा।। मायं पातु च पद्माक्षी नाभिं मे वनवासिनी।। ४।। कटिं योगेश्री पातु सक्थिनी मृगध्वंसिनी।। ऊरू मे उर्वशी पातु जानुनी भिल्लिमोक्षिणी।। ५।। जङ्घे बालिप्रमथिनी द्विपादौ रावणान्तिनी।। सर्वाङ्गं पातु स्वच्छाङ्गी सदा पातु प्रबोधिनी।। ६।। विभीषणश्रीदा पातु सद्यश्चैव दिशो दश।। सीतायाः कवचं ह्येतद्

देवानामपि दुर्लभम्।। ७।। त्रैलोक्यमोहनं नाम त्रैलोक्यधनदायकम्।। यः पठेत्तु ममाग्रे वै पूजाकाल प्रयत्नतः।।८।। सौमित्रे च शृणुष्व त्वं ददामि वाञ्छितं फलम्।। अष्टाक्षरमन्त्रः।। ॐ ह्रीं श्रीं सीतायै नमः।। अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।। वटवृक्षतटे पाठे अष्टादशशतेन च।। षट्विप्रकृते जाप्यम्।। १८००।। त्रिशतेन पृथक् पृथक्।। ९।। एवं नित्यं कृते चैव वर्षपर्य्यन्तमानवः।। क्षीराज्यशर्कराहव्य गोधूमहृदयं पचेत्।। ।। १०।। भोज्यमाहार एकश्च भूमिशायी जितेन्द्रियः।। ब्राह्मणे दक्षिणां दत्त्वा नानालंकारवस्त्रदः।। ११।। स्वधर्मनिरतः प्राणी अहिंसासत्यवाक्पटुः। एकचित्तो भवेत्तस्य कवचं स्फूर्ति संयुतः।। १२।। अपुत्रो लभते पुत्रं सत्यंश्री रामभाषितम्।। अयुतमेकपाठे च पुरश्चर्य्याप्रसूतिकम्।१३।। साक्षात्कल्पतरुः सीता ध्यायते यदि लक्ष्मण।। वाञ्छितं वरदा सद्यः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।। १४।। इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीरामलक्ष्मणसंवादे रामविरचितं सीताकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ श्रीजानकीकवचम्।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।। धरण्युवाच।। देव देव कृपासिन्धो कथायानुग्रहान्मयि।। श्रीसीताकवचं दिव्यं

सर्वपापभयापहम्।। १।। श्रीशेष उवाच।। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्यानां गुह्यमुत्तमम्।। सीतायाः कवचं पुण्यं पठतां पापनाशनम्।। २।। ध्यात्वा चम्पकदामाभां कोमलाङ्घ्रिसरोरुहाम्।। बालातपाभवसनां करभप्रतिमोरुकाम् ।। ३।। पूर्णचन्द्राभवदनां नीलकुञ्चितकुन्तलाम्।। मणिकङ्कणसौन्दर्य्यविलसत्करपल्लवाम्।। ४।। सर्वसद्गुणसंपन्नां हेमकुम्भलसत्कुचाम्।। आजानुविन्यस्तभुजां करपद्मधृताम्बुजाम्।। ५।। किरीटहारकेयूरमुक्ताभूषण। भूषिताम्।। रत्नसिंहासनगतां देवस्त्रीगणसेविताम्।।६।। श्रीरामवामभागस्थां तप्तचामीकरप्रभाम्।। सीतां ततः पठेत्पुण्यं कवचं पापनाशनम्।। ७।। श्रीसीताकवचस्यास्य शेष ऋषिरुदाहृतः।। बीजं वाग् अनुष्टुप्छन्दो देवताजनकात्मजा ।। ८।। सीतारक्षतु मूर्द्धानं नयने जानकी ममां श्रीरामचन्द्रदयिंता कपोलौ पातु सर्वदा।।९।। कण्ठं मे पातु वैदेही हृदयं राघवप्रिया।। करौ विदेहतनया पार्श्वं भूमिसुता मम।।१०।। उदरं पातु कौसल्यातनयप्रेयसी तदा।। उरू रक्षतु वैदेही जानुनी जनकोद्भवा।। ११।। पादौ रक्षतु मे नित्यं रामपत्नी दृढव्रता।। देवी पातु च सर्वाङ्गं मम पङ्कजलोचना।। १२।। दैत्यदानवभूतेभ्यः पातु मां राघवप्रिया। राजरोगभयेम्यो मां पातु पङ्कजधारिणी।। १३।। प्रयाणकाले सीतायाः यः पठेत्कवचं परम्।। मुच्यते सर्वपापेभ्यो निर्वाणमधिगच्दति ।। १४।। अश्वमेधायुतफलं पठनाल्लभते नरः।। नित्यं पठति भक्त्या यः तस्य सीता प्रसीदति।। १५।। राज्यलाभो

भवेत्तस्य रामभक्तिश्च पुष्कला।। इतीदं कवचं पुण्यं प्रातः सायं पठेन्नरः।। १६।। तस्य भक्तिसमृद्धिः स्यादायुः कीर्तिश्च वर्द्धते। प्रसन्नो रामचन्द्रश्च भवेदिह न संशयः।। १७।। श्रीं सीतायै स्वाहा।। श्रीसीतायै नमः।। इति मन्त्रः।। अथ ध्यानम्।। अरुणारविन्दचरणां समुल्लसत्तरुणार्कबिम्बकमनीयकुण्डलाम्।। मिथिलाधिपस्यतनयामुपास्महे करुणां विदेहविमलोत्पलेक्षणाम्।। १८।। इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे धरणीशेषसंवादे जानकीकवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीलक्ष्मणकवचम्।।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।। श्रीरामाय नमः।। सौमित्रेः कवचं वक्ष्ये यशः कीर्तिसुखप्रदम्।। दुर्गमे पथि दुर्गे च नराणां सर्वरक्षणम्।। १।। भक्तकल्पतरुं देवं गौराङ्गं कञ्जलोचनम्।। रामानुजं महावीरं लक्ष्मणं सर्वलक्षणम्।। ।। २।। इन्द्रजिद्वधकर्तारं पूर्णचन्द्रनिभाननम्।। सर्वसद्गुणसंपन्न जितेन्द्रियगणं विभुम्।। ३।। एकपत्नीव्रतं शुद्धं त्यक्तसर्वसुखास्पदम्।। पीताम्बरधरं धीरं काकुत्स्थं करुणामयम्।। ४।। भक्तप्रियं सदादेवं परमानन्दविग्रहम्।। योगीन्द्रं योगनाथं च तप्तचामीकरप्रभम्।। ५।। चतुर्दशसु वर्षेषु निराहारं तपस्विनम्।। दीर्घपीनमहाबाहुं कन्दर्पाधिकसुन्दरम्।। ६।। मुकुटोज्ज्वललसन्मौलिं महावीरं धनुर्धरम्।। यो जपेल्लक्ष्मणं तस्य मनः

सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्॥ ७॥ ॐ अस्य श्रीलक्ष्मणकवचस्य नारदऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीलक्ष्मणो देवता श्रीलक्ष्मणकवचपाठे विनियोगः॥ ८॥ ॐ सौमित्रिः पातु मूर्द्धानं ललाटे लक्ष्मणः सदा॥ भ्रुवौ पातु महावीरो नयने रघुनन्दनः॥ ॥ ९॥ इन्द्रजिन्नासिकाकर्णगण्डौ दशरथात्मजः॥ दन्तान् दाशरथिः पातु राक्षसारिश्च जिह्विकाम्॥ १०॥ ओष्ठौ मे सततं पातु सुमित्रानन्दवर्द्धनः॥ रामानुजो महावीरश्चिबुकं पातु सर्वदा॥ ११॥ विश्वमित्रप्रियः पातु सकण्ठं वदनं मम॥ हृदयं पातु पीताङ्गः कुक्षिं पातु शुभाङ्गकः॥ १२॥ भुजौ कौणपघाती च करौ मे हनुमत्प्रियः॥ योगेन्द्रः कुक्षियुग्मं च पादौ सर्वजनप्रियः॥ १३॥ सर्वाङ्गं पातु लोकेशो राघवस्य प्रियः पुमान्॥ इत्येतद्यो जपेन्नित्यं कवचं लक्ष्मणस्य वै॥ १४॥ कोटियज्ञफलं तस्य भवेदिह न संशयः॥ वाञ्छितं फलमाप्नोति सर्वप्रियतरो भवेत्॥ १५॥ शत्रुक्षयो भवेत्तस्य राजपीडाभवेन्नहि॥ दुष्टाश्च वशमायान्ति ग्रहपीडाभवेन्नहि॥ १६॥ वह्निचौरभयं तस्य गृहेषु न च विद्यते॥ अनुकूलो भवेल्लोकोऽप्यचलाकमलालये॥ ॥ १७॥ धनपुत्रान्वितश्चैव लोके भवति नान्यथा॥ पाठात्कवचराजस्य सुदुर्लभमनोरथम्॥ १८॥ षण्मासाल्लभते मर्त्यः कवचस्य प्रसादतः॥ न भयं समरात्तस्य लोके भवतु निश्चितम्॥ १९॥ भूर्ज्जे विलिख्य कवचं स्वर्णस्थं धारयेद्यदि॥ स एव देवतुल्यस्तु सर्वतीर्थफलप्रदः॥ २०॥ इति श्रीनारदीयतन्त्रे श्रीलक्ष्मणकवचंसम्पूर्णम्।

।। अथ श्रीभरतकवचम्।।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः। श्रीहनुमान् उवाच।। कौसलेय कृपाम्भोधे भक्तानां हितकारक।। त्रैलौक्यमोहनं नाम कवचं भरतस्य किम्।। १।। श्रीराम उवाच।। उवाच परमं दिव्यं रामो जगति वन्दितम्।। साधु पृष्टं त्वया वत्स पप्रच्छ मम सन्निधौ।। २।। शृणु सद्यो महावीर कवचं परमाद्भुतम्।। कालमृत्युकृतान्तादेर्न भयं विद्यते क्वचित्।। ३।। ॐ अस्य श्रीभरतत्रैलोक्यमोहनकवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीभरतो देवता मम भक्तिप्रसिध्यर्थे जपे विनियोगः।। ॐ पूर्वे रक्षेन्महाबाहुराग्नेयां कैकेयीसुतः।। कृतान्ते च कृतान्तारिर्नैर्ऋत्ये राक्षसान्तकः।। १।। पश्चिमे रक्ष भक्तात्मन् वायव्ये सर्वरक्षकः।। उत्तरे रक्ष राजेन्द्र ईशाने च धनुर्धरः।। २।। अध ऊर्ध्वं सदा रक्षेत् भक्ताराधनतत्परः।। शिरः सत्यव्रतः पातु घ्राणं मे प्रणवाधिपः।। ३।। भालं पातु महाभक्तः नेत्रे नारायणप्रियः।। श्रोत्रे रक्षेत्सर्वसाक्षी मुखं मे खलसूदनः।। ४।। भुजौ रक्षतु भरतः स्कन्धौ भागवतप्रियः।। हृदये हृदयेशस्तु ऊरुयुग्मं जनाश्रयः।। ५।। नाभिं रक्षतु दुष्टारिः सक्थिनी रक्षसामरिः।। कटिं क्लेशहरः पातु जानुनी जलजेक्षणः।। ६।। पादान्ते रक्ष मे वीर पादौ पातु पराश्रयः।। मां पान्तु षोडशन्यासाः षोडशाक्षरसंयुताः।। ७।। अथ षोडशाक्षरो मन्त्रः।। ॐ नमो भक्तात्मने भरताय स्वाहा।। ८।। इदं कवचमज्ञात्वा

यो जपेत्षोडशाक्षरीम्।। शतकोटिप्रजप्त्वाऽपि मन्त्रसिद्धिर्न जायते।। ९।। इमं मन्त्रं समुच्चार्य्य करोति ध्यानमुत्तमम्।। ततो भरतगायत्रीं यो जपेद्भक्तिसंयुतः।। १०।। अथ ध्यानम्।। ॐ ध्यायेत्कमलपत्राक्षं नीलपद्मसमप्रभम्।। कोटिसूर्य्यप्रतीकाशं वन्दे भरतमानसम्।। ११।। अथ गायत्री।। ॐ भरताय विद्महे माण्डवीवल्लभाय धीमहि तन्मे भक्तिं प्रचोदयात्।। गायत्रीं प्रजपेन्नित्य मूलमन्त्रमुदीरयेत्।। प्रणवादि नमो मध्ये स्वाहान्ते मन्त्रसंज्ञकः ।। १२।। अथ मालामन्त्रः।। ॐ नमो भगवते विश्वंभराय भरताय मार्तण्डवंशप्रदीपाय भक्तिसुधाकरकृताय शान्तिस्वरूपाय कमलपत्राक्षाय भक्तजननिवासाय स्वाहा।। इति मालामन्त्रः।। माल मन्त्रमिति प्रोक्तं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।। यो जपेत्सततं सिद्धि र्भक्तिरूपा न संशयः।। १३।। रसरूद्रेण (११६) यो जाप्त्वा दशांशं हवनादिकम्।। ततस्तुसिंद्धं कवचं मन्त्रश्चैव हरीश्वर।। १४।। गुरुमभ्यर्च्य विधिवद् यो जपेत्कवचं तथा।। साक्षाद्भक्तिस्वरूपश्च भरतस्य प्रसादतः ।।१५।। ममाग्रे च त्रिकाले वा मन्त्रोपासकसन्निधौ।। नवम्यां यः पठेन्नित्यमविरलभक्तिमान्नरः।। १६।। पर्वकाले पठेद्भक्त्या कवचं साधकोत्तमः।। मुखे वसति सा वाणी लक्ष्मीश्चा निश्चला गृहे।। १७।। दुर्भिक्षं न भयं घोरे अभयं चरतः सदा।। हनूमत्स्तवस्तुश्रोतव्यः पठेत्कवचमुत्तमम् ।। १८।। स भरतेन मां तुभ्यं तत्पश्चादभयं भवेत्।। भुर्जपत्रे तु कवचं स्वर्णस्थं

धारयेद्यदि।। १९।। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ शिरसा धार्यते यदि।। संग्रामे संकटे घोरे विवादे राजविग्रहे।। २०।। गजवाजिप्रकोपानां सर्वानेवपराक्रमः।। दुर्जनं दुष्टरोगं च सर्वापत्तिनिवारणम्।। २१।। मानवं यक्षगन्धर्वं राक्षसं घोरविक्रमम्।। भूतं प्रेतं च वेतालं सर्वेषां भयनाशनम्।। २२।। खभूचरे वा रात्रौ वा जलवाय्वग्निजेऽथवा।। चरस्थिरद्विस्वभावे सर्वेषु भक्तिनाशने।। २३।। भक्तिभाक् स भवेल्लोके कीर्तिवृद्धिः प्रजायते।। ऐश्वर्य्यमतुलं प्राप्य रामलोके महीयते।। २४।। इति श्रीब्रह्मसूक्ते तन्त्रे श्रीहनुमद्राघवसंवादे श्रीभरतत्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीशत्रुघ्नकवचम्।।

श्रीगणेशाय नमः।। ईश्वर उवाच।। उवाचेदं महादेवः महाविष्णौ च शृण्वति।। त्रिपुरं दैत्यराजेन्दं नाशयमि कथं प्रभो।। १।। श्रीमहाविष्णुरुवाच।। शृणु पूर्वं मया प्रोक्तं शत्रुघ्नस्तवराजकम्।। तथैव कवचं ग्राह्यं कथयामि कुरुष्व तत्।। २।। तत्क्षणाज्जायते शत्रोर्मारणं शिवशंकर।। यस्य पठनमात्रेण न भयं विद्यते क्वचित्।। ३।। ॐ अस्य श्री शत्रुघ्नपरमात्मादेवता श्रीश्रुतिकीर्तिः शक्तिः शान्तिर्बीजं गायत्री आत्मतत्त्वं मम

सकलशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।। अथ ध्यानम्।। ध्यायेत्कमलपत्राक्षं गौराङ्गमुग्रविग्रहम्।। धनुस्तूणसमायुक्तं भजेत्प्रबलसंज्ञकम्।। १।। अथ मूलमन्त्रः।। ॐ नमो भगवते शत्रुसूदनाय।। इति द्वादशाक्षरमूलमन्त्रः।। इति मन्त्रं समुच्चार्य्य करोति दिशिबंधनम्।। तालत्रयेण संस्कृत्य पठेत्कवचमुत्तमम्।। २।। शताष्टोत्तरमन्त्रेण तत्क्षणाच्छत्रुनाशनम्।। जायते नैव सन्देहः महाविष्णुसुभाषितम्।। ३।। ॐ शत्रुहा पूर्वतः पातु आग्नेय्यां रिपुसूदनः।। पातु याम्ये महावीरो नैर्ऋत्ये रणकर्कशः।। ४।। पातु तोयं खलध्वंसी रामेष्टः वायुदिक् तथा। उत्तरे शत्रुदमनो ईशे दशरथात्मजः।। ५।। आकाशे च धनुर्धर्ता पाताले च महेश्वरः।। अधश्चोर्ध्वं समारक्षेत्सद्यश्च भरताग्रजः।। ६।। शिरसि शत्रुघ्नः पातु भालं मे रामभ्रातरः।। भ्रुवौ पातु महाक्रान्तो नेत्रे पातु च दर्पहा।। ७।। कपोलौ च महावीरः कर्णमूले कृपाकरः।। घ्राणं पातु द्विजत्राता वक्त्र पातु महायशाः।। ८।। वाचं पातु बलाध्यक्षो जिह्वाम्मे जानकीप्रियः।। दन्तान्वैरान्तकः पातु चिबुकं चण्डतैजसः।। ९।। पातु कण्ठञ्च रोगारिः स्कन्धौ तु परवीरहा।। भुजौ रक्षेत्प्ररक्षोहाः पाणी पात्वसुरान्तकः ।। १०।। नखं मे खरवीरान्तो कुक्षौ तु हंसवंशजः।। वक्षःस्थले वीरत्राता उदरे तु चन्द्रानन:।। ११।। पृष्ठे रक्षेदुग्रवीरो पार्श्वे पापविमोचकः।। नाभिं पातु नृपेन्द्रात्मा कटिं पातु कटासिभृत्।। १२।। गुह्यं गुणेश्वरः पातु जानुनी जलजेक्षणः।। ऊरू कालान्तकः

पातु लिङ्गं पातु त्रिविक्रमः।। १३।। जङ्घे मृत्युप्रहारी च गुल्फौ पातु यमान्तकः।। पादौ पातु परं तेजः पादान्तेखड्गधारकः।। १४।। शरीरं सर्वदः पातु श्रुतिकीर्तिपतिस्थितः।। रजन्यां पातु सिंहाङ्गः दिवसे सिंहविक्रमः ।। १५।। दानवारिः सदा पातु संध्यान्तं सन्धिकालगे।। चित्तं तु पातु राजेन्द्रः सर्वसाक्षी च सर्वतः ।। १६।। इतीदं कवचं दिव्यं माहात्म्याद्भुतसंज्ञकम्।। पठनीयं प्रयत्नेन क्षणाच्छत्रुर्विनश्यति।। १७।। ॐ शं शत्रुघ्नाय विदमहे श्रुतिकीर्तिवल्लभाय धीमहि तन्नः शत्रुघ्नः प्रचोदयात्।। गायत्रीजपमात्रेण सर्वसिद्धिप्रदायकम्।। क्षणाच्छत्रुः क्षयं याति शत्रुघ्नस्य प्रसादतः ।। १८।। एतत्ते कवचं रुद्र देवानामपि दुर्लभम्।। पठितव्यं प्रयोक्तव्यं शत्रूणां क्षयकारकम्।। १९।। अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनं परम्।। ततस्तु सिद्धं कवचं शत्रुघ्नस्य प्रसादतः।। २०।। भूर्जपत्रे लिखेद्यस्तु बध्वा शिरसि बाहुके।। यन्त्रस्थितमवालोक्य शत्रुसघट्टनाशनम् ।। २१।। भौमवारे विशेषेण शनेःवारे रवेस्तथा।। मन्त्रतन्त्रेण वै कृत्वा शत्रुनाशो भवेद्ध्रुवम्।। २२।। इति श्रीमहाविष्णुयामले तन्त्रे श्रीमहाविष्णुरुद्रसंवादे श्रीशत्रुघ्नकवचं सम्पूर्णम्।

।। सुदर्शनकवचम्।।

अस्य श्रीसुदर्शनकवचमहामन्त्रस्य भगवानन्तर्यामी नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसुदर्शनरूपी

श्रीमन्नारायणो देवता। रं बीजम्। हुँ शक्तिः। फट् कीलकम्। श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।। शङ्खं चक्रं गदां पद्मं मुसलं खड्गमेव च। धनुं च यमपाशं च मुद्रा ह्येताः प्रकीर्तिताः।। पाञ्चजन्याय शंखाधिपतये नमः। सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः। कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः। पं पद्माय नमः। मुं मुसलाय नमः। नं नन्दकाय—खडगाधिपतये नमः। सुं सुरभ्यै नमः। यं यमपाशाय नमः।। ध्यानम्—शङ्खं शार्ङ्गं सखेटं हलपरशुगदाकुन्तपाशान्दधानं, त्वन्यैर्वामैश्च चक्रेष्वसिमुसललसद्वज्रशूलाङ्कुशाग्नीन्। ज्वालाकेशं किरीटं ज्वलदनलनिभं वह्निमुग्रस्थपीठं, प्रत्यालीढं त्रिनेत्रं रिपुगणदमनं भावयेच्चक्रराजम्।।

अथवा— ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्याहिर्बुध्न्यो भागवानृषिः। अनुष्टुप् छन्दः।। श्रीसुदर्शनमहाश्रीनृसिंहो देवता। सहस्रारमिति बीजम्।। सुदर्शनमिति शक्तिः। चक्रमिति कीलकम्। मम सर्वरक्षार्थे श्री सुदर्शन पुरुषश्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। ॐ सं अचक्राय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ हं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ रं सूर्यचक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ हुं ज्वालाचक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ सुदर्शनचक्राय स्वाहा करतलकरपृष्टाभ्यां नमः।। ॐ सं अचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐहं विचक्राय स्वाहा शिरसे स्वाहा।।

ॐस्रां सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ रं सूर्य्यचक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्।। ॐ हुं ज्वाला चक्राय स्वाहा नेत्राभ्यां वौषट्।। ॐ फट् सुदर्शनचक्राय स्वाहा अस्त्राय फट्।। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।। अथ ध्यानम्—शंखं चक्रं च चापं परशुमिषुमसिं शूलपाशाङ्कुशास्त्रं, बिभ्राणं वज्रखेटं हलमुसलगदाकुंतमत्यूग्रदंष्ट्रम्। ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं, ध्यायेत् षट्कोणसंस्थं सकलरिपुजनप्राणसहारचक्रम्।। इति ध्यानम्।। ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय—भो भो सुदर्शन दुष्टं दारय दारय।। दुरितं हन हन। पापं दह दह। रोगं मर्दय मर्दय। आरोग्यं कुरु कुरु।। ॐ ॐ ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ह्रूँ फट् फट् दह दह हन हन भीषय भीषय स्वाहा।।

मस्तकं मे सहस्रारः भालं पातु सुदर्शनः। भ्रुवौ मे चक्रराट् पातु नेत्रे द्वेऽर्केन्दुलोचनः।। १।। कर्णौ वेदस्तुतः पातु घ्राणं मे सुविभीषणः। महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठौ रुद्रवरप्रदः।। २।। दन्तान्पातु जगद्वन्द्यो रसनां मम सर्वदा। सर्वविद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम।। ३।। वीरसिंहो मुखं पातु चुबुकं भक्तवत्सलः। सर्वदा पातु कण्ठं मे मेघगम्भीरनिःस्वनः।। ४।। मम स्कन्धयुगं पातु धराभारापहारकः। बाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ।। ५।। करौ दिव्यायुधः पातु नखान्वज्रनखोपमः।।६। कुक्षिं पातु महाशूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः।

पातु मे हृदयं भक्तजनानन्दश्च सर्वदा॥ ७॥ सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम। वक्षः पातु महाधारो दिवि दानवमर्दनः॥ ८॥ पार्श्वौ मे पातु दीनार्तः शरणागतवत्सलः। सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः॥ ९॥ नाभिं षट्कोणधामा मे पातु घण्टारवः कटिम् आदिमूलः पुमान् पातु गुह्यदेशं निरन्तरम्॥ १०॥ ऊरू पातु महाशूरो जानुनी भीमविक्रमः। जङ्घे पातु महावेगो गुल्फौ पातु महाबलः॥ ११॥ पादौ पातु सदा श्रीदो ब्रह्माद्यैरभिवन्दितः। पातु पदातलद्वन्द्वं विश्वभारो निरन्तरम्॥ १२॥ सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा। मम सर्वांगरोमणि ज्वालाकेशः स रक्षतु। मम सर्वाङ्गकान्ति वै कल्पान्ताग्निसमप्रभः॥ १३॥ अन्तर्बहिश्च मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः। रक्षाहीनं च यत्स्थानं प्रचण्डस्तत्र रक्षतु॥ १४॥ सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालाशतपरिवृतः। त्रिणेमिः पातु मत्प्राणान्भ्रातॄन्पात्वनलद्युतिः॥ १५॥ भार्यां लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान्पातु सुदर्शनः। श्रीकरो मे श्रियः पातु बन्धून्पातु बलाधिकः॥ १६॥ गोपांश्चैव पशून् पातु सहस्रारधरस्सदा। क्षेत्रं विश्वम्भरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः॥ १७॥ दिवारात्रौ च मां पातु अहिर्बुध्न्यवरप्रदः। षोडशोत्तुँगबाहुस्तु पातु मे राजसम्मुखम्॥ १८॥ वैरिविद्वेषसङ्घे तु संग्रामे शत्रुसूदनः। अवान्तरा अबाधाश्च त्रासयेत्सार्वकालिकम्॥ १९॥ आधिव्यधिमहाव्याधिमध्ये चोपद्रवे तथा। अपमृत्युमहामृत्यू नाशयेच्चक्रनायकः॥ २०॥ परप्रयुक्तमन्त्रांश्च

यन्त्रतन्त्रविभञ्जनः। सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुःखनाशनः।। २१।। सर्वसम्पत्प्रदाता मां चक्रराजो निरन्तरम्। जपं पातु जगद्वन्द्यो मानसमक्षयप्रदः।। २२।। प्रमादांश्चास्त्रधामासौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा। अणिमादिमहैश्वर्यं पातु साम्राज्यसिद्धिदः।। २३।। तिर्यग्ज्वालाग्निरूपश्च नष्टराज्यार्थदो मम। राज्यं पातु सहस्रारः पादातिं पातु वाऽच्युतः।। २४।। चतुरंगबलस्तोमं रक्ष त्वं चक्रभावन। ज्योतिर्मयश्चक्रराजः सर्वान्वरुणरक्षकः।।२५।। अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः। त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्य्यं सदा मम।। २६।। नभो दशदिशव्याप्तिकीर्तिं पातु सुदर्शनः। आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः ।। २७।। सुधामण्डलसंविष्टो मायापञ्चसुशीतलः। राजद्वारे सभामध्ये पातु मां चण्डविक्रमः।। २८।। पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट्। याम्ये रथांगकः पातु त्रिणेमिः पातु नैर्ऋते।। २९।। लोकत्रयप्रभाकारज्वालो रक्षतु पश्चिमे। षट्कोणः पातु वायव्ये ह्यस्त्रराजोत्तरां दिशम्।। ३०।। ऐशान्यां चक्रराट् पातु मध्ये भूचक्रचक्रिणः। अनन्तादित्यसंकाशः क्ष्मान्तरिक्षौ च पातु मे ।। ३१।। सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालासाहस्रसंवृतः। एवं सर्वत्र संरक्ष सर्वदा सर्वरूपवान्।। ३२।। सकारः पृथवी ज्ञेयो हकारो अप उच्चते। स्त्राकारो वायुरुक्तश्च रकारोऽम्बर उच्यते।। ३३।। हुंकारमग्निरित्याहुः फट्कारं सूर्यरूपकम्। स्वाहाकारं न्यसेन्मूर्ध्नि पीतरक्तसुवर्णकम्।। ३४।। सकारं नासिकायां तु हकारं वदने

न्यसेत्। स्राकारं हृदये चैव सृष्टिसंहारकारणम्॥ ३५॥ रकारं विन्यसेद् गुह्ये हुंकारं जानुदेशके। फकारं गुल्फदेशे तु टकारं पादयोर्न्यसेत्॥ ३६॥ सर्वाणि चैव वर्णानि जप्यान्यङ्गुलिपर्वसु। क्षिप्रं सौदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम्॥ ३७॥ सर्वदैत्यप्रशमनं कुरु देववराच्युत। सुदर्शन महाज्वाल छिन्ध्याशु वेदनाम् ॥ ३८॥ परयन्त्रं च तन्त्रं च छिन्धि मन्त्रौषधादिकम्। सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध॥ ३९॥ सूक्ष्माधार महावेग छिन्ध्याछिन्धि सुभैरव। छिन्धि पातं च लूतं च छिन्धि घोरं महद्विषम्॥ ४०॥ इति सौदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्। सर्वबाधाप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्॥ ४१॥ सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमंगलदायकम्। त्रिसन्ध्यं पठतां नृणां सर्वदा विजयप्रदम्॥ ४२॥ सर्वपापप्रशमनं भोगमोक्षैकसाधकम्। प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत्सदा नरः॥ ४३॥ तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते। यक्षराक्षसवेतालभैरवाश्च विनायकाः ॥ ४४॥ शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठा निद्रा बालग्रहादयः। भूतप्रेतपिशाचाद्या अन्ये दुष्टग्रहा अपि॥ ४५॥ कवचस्यास्य जप्तारं दृष्टमात्रेण तेऽखिला॥ पालयन्ते यथा नागाः पक्षिराजस्य दर्शनात्॥ ४६॥ अस्यायुतं पुरश्चर्यं दशांशं तिलतर्पणम्। हवनं तर्पणं चैव तर्पणं गन्धवारिणा॥ ४७॥ पुष्पाञ्जलिर्दशांशं च मिष्ठान्नं सघृतप्लुतम्। चतुर्विंशद्द्विजा भोज्या वैष्णवा वेदपारगाः। पञ्चसंस्कारसपन्नास्तत्तत्कार्याणि साधयेत्॥ ४८॥

विन्यस्यांगेष्विदं धीरो युद्धार्थं योऽभिगच्छति। रणे जित्वाखिलाञ्छत्रून् विजयी भवति ध्रुवम्।। ४९।। मन्त्रिताम्बु त्रिबारं वा पिबेत्सप्तदिनावधि। व्याधयः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः।। ५०।। मुखप्रक्षालने नेत्रनासिकारोगनाशनम्। भीतानामभिषेकं च महाभयनिवारणम्।। ५१।। सप्ताभिमन्त्रितानेन तुलसीमूलमृत्तिका। लेपान्नश्यन्ति ते रोगाः सद्यः कुष्ठादयोऽखिलाः।। ५२।। ललाटे तिलकं स्त्रीणां मोहनं सर्ववश्यकृत्। परेषां मन्त्रयन्त्राणि तन्त्राण्यपि विनाशकृत्।। ५३।। व्यालसर्पादि सर्वेषां विषापहरणं परम्। सौवर्णे रजते वापि भूर्जे ताम्रादिकेऽपि वा।। ५४।। लिखित्वा त्वर्चयेद् भक्त्या स श्रीमान् भवति ध्रुवम्। बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छति यो नरः।। सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः।। ५५।। ध्वजे गजानामथ वाजिसायके शरेष्वमोघेश्वथ वीरपट्टके। लिखेच्च चक्रं विजयेषु संयुगेष्वमोघवीर्यं जयमाप्नुयाद्ध्रुवम्।। ५६।। श्रियः प्रवृत्यै परिपूजनीयो ह्यभीष्टसिद्धिं कुरुते सुदर्शनः। कन्याञ्च भर्ता पुरुषो वधूश्च लभेच्च विद्यां ६ नधान्ययुक्ताम् ।। ५७।। इति श्री विहगेन्द्रसंहितायां तन्त्ररहस्ये सुदर्शनकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ श्रीनारायणकवच

अङ्गन्यास—ॐ ॐ नमः—पादयोः ॐ नं नमः—जानुनोः ॐ मों नमः— ऊर्वोः ॐ नां नमः—उदरे ॐ रां नमः—हृदि— ॐ यं नमः—उरसि ॐ णां नमः मुखे ॐ यं नमः—शिरसि। करन्यासः— ॐ ॐ नमः—दक्षिणतर्जन्याम् ॐ नं नमः—दक्षिणमध्यमायाम् ॐ मों नमः—दक्षिणानामिकायाम् ॐ भं नमः—दक्षिणकनिष्ठकायाम् ॐ गं नमः—वामकनिष्ठिकायाम् ॐ वं नमः —वामानामिकायाम् ॐ तें नमः वाममध्यमायाम् ॐ वां नमः— वामतर्जन्याम् ॐ सुं नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि ॐ दें नमः— दक्षिणाङ्गुष्ठाधः पर्वणि ॐ वां नमः—वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि ॐ यं नमः—वामाङ्गुष्ठाधः पर्वणि— विष्णुषडक्षरन्यासः— ॐ ॐ नमः—हृदये ॐ विं नमः— मूर्धनि ॐ षं नमः—भ्रुवोर्मध्ये ॐ णं नमः—शिखायाम् ॐ वें नमः—नेत्रयोः ॐ नं नमः— सर्वसंधिषु। ॐ मः अस्त्राय फट्—प्राच्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—आग्नेय्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—दक्षिणस्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—नैर्ऋत्ये ॐ मः अस्त्राय फट्—प्रतीच्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—उदीच्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—ऐशान्याम् ॐ मः अस्त्राय फट्—ऊर्ध्वायाम् ॐ अस्त्राय फट्—अधरायाम्। राजोवाच। यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्। क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥ १॥ भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्। यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥ २॥ श्रीशुक

उवाच– वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते। नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु।। ३।। धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः। कृतस्वङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः।। ४।। नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते। पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि।। ५।। मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्। ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा।। ६।। करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया। प्रणवादियकारान्तम– ङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु।। ७।। न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि। षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ।। ८।। वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु। मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः।। ९।। सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्। ॐ विष्णवे नम इति।। १०।। आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्। विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्।। ११।। ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां, न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे। दरारिचर्मासिगदेषुचाप, पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः।। १२।। जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्। स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः।। १३।। दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः। विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः।। १४।। रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः, स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः। रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे, सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्

॥ १५॥ मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा, न्नारायणः पातु नरश्च हासात्। दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः, पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्॥ १६॥ सनत्कुमारोऽव्रतु कामदेवा, द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्। देवर्षिर्यः पुरुषार्चनान्तरात्, कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥ १७॥ धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा। यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः॥ १८॥ द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्। कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः॥ १९॥ मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः। नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुरीन्द्रपाणिः ॥ २०॥ देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम्। दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः॥ २१॥ श्रीवत्सधामापररात्र ईशः, पत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः। दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः॥ २२॥ चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि, भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्। दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥ २३॥ गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे, निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि। कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो, भूतग्रहाञ्चूर्णय चूर्णयारीन्॥ २४॥ त्वं यातुधानप्रमथप्रेत—मातृपिशाचविप्रग्रहवोग्रदृष्टीन्। दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥ २५॥ त्वं

तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि। चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥ २६॥ यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च। सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ॥ २७॥ सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्। प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः॥ २८॥ गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः। रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः॥ २९॥ सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः। बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः॥ ३०॥ यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्। सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः॥ ३१॥ यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्। भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया॥ ३२॥ तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः। पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः॥ ३३॥ विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः। प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः॥ ३४॥ मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्। विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरथूपान्॥ ३५॥ एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा। पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते॥ ३६॥ न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्। राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥ ३७॥ इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः। योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि॥ ३८॥

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा। ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः।। ३९।। गगनान्नयपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः। स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः। प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात्।। ४०।। श्री शुक उवाच।। य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः। तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्।। ४१।। एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः। त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्।। ४२।।

।। अथ नृसिंहकवचम्।।

श्री नृसिंहाय नमः।। ब्रह्मोवाच।। अनेक मंत्र कोटि नृसिंहनाम उच्चरेत्।। अनेक विधिरक्षायां विषरोग निवारणम्।। १।। ॐ अस्यश्री लक्ष्मीनृसिंह कवचमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिरनुष्टुप्छंदः ॐ क्षौं बीजं रौं शक्तिः क्लीं कीलकं श्रीनृसिंहो देवता मम सर्वरोगाणां सर्वदेवदोषाणां चोरपन्नगव्याघ्रवृश्चिक—भूतप्रेतपिशचशाकिनी डाकिनी यंत्रमंत्र अनेक विधदोष निवारणार्थे जपे विनियोगः ॐ क्षौं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ प्रौं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रौं मध्यमाभ्यां नमः ॐ रौंअनामिकाभ्यां नमः ॐ व्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ज्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।। अथ ध्यानम्।। सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थितं योगारूढमतिप्रसन्नवदनं

भूषासहस्रोज्वलम् तीक्ष्णं चक्रपिनाककांभयवरं विभ्राणमर्कछविछत्रीभूतफणीन्द्रमिंदुधवलं श्रीलक्ष्मीनृसिंहं भजे। अथ षोडशाक्षरी मंत्रः।। ॐ क्लौं प्रौं ह्रौं रौं व्रौं ज्रौं श्रीनृसिंहाय नमः स्वाहा। ॐ नमो नृसिंहाय सर्वदुष्टविनाशाय सर्वराज्ञां मोहनाय सर्वराज्यवश्यं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो नृसिंहराजाय नरकेशाय नमो नमः। ॐ कालायकालदंष्ट्राय करालवदनाय उग्राय उग्रवीराय उग्रविकटाय वज्रावज्रदेहाय हननरुद्रघोराय भद्रकारिणे ॐ ज्रीं ज्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं श्री नृसिंहाय कपिलजटाय अमोघवाचाय सत्यं सत्यं ॐ महोग्रप्रचण्डरूपाय नमः स्वाहा। ॐ ह्रौं ह्रौ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं छूं छूं छूं छूं फट् स्वाहा। मम सर्व रोगान् बंधय बंधय सर्पव्याघ्रान् बन्धय बन्धय सर्वचौरान् बंधय बन्धय सर्वभूतप्रेतपिशाचशाकिनीडाकिनी यंत्र–मंत्र–बंध बंध कीलय कीलय मर्दय मर्दय चूर्णय चूर्णय चक्रेण गदा वज्रेण भस्मी कुरु कुरु स्वाहा। इति श्रीनृसिंहकवचं सम्पूर्णम्।।

विष्णुपञ्जरस्तोत्रम्

(विष्णु कवचम्)

ॐ अस्य श्रीविष्णुपञ्जरस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीविष्णु परमात्मादेवता अहं बीजम्।

सोऽहं शक्तिः। ॐ ह्रीं कीलकम्। मम देहरक्षणार्थं जपे विनियोगः। नारदर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीविष्णुपरमात्मादेवतायै नमः हृदये। अहं बीजं गुह्ये। सोऽहं शक्तिः पादयोः॥ ॐ ह्रीं कीलकं पादाग्रे। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः, इति मन्त्रः। ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः। ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। इति अङ्गन्यासः। अहं बीजं प्राणायामं मन्त्रत्रयेण कुर्यात्,॥ अथ ध्यानम्॥ परं परमात्माप्रकृतेरनादिमेकं, निविष्टं बहुधा गुहायाम्। सर्वालयं सर्वचराचरस्थं, नमामि विष्णुं जगदेकनाथम्॥ १॥ विष्णुपञ्जरकं दिव्यं सर्वदुष्टनिवारणम्। उग्रतेजो महावीर्यं सर्वशत्रुनिकृन्तनम् ॥ २॥ त्रिपुरं दह्यमानस्य हरस्य ब्रह्मणोदितम्। तदहं संपवक्ष्यामि ह्यात्मरक्षाकरं नृणाम्॥ ३॥ पादौ रक्षतु गोविन्दो जंघे चैव त्रिविक्रमः। उरू मे केशवः पातु कटिं चैव जनार्दनः॥ ४॥ नाभिं चैवाऽच्युतः पातु गुह्यं चैव तु वामनः। उदरं पद्मनाभश्च पृष्ठं चैव तु माधवः॥ ५॥ वामपार्श्वे स्थितो विष्णुर्दक्षिणे मधुसूदनः। बाह्वोर्मे वासुदेवश्च हृदि दामोदरस्तथा॥ ६॥ कण्ठे रक्षतु वाराहः कृष्णश्च मुखमण्डले। माधवः कर्णमूले तु

हृषीकेशश्च नासिके।। ७।। नेत्रे नारायणो रक्षेल्ललाटं गरुडध्वजः। कपोलौ केशवो रक्षेद्वैकुण्ठः सर्वतो दिशम्।। ८।। श्रीवत्साङ्कश्च सर्वेषां मङ्गलानां च रक्षकः। पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्षो आग्नेय्यां श्रीधरस्तथा।। ९।। दक्षिणे नारसिंहश्च नैऋत्यां माधवोऽवतु। पुरुषोत्तमस्तु वारुण्यां वायव्यां च जनार्दनः।। १०।। गदाधरस्तु कौवेर्य्यामैशान्यां पातु केशवः। आकाशे च गदा पातु पाताले च सुदर्शनः।। ११।। सन्नद्धः सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपञ्जरः। विष्णुपञ्जरविष्टोऽहं विचरामि महीतले।। १२।। राजद्वारे पथे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे। नदीषु तरणे चैव चौरव्याघ्रभयेषु च।। १३।। डाकिनीप्रेतभूतेषु भयं तस्य न जायते। रक्ष रक्ष महादेव रक्ष रक्ष जनेश्वर!।। १४।। रक्षन्तु देवताः सर्वा ब्रह्म–विष्णु–महेश्वराः। जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु माधवः ।। १५।। अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः। दिवा रक्षतु मां सूर्यो रात्रौ रक्षतु चन्द्रमाः।। १६।। पन्थानं दुर्गमे रक्षेत् सर्वमेव जनार्दनः। रोगविघ्नहतश्चैव ब्रह्महा गुरुतल्पगः।। १७।। स्त्रीहन्ता बालघाती च सुरापी वृषलीपतिः। मुच्यते सर्वपापेभ्यो यः पठेन्नात्र संशयः।। १८।। अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्। विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी लभते गतिम्।। १९।। आपदां हरते नित्यं विष्णुस्तोत्रार्थसम्पदा। यस्त्विदं पठति स्तोत्रं विष्णुपञ्जरमुत्तमम्।। २०।। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति। गोसहस्रफलं तस्य

बाजपेयशतानि च।। २१।। अश्वमेधसहस्रेण फलं प्राप्नोति मानवः। सर्वकामं लभेदस्य पठनान्नात्र संशयः ।। २२।। जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके। ज्वालमालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्।।२३।। इति ब्रह्माण्डपुराणीयं विष्णुपञ्जरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ एकमुखिहनुमत्कवचम्।।

ॐ श्रीहनुमते नमः।। एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम्। पप्रच्छ गिरिजाकान्तं कर्पूरधवलं शिवम्।। १।। पार्वत्युवाच। भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगद्गुरो।। शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद् ध्रुवम्।। २।। संग्रामे संकटे घोरे भूतप्रेतादिके भये।। दुःखदावा–ग्निसंतप्तचेतसां दुःखभागिनाम् ।। ३।। ईश्वर उवाच।। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।। ४।। विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा। कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः। गुह्यं ते संप्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि।। ५।। ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवच स्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रः ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः। श्री महावीरो हनुमान् देवता। मारुतात्मज इति बीजम्। ॐ स्वाहा इति कीलकम्। लक्ष्मणप्रणदाता इति बीजम्।। मम सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।। अथ न्यासः।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। ॐ अञ्जनीसूनवे हृदयाय नमः।। ॐ रूद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा।। ॐ वायुसुतात्मने शिखायै वषट्।। ॐ वज्रदेहाय कवचाय हुम्।। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय अस्त्राय फट्।। ॐ रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमन् प्रचोदयात्।। ॐ ह्रूं फट् इति दिग्बन्धः।। ॐ ध्यायेद्बाल दिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा।। सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ।। १।। उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौंजीयज्ञोपवीताऽरुणरुचिरशिखाशोभितं कुण्डलाङ्गम्।। भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदम्। ध्यायेदेवं विधं तं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्द्धिम्।। २।। वज्रांगपिंगकेशाढ्यम् स्वर्णकुण्डलमण्डितम्।। नियुद्धकर्मकुशलं पारावारपराक्रमम्।। ३।। वामहस्ते महावृक्षं दशास्यकरखण्डनम्।। उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिंतयेत्।। ४।। स्फाटिकाभं स्वर्णकांतिं द्विभुजं च कृतांजलिम्। कुण्डलद्वयसंशोभिमुखांभोजं हरिं भजेत्।। ५।। उद्यदादित्यसंकाशमुदारभुजविक्रमम्।। कंदर्पकोटिलावणयं सर्वविद्याविशारदम्।। ६।। श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् अभयं वरदं दोर्भ्याङ्कलये मारुतात्मजम्।। ७।।

अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित।। प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ ८॥ योवारान्निधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्यप्रतापान्वितो। वैदेहीघनशोकतापहरणो वैकुण्ठतत्त्वप्रियः। अक्षाद्युर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे। सोऽयम् वानरपुंगवोऽवतु सदा अस्मान्समीरात्मजः॥ ९॥ वज्रांगम् पिंगकेशं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगंडं। नानाविद्याधिनाथं करतलविधृतम् पूर्णकुम्भं दृढं च॥ भक्ताभीष्टाधिकारं विदधति च सदासर्वदा सुप्रसन्नम्। त्रैलोक्यत्राणहेतुं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि॥ १०॥ उद्यल्लांगूलकेशप्रचलजलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रम्। वन्दे रामांघ्रिपद्मभ्रमरपरिवृतं तत्त्वसारं प्रसन्नम्॥ वज्रांगं वज्ररूपं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रांतगंडं दंभोलिस्तम्भसारप्रहरणविकटं भूतरक्षोधिनाथम्॥ ११॥ वामे करे वैरिभयं वहन्तं शैलं च दक्षे निजकंठलग्नम्॥ दधानमासाद्यसुवर्णवर्णं भजे ज्वलत्कुण्डलरामदूतम्॥ १२॥ पद्मरागमणिकुंडलत्विषा पाटलीकृतकपोलमंडलम्॥ दिव्यदेहकदलीवनांतरे भावयामि पवमाननन्दनम्॥१३॥ ईश्वर उवाच॥ इति वदतिविशेषाद्रघवे राक्षसेन्द्रः प्रमुदित वरचित्तो रावणस्यानुजो हि॥ रघुवरवरदूतं पूजयामास भूयः स्तुतिभिरतिकृतार्थं स्वं परं मन्यमानः॥१४॥ वन्दे विद्युद्वलयसुभगं स्वर्णयज्ञोपवीतम् कर्णद्वन्द्वे कनकरुचिरे कुण्डले धारयन्तम्॥ उच्चैर्हृष्यद्द्युमणिकिरणश्रेणि संभावितांगं सत्कौपीनं कपिपरिवृतं कामरूपं कपीन्द्रम्॥

१५।। मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं सततं स्मरामि।। १६।। ॐ नमो भगवते हृदयाय नमः।। ॐ आंजनेयाय शिरसे स्वाहा।। ॐ रूद्रमूर्तये शिखायै वषट्।। ॐ रामदूताय कवचाय हुम्।। ॐ हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अग्निगर्भाय अस्त्राय फट्।। ॐ नमो भगवते अंगुष्ठभ्यां नमः।। ॐ आंजनेयाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूद्रमूर्तये मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ वायुसूनवे अनामिकाभ्यांनमः।। ॐ हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ अग्निगर्भाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। अथ मन्त्र उच्यते।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।। ॐनमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत–प्रेत–पिशाच शाकिनीडाकिनी–यक्षिणी–पूतना मारी महामारी यक्ष राक्षस–भैरव बेताल ग्रहराक्षसादिकं क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामारेश्वररुद्रावतार हुं फट् स्वाहा।। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजन मुखस्तम्भनं कुरु कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं टं टं टं फट् स्वाहा।। ॐ नमो भगवते अञ्जनागर्भसंभूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय कुमार सुग्रीवसाधकारणोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचारिणे गम्भीरशब्दोदयाय।। ॐ ह्रां ह्री ह्रूं सर्वदुष्टनिवारणाय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान्भूतभविष्यद्वर्तमानान्दूरस्थान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्ट– दुर्बुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलानि क्षोभय

क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय हनुमते नमः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् देहि देहि स्वाहा ॐ शिवम् सिद्धम् ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं स्वाहा॥ ॐ नमो हनुमते परकृतयंत्रमंत्रपराहंऽकारभूत प्रेत पिशाच परदृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेटकविद्या सर्वग्रहान्निवारय निवारय वध वध पच पच दल दल किल किल सर्वकुयंत्राणि दुष्टवाचं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषयानाकर्षय आकर्षय मर्दय मर्दय भेदय भेदय मृत्युमुत्पाटयोत्पाटय शोषय शोषय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डलं प्रेतमण्डलं पिशाच मण्डलं निरासय निरासय भूतज्वर प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर विषमज्वर माहेश्वरज्वरान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि अक्षिशूल वक्षशूल शिरोभ्यन्तरशूल गुल्मशूल पित्तशूलब्रह्मराक्षसकुलपरकुलनागकुलविषं नाशय नाशय निर्विषं कुरु कुरु फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहान्निवारय स्वाहा॥ ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानर मुखाय हन हन पापदृष्टि घोरदृष्टि हन हन हनुमदाज्ञया स्फुर स्फुर स्वाहा। श्रीरामचन्द्र उवाच॥ हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः॥ पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥ १॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः॥ अधश्च विष्णुभक्तस्तु पातु मध्यं च पावनिः॥ २॥ अवांतरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः॥ लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भयो निरन्तरम्॥ ३॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः॥ भालं पातु महावीरो

भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्।। ४।। नेत्रेच्छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः।। कपोलौ कर्णमूले तु पातु श्रीरामकिंकरः।। ५।। नासाग्रमंजनीसूनुर्वक्त्रं पातु हरीश्वरः।। वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिंगल लोचनः।। ६।। पातु दंतान् फाल्गुनेष्टःचिबुकं दैत्यप्राणहृत्।। पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कंधौ पातु सुरार्चितः।। ७।। भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः।। नखान्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः।। ८।। वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।। लङ्काविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्।। ९।। नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।। गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी च शिवप्रियः।।१०।। ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः। जंघे पातु महाबाहुर्गुल्फौ पातु महाबलः।।११।। अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।। पादांते सर्वसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा।। १२।। सर्वाङ्गानि महाशूरः पातुरोमणि चात्मवान्।। हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः ।। १३।। स एव पुरुषः श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।। त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं सदा।। १४।। सर्वान्रिपून्क्षणे जित्वा स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात्।। मध्यरात्रौ जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि।।१५।। क्षयाऽपस्मारकुष्ठादितापत्रयनिवारणम्।। अर्किवारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पठति यः पुमान्।।१६।। अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेत्।।१७।। यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात्।। विवाहे दिव्यकाले च द्यूते राजकुले रणे।। १८।। भूतप्रेतमहादुर्गे

रणे सागरसंप्लवे।। दशवारम् पठेद्रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः।। १९।। विजयं लभते लोके मानवेषु नराधिपः।। सिंहव्याघ्रभये चोग्रे शर शस्त्रास्त्रपातने।। २०।। शृङ्खलाबन्धने चैव कारागृहग्रहकारणे।। कायस्तोभे वह्निदाहे गात्ररोगे च दारुणे।। २१।। शोके महारणे चैव ब्रह्मग्रहविनाशने।। सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्यसंशयम्।। २२।। भूर्जे वा वसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके। त्रिगंधेनाथवामस्या लिखित्वा धारयेन्नरः।। २३।। पंचसप्तत्रिलोहैर्वा गोपितं कवचं शुभम्।। गले वा बाहुमूले वा कण्ठे शिरसि धारितम्।। २४।। सर्वान्कामानवाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम्।। २५।। उल्लंघ्य सिंधोः सलिलं सलीलं, यः शोकवह्निं जनकात्माजायाः। आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ।।२६।। हनूमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।। रामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगाक्षोऽमितविक्रमः।। २७।। उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।। लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा।। २८।। द्वादशैतानि नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।। स्वप्नकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्।। २९।। तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।। धनं धान्यं सुखं चैव दुःखं नैव कदाचन।। ३०।। इति एकमुखीहनुमत् कवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ पंचमुखिहनुमत्कवचम्।।

अस्य श्रीपंचमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछंदः। श्री हनुमान् देवता रां बीजम् मं शक्तिः। चन्द्र इति कीलकम् ॐ रौं कवचाय हुंम् ह्रौं अस्त्राय फट्॥ ईश्वर उवाच॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गिसुन्दरम्। यत्कृतं देव देवेशि ध्यानं हनुमतः प्रियम्॥ १॥ पंचवक्त्रं महाभीमं कपियूथसमन्वितम्॥ बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम्॥ २॥ पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम्॥ दंष्ट्राकरालवदनं भ्रुकुटी कुटिलेक्षणम्॥ ३॥ अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम्। अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥ ४॥ पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वक्रतुंडमहाबलम्॥ सर्वनागप्रशमनं सर्वभूतादिकृन्तनम्॥ ५॥ उत्तरे सौकरं वक्त्रं कृष्णदीप्तनभोमयम्॥ पाताले सिद्धवेतालं ज्वररोगादिकृन्तनम्॥ ६॥ उर्ध्वं हयाननं घोरं दानवांतकरं परम्। येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र ताटकाया महाहवे॥ ७॥ दुर्गते शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम्॥ ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम्॥ ८॥ खड्गं त्रिशूलं खट्वांगं पाशमंकुशपर्वतम्॥ मुष्टौ तु मोदको वृक्षं धारयन्तं कमंडलुम् ॥ ९॥ भिंदिपालं ज्ञानमुद्रां दमनं मुनिपुंगव॥ एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भयापहम्॥ १०॥ दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगंधानुलेपनम्॥ सर्वैश्वर्यमयं देवं हनुमद् विश्वतोमुखम्॥ ११॥ पंचास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं चक्रं सशंखविभृतं कपिराजवीर्यम्॥ पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभितांगं पिंगाक्षमञ्जनिसुतं

ह्यनिशं स्मरामि॥ १२॥ मर्कटस्य महोत्साहं सर्वशोकविनाशनम्। शत्रुसंहारकं चैतत्कवचं ह्यापदं हरेत् ॥१३॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥१४॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा॥१५॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकल भूत प्रेत दमनाय स्वाहा॥ १६॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा॥ १७॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसंम्पत्कराय स्वाहा॥ १८॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवश्यकराय स्वाहा॥ १९॥ इति मूल मंत्रः॥ ॐ अस्य श्री पञ्चमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिरनुष्टुप् छंदः श्रीरामचन्द्रो देवता॥ सीता इति बीजम्॥ हनुमानिति शक्तिः हनुमत्प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ पुनर्हनुमानिति बीजम्॥ ॐ वायुपुत्राय इति शक्तिः। अंजनीसुतायेति कीलकम्॥ श्रीरामचन्द्रवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ हं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अं अंजनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सं सीताशोकनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्॥ ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय

वौषट्।। ॐ पंचमुखिहनुमते अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्— श्रीरामदूताय आंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय महाबलप्रचण्डाय सप्तसमुद्रान्तरालललंघिताय पिंगलनयनामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवा— धिष्ठितपराक्रमाय संजीवन्या अंगदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदात्रे दशग्रीवविध्वंसनाय रामेष्टाय सीतया सह रामचन्द्रवरप्रसादाय षट्प्रयोगागमपंचमुखिहनुमन्मन्त्रजपे विनियोगः ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा। ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय फंफंफंफंफं स्वाहा।। ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा।। ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तंभनाय स्वाहा।। ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय सकलसम्पत्कराय पंचमुखिवीरहनुमते स्वाहा।। उच्चाटने।। ॐ ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पंचमुखिवीरहनुमते परमन्त्र परयन्त्र परतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा।। ॐ कं खं गं घं, ङं, चं, छं, जं, झं, ञं, टं, ठं, डं, ढं, णं, तं, थं, दं, धं, नं, पं, फं, बं, भं, मं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, क्षं स्वाहा।। इति दिग्बन्धः।। ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखिहनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा।। ॐ दक्षिणमुखे पंचमुखिहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ह्रां, ह्रां, ह्रां, ह्रां ह्रां सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा।। ॐ पश्चिममुखे गरुडाननाय पंचमुखिवीरहनुमते मं, मं, मं, मं, मं, सकलविषहराय

स्वाहा।। ॐ उत्तरमुखे आदिवराहाय लं, लं, लं, लं, लं, नृसिंहाय नीलकंठाय पंचमुखिहनुमते स्वाहा।। ॐ ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रुं रुं रुं रुं रुं रुद्रमूर्तये पंचमुखिवीरहनुमते सकलजनवश्यकराय स्वाहा।। ॐ अञ्जनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय रामेष्टफाल्गुनसखायसीताशोकनिवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपिसैन्यप्रकाशानाय दशग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवरप्रसादकाय महावीर्याय प्रथमब्रह्मांडनायकाय पंचमुखिहनुमते भूत–प्रेत–पिशाच–ब्रह्मराक्षस–शाकिनी–डाकिनी–अन्तरिक्षग्रहपरयन्त्र–परमन्त्र–पर–तन्त्रसर्वग्रहोच्चाटनाय सकलशत्रुसंहारणाय पंचमुखिहनुमद्वरप्रसादकसर्वरक्षकाय जं, जं, जं, जं, जं, स्वाहा। इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः। एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।। १८।। द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।। त्रिवारं पठते नित्यं सर्वसंपत्करं परम्।। १९।। चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम्।। पचंबारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणाम्।। २०।। षड्बारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेववशीकरम्। सप्तबारं पठेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम्।। २१।। अष्टबारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम्। नवबारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्य प्रदायकम्।।२२।। दशबारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम्। एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः।। कवचस्मृतिमात्रेण महालक्ष्मीफलप्रदम् ।। २३।। इति।। इति एकमुखी हनुमत्कवचम् सम्पूर्णम्।।

।। अथ गरुडकवच।।

हरिः ओम्।। अस्य श्रीगरुडकवचस्तोत्रमंत्रस्य नारद भगवान् ऋषिः वैनतेयो देवता अनुष्टुप्छंदः श्रीवैनतेयप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। ॐ शिरो मे गरुडः पातु ललाटे विनितासुतः। नेत्रे तु सर्पहा पातु कर्णौ पातु सुराहतः।। १।। नासिकां पातु सर्पारिः वदनं विष्णुवाहनः।। सूर्य्येतालू च कंठे च भुजौ पातुमहाबलः।। २।। हस्तौखगेश्वरः पातु कराग्रे तरुणाकृतिः।। ३।। स्तनौ मे विहगः पातु हृदयं पातु सर्पहा।। नाभिं पातु महातेजाः कटिं मे पातु वायुनः।। ४।। उरू मे पातु उरगिरिः गुल्फौ विष्णुरथः सदा।। पादौ मे तक्षकः सिद्धः पातु पादांगुलींस्तथा।। ५।। रोमकूपानि मे वीरो त्वचं पातु भयापहा।। इत्येवं कवचं दिव्यं पापघ्नं सर्वकामदम्।। ६।। यः पठेत्प्रातरुत्थाय विषदोषं न पश्यति।। त्रिसंध्यं पठते नित्यं बंधनात् मुच्यते नरः।। द्वादशाहं पठेद्यस्तु मुच्यते सर्वकिल्विषैः ।। ७।। इति नारदगरुडसम्वादे गरुडकवचं सम्पूर्णम्।

।। अथ भगवती कवचम्।।

ॐ नमोभगवति वज्रशृङ्खले हन२ ॐ भक्ष २ ॐ अरे रक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षिरक्तपटे भस्माङ्गि

भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रप्राकारनिचिते पूर्वां दिशं बन्ध२ ॐ दक्षिणां दिशं बन्ध२ ॐ पश्चिमां दिशं बन्ध २ ॐ उत्तरां दिशं बन्ध २ ॐ नागान् बन्ध २ नागपत्नीर्बन्ध २ ॐ असुरान् बन्ध २ ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बन्ध २ प्रेतभूतगन्धर्वादि ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्ष २ ॐ ऊर्ध्वं रक्ष २ अधो रक्ष २ क्षुरिकं बन्ध २ ॐ ज्वलमहाबले घटि २ ॐ मोटि २ सटावलि वज्रांगि वज्रप्राकारे हुँ फट् ह्रीं ह्रूं श्रीं फट् ह्रीं हः फ्रूं फ्रें फ्रः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यः ह्रीं आमीवेभ्यो रक्ष २ ग्रहभूत ज्वरादिषु सर्वकर्मषु योजयेत्।। इत्याग्नेयं भगवतीकवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ वैरिनाशनं कालीकवचम्।।

कैलास शिखरारूढं शङ्करं वरदं शिवम्। देवी पप्रच्छ सर्वज्ञं सर्वदेव महेश्वरम्।। १।। श्रीदेव्युवाच भगवन् देवदेवेश देवानां भोगद प्रभो। प्रब्रूहि मे महादेव! गोप्यमद्यापि यत् प्रभो।। २।। शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्। परमैश्वर्यमतुलं लभेद्येन हि तद् वद।। ३।। वक्ष्यामि ते महादेवि! सर्वधर्मविदाम्वरे। अद्भुतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम्।। ४।। विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम्। सर्वारिष्ट—

प्रशमनमभिचार—विनाशनम्।। ५।। सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम्। शत्रुसंघाः क्षयं यान्ति भवन्ति व्याधिपीडिताः। दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वानिष्टपतितास्तथा।। ६।। विनियोगः— ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषये नमः, शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः, मुखे। श्रीकालिकादेवतायै नमः, हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हूँ शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे। शत्रुसंघनाशनार्थे पाठे विनियोगः। इति विन्यस्य, क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः। इति करषडङ्गन्यासादिकं कुर्यात्।

ध्यानम्— ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्। चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ।। ७।। नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघविदारिणीम्। नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा।। ८।। विभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्। अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।। ९।। शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषणाम्। इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत्।। १०।। कालिका घोररूपाद्या सर्वकामफलप्रदा। सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे।। ११।। ॐ ह्रीं स्वरूपिणीं चैव ह्राँ ह्रीं ह्रूँ रूपिणी तथा। ह्राँ ह्रीं है ह्रौं स्वरूपा च सदा शत्रून् प्रणश्यतु।। १२।। श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचनी। ह्रीं सकलं ह्रीं रिपुश्च सा हन्तु सर्वदा मम।। १३।। यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः। वैरिनाशाय वन्दे तां

कालिकां शङ्करप्रियाम्॥ १४॥ ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका। कौमार्य्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः॥ १५॥ सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्डविनाशिनी। मुण्डमाला धृताङ्गी च सर्वतः पातु मा सदा ॥१६॥ अथ मन्त्रः,— ह्रां ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे च रूधिरप्रिये। रूधिरापूर्णवक्त्रे च रूधिरेणावृतस्तनि॥ १७॥ मम सर्वशत्रून् खादय२ हिंस हिंस मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय२ विद्रावय विद्रावय शोषण शोषय स्वाहा। ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीयशत्रून् समर्पय स्वाहा। ॐ जय जय किरि किरि किट किट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय—त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्याः कुरु कुरु अश्वान् गजान् दिव्यकामिनीः पुत्रान् राजश्रियं देहि२ तनु तनु धान्यं धनं यक्षं क्षां क्षूं क्षैं क्षौं क्षं क्षः स्वाहा। इति मन्त्रः। फलश्रुतिः— इत्येतत् कवचं पुण्यं कथितं शम्भुना पुरा। ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति वैरिणः॥ १८॥ वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्च भवन्ति हि। बलहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा॥ १९॥ सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तथा। ततः कार्याणि सिध्यन्ति यथाशङ्करभाषितम्॥ २०॥ श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः। पादोदकेन पिष्टा च लिखेल्लोहशलाकया॥ २१॥ भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा। हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं

पठेत्।। २२।। प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा वै तथा मन्त्रेण मन्त्रवित्। हन्यादस्त्रप्रहारेण शत्रो! गच्छ यमक्षयम्।। २३।। ज्वलदङ्गारलेपेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्। प्रोंक्षयेद्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्।। २४।। वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्। परमैश्वर्य्यदं चैव पुत्र पौत्रादि वृद्धिदम्।। २५।। प्रभातसमये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः। सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।। २६।। शत्रुरुच्चाटनं याति देशाद् वा विच्युतो भवेत्। पश्चात् किंकरतामेति सत्यं सत्यं न संशयः।। २७।। शत्रुनाशकरं देवि सर्वसम्पत्करं शुभम्। सर्वदेवस्तुते देवि कालिके त्वां नमाम्यहम्।। २८।। ।। इति वैरिनाशनं कालीकवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ दुर्गा कवचम्।।

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।। मार्कण्डेय उवाच।।

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्। यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।। १।। ब्रह्मोवाच।। अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्। देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।। २।। प्रथमं

शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ ३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ ४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ ५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे। विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥ ६॥ न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे। नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ ७॥ यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धि प्रजायते। ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥ ८॥ प्रेतसंस्थातु चामुण्डा वाराही महिषासना। ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ ९॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना। लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ १०॥ श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥ ११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः। नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ १२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः। शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥ १३॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च। कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ १४॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥ १५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥ १६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां

भयवर्द्धिनि। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।। १७।। दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी। प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।। १८।। उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्या शूलधारिणी। ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।। १९।। एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना। जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।। २०।। अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता। शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।। २१।। मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी। त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।। २२।। शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी। कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी।। २३।। नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका। अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती।। २४।। दन्तान् रक्षतु कौमरी कण्ठदेशे तु चण्डिका। घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।। २५।। कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला। ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।। २६।। नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी। स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।। २७।। हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च। नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।। २८।। स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी। हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।। २९।। नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा। पूतना कामिका मेढ्रं गुदे

महिषवाहिनी।। ३०।। कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी। जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ।। ३१।। गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी। पादाङ्गुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधस्तलवासिनी।। ३२।। नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी। रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्री तथा।। ३३।। रक्तमज्जावसा–मांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।। ३४।। पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा। ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु।। ३५।। शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा। अहंकार मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।। ३६।। प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्। वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।। ३७।। रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी। सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।। ३८।। आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी। यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी।। ३९।। गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके। पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ।। ४०।। पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा। राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।। ४१।। रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु। तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।। ४२।। पदमेक न गच्छेतु यदीच्छेच्छुभमात्मनः। कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।। ४३।। तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकाः।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्। परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।। ४४।। निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः। त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।। ४५।। इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्। यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः।। ४६।। दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः। जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।। ४७।। नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः। स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।। ४८।। अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले। भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।। ४९।। सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा। अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।। ५०।। ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः। ब्रह्मराक्षसवेताला: कूष्माण्डा भैरवादयः।। ५१।। नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते। मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।। ५२।। यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले। जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।। ५३।। यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्। तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी।। ५४।। देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्। प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।। ५५।। लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।। ॐ।। ५६।।

।। इति दुर्गाकवचं सम्पूर्णम्।।

।। अथ अमोघ शिवकवचम्।।

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम्, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवेचस्तोत्रजपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः— ॐ ब्रह्माऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे। श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः, हृदि। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। वं कीलकाय नमः, नाभौ। श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः, गुह्ये। विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे। अथ करन्यासः— ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वहा। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ म रू अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हृदयाद्यङ्गन्यासः।। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः। ॐ नमो भगवते

ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा। ॐ नमो भगवतो ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतंत्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्। अथ ध्यानम्— वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्। सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्।। ऋषभ उवाच— अथापरं सर्वपुराणगुह्यं, निःशेषपापौघहरं पवित्रम्। जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं, वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते।। नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्। वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्।। १।। शुचौ देशो समासीनो यथावत्कल्पितासनः। जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्।। २।। हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्। अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं महेशम्।। ३।। ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः। षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्।। ४।। मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे। तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे

सर्वमघं हृदिस्थम्।। ५।। सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा। अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात्।। ६।। यो भूस्वरूपेण-बिभर्ति विश्वं, पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः। योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति, संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः।। ७।। कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः। स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्।। ८।। प्रदीप्तविद्युत्क-नकावभासो, विद्यावराभीतिकुठारपाणिः। चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः, प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम्।। ९।। कुठारवेदाङ्कुशपाशशूल, कपालढक्काक्षगुणान् दधानः। चतुर्मुखो नीलरुचित्रिनेत्रः, पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्।। १०।। कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो, वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः। त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः, सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्।। ११।। वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः, सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः। त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः।। १२।। वेदाभयेष्टांकुशपाशटङ्क-कपालढक्काक्षाकशूलपाणिः। सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा,मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः।। १३।। मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिः, भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः। नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी, नासां सदा रक्षतु विश्चनाथः।। १४।। पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः, कपोलमव्यात् सततं कपाली। वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु

वेदजिह्वः।। १५।। कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः, पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः। दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु र्वक्षः स्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्।। १६।। ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी। हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे।। १७।। ऊरूद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्। जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्, पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः।। १८।। महेश्वरः पातु दिनादियामे, मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः। त्रियम्बकः पातु तृतीययामे, वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे।। १९।। पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे। गौरीपतिः पातु निशावसाने, मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्।। २०।। अन्तः स्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्। तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्।। २१।। तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः, पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः। वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्।। २२।। मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः, शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः। अरण्यवासादिमहाप्रवासे, पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः।। २३।। कल्पान्तकाटोपप— टुप्रकोपः, स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः। घोरारिसेनार्णवदुर्निवार, महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ।। २४।। पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथ— सहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम्। अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां, छिन्द्यान्मृडो

घोरकुठारधारया।। २५।। निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि–र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य। शार्दूलसिंहर्क्षवृका–दिहिंस्रान्, संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्।। २६।। दुःस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्य, दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्य–शांसि। उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।। २७।। ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरमयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशांकुशडम– रूशूलचापबाणगदाशक्तिभिन्दिपालतोम–रमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासवि–स्फारितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक

विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्ध खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते। ऋषभ उवाच— इत्येत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया। सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥ २८॥ यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्। न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥ २९॥ क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा। सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥ ३०॥ सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्। यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते॥ ३१॥ महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः। देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः॥ ३२॥ त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्। धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥ ३३॥ इति अमोघ शिवकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री दत्तात्रेयवज्रकवचम्॥

ऋषय ऊचुः— कथं संकल्पसिद्धिः स्याद्वेदव्यास कलौ युगे। धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं किमुदाहृतम्॥ व्यास उवाच ॥१॥ शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे शीघ्रं संकल्पसाधनम्। सकृदुच्चारमात्रेण भोगमोक्षप्रदायकम्॥ २॥ गौरीशृङ्गे हिमवतः कल्पवृक्षोपशोभितम्। दीप्ते दिव्यमहारत्नहेममण्डपमध्यगम्॥ ३॥ रत्नसिंहासनासीनं प्रसन्नं परमेश्वरम्। मंदस्मितमुखाम्भोजं शंकरं प्राह पार्वती॥ ४॥ श्रीदेव्युवाच— देवदेव महादेव लोकशंकर शंकर। मन्त्रजालानि सर्वाणि यन्त्रजालानि कृत्स्नशः॥ ५॥ तन्त्रजालान्यनेकानि मया त्वत्तः श्रुतानि वै। इदानीं द्रष्टुमिच्छामि विशेषेण महीतलम्॥ ६॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य पार्वत्या परमेश्वरः। करेणामृज्य संतोषात्पार्वतीं प्रत्यभाषत॥ ७॥ मयेदानीं त्वया सार्धं वृषमारुह्य गम्यते। इत्युक्त्वा वृषमारुह्य पार्वत्या सह शंकरः॥ ८॥ ययौ भूमण्डलं द्रष्टुं गौर्याश्चित्राणि दर्शयन्। क्वचिद् विंध्याचलप्रान्ते महारण्ये सुदुर्गमे॥ ९॥ तत्र व्याहन्तुमायान्तं भिल्लं परशुधारिणम्। वध्यमानं महाव्याघ्रं नखदंष्ट्राभिरावृतम्॥ १०॥ अतीव चित्रचारित्र्यं वज्रकायसमायुतम्। अप्रयत्नमनायासमखिन्नं सुखमास्थितम्॥ ११॥ पलायन्तं मृगं पश्चाद् व्याघ्रो भीत्या पलायितः। एतदाश्चर्यमालोक्य पार्वती प्राह शंकरम्॥ १२॥ किमाश्चर्यं किमाश्चर्यमग्रे शम्भो निरीक्ष्यताम्। इत्युक्तः

स ततः शम्भुर्दृष्ट्वा प्राह पुराणवित्॥ १३॥ गौरि वक्ष्यामि ते चित्रमावाङ्मनसगोचरम्। अदृष्टपूर्वमस्माभिर्नास्ति किञ्चिन्न कुत्रचित्॥ १४॥ मया सम्यक् समासेन वक्ष्यते शृणु पार्वति। अयं दूरश्रवा नाम भिल्लः परमधार्मिकः॥ १५॥ समित्कुशप्रसूनानि कन्दमूलफलादिकम्। प्रत्यहं विपिनं गत्वा समादाय प्रयासतः॥ १६॥ प्रिये पूर्वं मुनीन्द्रेभ्यः प्रयच्छति न वाञ्छति। तेऽपि तस्मिन्नपि दयां कुर्वते सर्वमौनिनः॥ १७॥ दलादनो महायोगी वसन्नेव निजाश्रमे। कदाचिदस्मरत् सिद्ध दत्तत्रेयं दिगम्बरम्॥ १८॥ दत्तात्रेयः स्मर्तृगामी चेतिहासं परीक्षितुम्। तत्क्षणात्सोऽपि योगीन्द्रो दत्तात्रेयः समुत्थितः॥ १९॥ तं दृष्ट्वाऽऽश्चर्यतोषाभ्यां दलादनमहामुनिः। सम्पूज्याग्रे निषीदन्तं दत्तात्रेयमुवाच तम्॥ २०॥ मयोपहूतः सम्प्राप्तो दत्तात्रेयमहामुने। स्मर्तृगामी त्वमित्येतत् किंवदन्ती परीक्षितुम्॥ २१॥ मयाद्य संस्मृतोऽसि त्वमपराधं क्षमस्व मे। दत्तत्रेयो मुनिः प्राह मम प्रकृतिरीदृशी॥ २२॥ अभक्त्या वा सुभक्त्या वा यः स्मरेन्मामनन्यधीः। तदानीं तमुपागत्य ददामि तदभीप्सितम्॥ २३॥ दत्तात्रेयो मुनिं प्राह दलादनमुनीश्वरम्। यदिष्टं तद्वृणीष्व त्वं यत् प्राप्तोऽहं त्वया स्मृतः॥ २४॥ दत्तात्रेयं मुनिः प्राह मया किमपि नोच्यते। त्वच्चिते यत्स्थितं तन्मे प्रयच्छ मुनिपुङ्गव॥ २५॥ ममास्ति वज्रकवचं गृहाणेत्यवदन्मुनिम्। तथेत्यङ्गीकृतवते दलादमुनये मुनिः॥ २६॥ स्वज्रकवचं प्राह ऋषिश्छन्दः पुरः सरम्।

न्यासं ध्यानं फलं तत्र प्रयोजनमशेषतः॥ २७॥ अस्य श्री दत्तात्रेयवज्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य किरातरूपी महारुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, द्रां बीजम्, आं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, ॐ आत्मने नमः। ॐ द्रीं मनसे नमः। ॐ आं द्रीं श्रीं सौः ॐ क्लां कलीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः। श्रीदत्तात्रेयप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ (करन्यास) ॐ द्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ द्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ द्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ द्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ द्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ द्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अथ ध्यानम्— जगदङ्कुरकन्दाय सच्चिदानन्दमूर्तये। दत्तात्रेयाय योगीन्द्रचन्द्राय परमात्मने॥ १॥ कदा योगी कदा भोगी कदा नग्नः पिशाचवत्॥ १॥ दत्तात्रेयो हरिः साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥ २॥ वाराणसीपुरस्नायी कोल्हापुरजपादरः। माहुरीपुरभिक्षाशी सह्यशायी दिगम्बरः॥ ३॥ इन्द्रनीलसमाकारश्चन्द्रकान्तसमद्युतिः। वैदूर्यसदृशस्फूर्तिश्चलत्किञ्चिज्जटाधरः॥ ४॥ स्निग्धधावल्ययुक्ताक्षोऽत्यन्तनीलकनीनिकः। भ्रूवक्षः श्मश्रुनीलाङ्कः शशाङ्कसदृशाननः॥ ५॥ हासनिर्जितनीहारः कण्ठनिर्जितकम्बुकः। मांसलांसो दीर्घबाहु पाणिनिर्जितपल्लवः॥ ६॥ विशालपीनवक्षाश्च ताम्रपाणिर्दलोदरः। पृथुलश्रोणिललितो विशालजघनस्थलः॥ ७॥ रम्भास्तम्भोपमानोरूर्जानुपूर्वैकजंघकः। गूढ़गुल्फः कूर्मपृष्ठो लसत्पादोपरिस्थलः॥ ८॥ रक्तारविन्दसदृशरमणीयपदाधरः। चर्माम्बरधरो योगी स्मर्तृगामी

क्षणे क्षणे।। ९।। ज्ञानोपदेशनिरतो विपद्धरणदीक्षितः। सिद्धासनसमासीन ऋजुकायो हसन्मुखः।। १०।। वामहस्तेन वरदो दक्षिणेनाभयंकरः। बालोनमत्तपिशाचीभिः क्वचिद्युक्तः परीक्षितः।। ११।। त्यागी भोगी महायोगी नित्यानन्दो निरञ्जनः। सर्वरूपी सर्वदाता सर्वगः सर्वकामदः।। १२।। भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गो महापातकनाशनः। भुक्तिप्रदो मुक्तिदाता जीवन्मुक्तो न संशयः।। १३।। एवं ध्यात्वाऽनन्यचित्तो मद्वज्रकवचं पठेत्। मामेव पश्यन्सर्वत्र स मया सह संचरेत्।। १४।। दिगम्बरं भस्मसुगन्धलेपनं चक्रं त्रिशूलं डमरुं गदायुधम्। पद्मासनं योगिमुनीन्द्रवन्दितं दत्तेति नामस्मरणेन नित्यम्।। १५।। ॐ दत्तात्रेयः शिरः पातु सहस्राब्जेषु संस्थितः। भालं पात्वनसूयेयश्चन्द्रमण्डलमध्यगः।। १।। कूर्चं मनोमयः पातु हं क्षं द्विदलपद्मभूः। ज्योतिरूपोऽक्षिणी पातु पातु शब्दात्मकः श्रुती।। २।। नासिकां पातु गन्धात्मा मुखं पातु रसात्मकः। जिह्वां वेदात्मकः पातु दन्तोष्ठौ पातु धार्मिकः।। ३।। कपोलावत्रिभूः पातु पात्वशेषं ममात्मवित्। स्वरात्मा षोडशाराब्जस्थितः स्वात्माऽवताद्गलम्।। ४।। स्कन्धौ चन्द्रानुजः पातु भुजौ पातु कृतादिभूः जत्रुणी शत्रुजित् पातु पातु वक्षः स्थलं हरिः।। ५।। कादिठान्तद्वादशारपद्मगो मरुदात्मकः। योगीश्वरेश्वरः पातु हृदयं हृदयस्थितः।। ६।। पार्श्वे हरिः पार्श्ववर्ती पातु पार्श्वस्थितः स्मृतः। हठयोगादियोगज्ञः कुक्षी पातु कृपानिधिः।। ७।।

डकारादिफकारान्तदशारसरसीरुहे। नाभिस्थले वर्तमानो नाभिं वह्न्यात्मकोऽवतु॥ ८॥ वह्नितत्त्वमयो योगी रक्षतान्मणिपूरकम्। कटिं कटिस्थब्रह्माण्डवासुदेवात्मकोऽवतु॥ ९॥ बकारादिलकारान्तषट्पत्राम्बुजबोधकः। जलतत्त्वमयो योगी स्वाधिष्ठानं ममावतु ॥१०॥ सिद्धासनसमासीन ऊरू सिद्धेश्वरोऽवतु। वादिसान्तचतुष्पत्रसरो-रुहनिबोधकः॥ ११॥ मूलाधारं महीरूपो रक्षातद्वीर्यनिग्रही। पृष्ठं च सर्वतः पातु जानुन्यस्तकराम्बुजः॥ १२॥ जङ्घे पात्ववधूतेन्द्रः पात्वंघ्री तीर्थपावनः। सर्वाङ्गं पातु सर्वात्मा रोमाण्यवतु केशवः॥ १३॥ चर्म चर्माम्बरः पातु रक्तं भक्तिप्रियोऽवतु। मांसं मांसकरः पातु मज्जां मज्जात्मकोऽवतु॥ १४॥ अस्थीनि स्थिरधीः पायान्मेधां वेधाः प्रपालयेत्। शुक्रं सुखकरः पातु चित्तं पातु दृढाकृतिः॥ १५॥ मनोबुद्धिमहंकारं हृषीकेशात्मकोऽवतु। कर्मेन्द्रियाणि पात्वीशः पातु ज्ञानेन्द्रियाण्यजः॥ १६॥ बन्धून् बन्धूत्तमः पायाच्छत्रुभ्यः पातु शत्रुजित्। गृहारामधनक्षेत्रपुत्रादीञ्छंकरोऽवतु ॥१७॥ भार्यां प्रकृतिवित् पातु पश्वादीन्पातु शार्ङ्गभृत्। प्राणान्पातु प्रधानज्ञो भक्ष्यादीन्पातु भास्करः॥ १८॥ सुखं चन्द्रात्मकः पातु दुःखात् पातु पुरान्तकः। पशून्पशुपतिः पातु भूतिं भूतीश्वरो मम॥ १९॥ प्राच्यां विषहरः पात्वाग्नेय्यां पातु मखात्मकः॥ याम्यां धर्मात्मकः पातु नैर्ऋत्यां सर्ववैरिहृत्॥ २०॥ वराहः पातु वारुण्यां वायव्यां प्राणदोऽवतु। कौबेर्यांधनदः पातु पात्वैशान्यां महागुरुः

॥ २१॥ ऊर्ध्वं पातु महासिद्धः पात्वधस्ताज्जटाधरः। रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वादिमुनीश्वरः॥ २२॥ एतन्मे वज्रकवचं यः पठेच्छृणुयादपि। वज्रकायश्चिरञ्जीवी दत्तात्रेयोऽहमब्रुवम्॥ २३॥ त्यागी भोगी महायोगी सुखदुः खविवर्जितः। सर्वत्रसिद्धसंकल्पो जीवन्मुक्तोऽथ वर्तते॥ २४॥ इत्युक्त्वान्तर्दधे योगी दत्तात्रेयो दिगम्बरः। दलादनोऽपि तज्जप्त्वा जीवनमुक्तः स वर्तते॥ २५॥ भिल्लो दूरश्रवा नाम तदानीं श्रुतवानिदम्। सकृच्छ्रवणमात्रेण वज्राङ्गोऽभवदप्यसौ॥ २६॥ इत्येतद्वज्रकवचं दत्तात्रेयस्य योगिनः। श्रुत्वाशेषं शम्भुमुखात् पुरनप्याह पार्वती॥ २७॥ एतत्कवचमाहात्म्यं वद विस्तरतो मम। कुत्र केन कदा जाप्यं किं यज्जप्यं कथं कथम्॥ २८॥ उवाच शम्भुस्तत्सर्वं पार्वत्या विनयोदितम्। श्रीशिव उवाच— शृणु पार्वति वक्ष्यामि समाहितमनाविलम्॥ २९॥ धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेव परायणम्। हस्त्यश्वरथपादातिसर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ ३०॥ पुत्रमित्रकलत्रादिसर्वसन्तोषसाधनम्। वेदशास्त्रदिविद्यानां निधानं परमं हि तत्॥ ३१॥ सङ्गीतशास्त्रसाहित्यसत्कवित्वविधायकम् ॥ ३२॥ सर्वसन्तोषकरणं सर्वदुःखनिवारणम्। शत्रुसंहारकं शीघ्रं यशः कीर्तिविवर्धनम्॥ ३३॥ अष्टसंख्या महारोगाः सन्निपातास्त्रयोदश। षण्णवत्यक्षिरोगाश्च विंशतिर्मेहरोगकाः ॥ ३४॥ अष्टादश तु कुष्ठानि गुल्मान्यष्टविधान्यपि। अशीतिर्वातरोगाश्च चत्वारिंशत्तु पैत्तिकाः॥ ३५॥

विंशतिः श्लेष्मरोगाश्च क्षयचातुर्थिकादयः। मन्त्रयन्त्रकुयोगाद्याः कल्पतन्त्रादिनिर्मिताः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मराक्षसवेताल-कूष्माण्डादिग्रहोद्भवाः। संगजा देशकालस्थास्तापत्रयसमुत्थिताः॥ ३७॥ नवग्रहसमुद्भूता महापातकसम्भवाः। सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति सहस्रावर्तनाद्भुवम्॥ ३८॥ अयुतावृत्तिमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत्। अयुतद्वितयावृत्त्या ह्यपमृत्युजयो भवेत्॥ ३९॥ अयुतत्रितयाच्चैव खेचरत्वं प्राजयते। सहस्रादयुतादर्वाक् सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ ४०॥ लक्षावृत्त्या कार्यसिद्धिर्भवत्येव न संशयः॥ ४१॥ विषवृक्षस्य मूलेषु तिष्ठन् वै दक्षिणामुखः। कुरुते मासमात्रेण वैरिणं विकलेन्द्रियम्॥ ४२॥ औदुम्बरतरोर्मूले वृद्धिकामेन जाप्यते। श्रीवृक्षमूले श्रीकामी तिंतिणी शान्तिकर्मणि॥ ४३॥ ओजस्कामोऽश्वत्थमूले स्त्रीकामैः सहकारके। ज्ञानार्थी तुलसीमूले गर्भगेहे सुतार्थिभिः॥ ४४॥ धनार्थिभिस्तु सुक्षेत्रे पशुकामैस्तु गोष्ठके। देवालये सर्वकामैस्तत्काले सर्वदर्शितम्॥ ४५॥ नाभिमात्रजले स्थित्वा भानुमालोक्य यो जपेत्। युद्धे वा शास्त्रवादे वा सहस्रेण जयो भवेत्॥ ४६॥ कण्ठमात्रे जले स्थित्वा यो रात्रौ कवचं पठेत्। ज्वरापस्मारकुष्ठदितापज्वरनिवारणम्॥ ४७॥ यत्र यत्स्यात्स्थिरं यद्यत्प्रसक्तं तन्निवर्त्तते। तेन तत्र हि जप्तव्यं ततः सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्॥ ४८॥ इत्युक्त्वाञ्च शिवो गौर्यै रहस्यं परमं शुभम्। यः पठेत् वज्रकवचं दत्तात्रेयसमो भवेत्॥ ४९॥ एवं शिवेन कथितं हिमवत्सुतायै, प्रोक्तं

दलादमुनयेऽत्रिसुतेन पूर्वम्। यः कोऽपि वज्रकवचं पठतीह लोके दत्तोपमश्चरति योगिवरश्चिरायुः॥ ५०॥
इति श्री दत्तात्रेयवज्रकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ माहेश्वरकवचम्॥

ॐ नमोभगवते रुद्राय॥ राजोवाच॥ अङ्गन्यासं यदुक्तंभो महेशाक्षर संयुतम्। विधानं कीदृशं तस्य कर्त्तव्यं केन हेतुना॥ १॥ तद्वदस्व महाभाग विस्तरेण ममाग्रतः॥ भृगुरुवाच॥ कवचं महेश्वरं राजन् देवैरपि सुदुर्लभम्॥ २॥ यः करोति स्वगात्रेषु पूतात्मा संभवेन्नरः॥ कृत्वा न्यासमिमं यस्तु संग्राम प्रविशेन्नरः॥ ३॥ न शरास्तोमरास्तस्य खड्गशक्ति परश्वधाः॥ प्रभवन्ति रिपोः क्वापि भवेच्छिवपराक्रमः॥ ४॥ व्याधिग्रस्तस्तु यः कश्चित्कारयेच्चैवमार्जनम्॥ एकादशकुशैः। साग्रैर्मुक्तोभवति नान्यथा॥ ५॥ न भूता न पिशाचाश्च कूष्माण्डा न विनायकाः॥ शिवस्मरणमात्रेण न विशन्ति कलेवरे॥ ६॥ ॐ नमः पञ्चवक्त्राय शशिसोमार्कनेत्रायभयार्त्तानामभयाय मम सर्वगात्ररक्षार्थे विनियोगः ॐ ह्रौं हां हं मन्त्रेणानेन वृषगोमयभस्मनाम् आमन्त्र्यललाटे तिलकमादाय पठेत्॥ त्राहि मां देव दुष्प्रेक्ष्य शत्रूणांभयवर्द्धन। ॐ स्वच्छन्दभैरवः प्राच्यामाग्नेय्यां— शिखिलोचनः॥ ७॥ भूतेशो दक्षिणे भागे नैऋत्यां भीमदर्शनः॥ वारुणे वृषकेतुश्च वायौ रक्षतु शङ्करः॥ ८॥

दिग्वासाः सौम्यतो नित्यमैशान्यां मदनान्तकः।। वामदेव ऊर्ध्वतो रक्षेदधोरक्षेत्त्रिलोचनः।। ९।। पुरारिः पुरतः पातु कपर्दी पातु पृष्ठतः।। विश्वेशो दक्षिणे भागे वामे कालीपतिः सदा।।१०।। माहेश्वरः शिरोभागे भवो भाले सदावतु।। भ्रुवोर्मध्ये महातेजास्त्रिनेत्रो नेत्रयो र्द्वयोः।। ११।। पिनाकी नासिका देशे कर्णयोर्गिरिजापतिः।। उग्रः कपोलतो रक्षेन्मुखदेशे महाभुजः।। १२।। जिह्वायामन्धकध्वंसी दन्तान्रक्षतु मृत्युजित्।। नीलकण्ठः सदाकण्ठे पृष्ठे कामाङ्गनाशनः।। १३।। त्रिपुरारिः स्कंधदेशे बाह्वोश्च चन्द्रशेखरः।। हस्तिचर्मधरो हस्ते नखाङ्गुलिषु शूलभृत्।। १४।। भवानीशः पातु हृदयं पातूदरकटीर्मृडः।। गुदे लिङ्गे च मेढ्रे च नाभौ च प्रमथाधिपः।। १५।। जङ्घोरुचरणे भीमः सर्वाङ्गेकेशवप्रियः।। रोमकूपे विरूपाक्षः शब्दे स्पर्शेच योगवित्।। १६।। रक्तमज्जावसामासशुक्रेव— सुगणार्चितः।। प्राणापानसमानेषूदानव्यानेषुधूर्ज्जटीः।। १७।। रक्षाहीनन्तुयत्स्थानं वर्ज्जितं कवचेन यत्।। तत्सर्वं रक्षमे देव व्याधिदुर्गज्वरादितः।। १८।। कार्य्यं कर्म्म त्विदं प्राज्ञैर्दीपं प्रज्वाल्य सर्पिषा।। निवेद्य शिखिनेत्राय वारयेच्चोत्तरं मुखम्।।१९।। ज्वरदाहपरिक्रान्तं तथान्यव्याधिसंयुतम्।। कुशैःसंमार्ज्य संमार्ज्यक्षिपेद्दीपशिखेज्वरम् ।। २०।। ऐकाहिकं द्व्याहिकं वा तृतीयकचतुर्थकम्।। वातपित्तकफोद्भूतं सन्निपातोग्रतेजसम् ।। २१।। अन्यद्दुः खदुराधर्षं कर्म्म चाभिचारिकम्।। धातुस्थं कफसंमिश्रं विषम कामसम्भवम्।।

२२।। भूताभिषङ्गसंगर्तं भूतचेष्टादिसंस्थितम्।। शिवाज्ञां घोरमन्त्रेण पूर्ववृत्तं स्वयं स्मर।। २३।। जहि देहं मनुष्यस्य दीपं गच्छ महाज्वर।। कृत्वा तु कवचं दिव्यं सर्वव्याधिभयार्दनम्।। २४।। न बाधन्ते व्याधयस्तं बालग्रहभयाश्च ये।। लूताविस्फोटकं घोरशिरोर्त्तिच्छर्द्दिविग्रहम्।। २५।। कामलाक्षयकासञ्च गुल्माश्मरिभगन्दरान्।। शूलोन्मादञ्चहृद्रोगं यकृतं पाण्डुविद्रधिम्।। २६।। अतिसारादयोरोगा डाकिनीग्रहपीडिताम्।। पामाविचर्चिकाद्दुकुष्ठव्याधिविषार्दनम्।। २७।। स्मरणान्नाशयत्याशु कवचं शूलपाणिनः।। यस्तु स्मरति नित्यं वै यस्तु धारयते नरः।। २८।। समुक्तः सर्वपापेभ्यो वसेच्छिवपुरे चिरम्।। सख्यव्रतस्य दानस्य यज्ञस्यास्तीव शाश्वतः।। २९।। न संख्या विद्यते शम्भोः सर्वकामफलप्रदम्।। ३०।। श्रोतव्यं सततं भक्त्या कवचं सर्वकामिकम्।। लिखितं तिष्ठते यस्य गृहे सम्यगनुत्तमम्।। ३१।। न तत्र कलहोद्वेगं नाकालमरणंभवेत्।। नाल्पप्रजाः स्त्रियस्तत्र न दौर्भाग्यसमाश्रिताः।। ३२।। तस्मान्माहेश्वरं नाम कवचं सुरगणार्चितम्।। श्रोतव्यं पठितव्यञ्च मन्तव्यंभावुकप्रदम्।। ३३।। माहेश्वरस्य कवचं सर्वव्याधिनिषूदनम्।। यः पठेच्चेन्नरो नित्यं सव्रजेच्छाङ्करं पुरम् ।। ३४।। इति श्रीमाहेश्वरकवचम् सम्पूर्णम्।।

।। अथ बगलामुखीकवचम्।।

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर। इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो।। वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाशुभंविनाशनम्। शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशनम्।। श्रीभैरव उवाच।। कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवी प्राणवल्लभे।। पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलौक्ये विजयी भवेत्।। ॐ अस्य श्रीबगलामुखीकवचस्य नारदऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीबगलामुखी देवता लं बीजं ऐं कीलकं पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।। शिरो मे बगला पातु हृदयैकाक्षरी परा। ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी।। गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी। वैरिजिह्वांधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी।। उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा। परात्परपरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी।। हस्तौ चैव तथा पातु पार्वतीपरिपातु मे। विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे।। पीताम्बरधरा पातु सर्वांगं शिवनर्तकी। श्रीविद्यासमयो पातु मातंगीदुरिताशिवा।। पातुपुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम। पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा।। संदेहि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम्। नैव देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम्।। पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वांछितं लभेत्। इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।। पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्यसादराः। वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा।। महाभये विपत्तौ च पठेद्वापाठयेत्तु यः। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्भक्तियुक्तस्य पार्वती।। इति श्रीरुद्रयामले

बगलामुखीकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ रामरक्षास्तोत्रम्॥

श्रीगणेशाय नमः॥ अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमंत्रस्य बुधकौशिक ऋषिः। श्रीसीतारामचन्द्रो देवता॥ अनुष्टुप् छंदः। सीता शक्तिः। श्रीमद्धनुमान् कीलकम्। श्रीरामचंद्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः॥ अथ ध्यानम्। ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम्। वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं नानाऽलंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥ १॥ इति ध्यानम्॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १॥ ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्। जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमंडितम्॥ २॥ सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरांतकम्। स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥ ३॥ रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्। शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥ ४॥ कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती। घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥ ५॥ जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवंदितः। स्कंधौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥ ६॥ करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्। मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जांबवदाश्रयः॥ ७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः। ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥ ८॥ जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः। पादौ विभीषण श्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥ ९॥ एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्। स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥ १०॥ पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः। न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥ ११॥ रामेति रामभद्रेति रामचद्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति॥ १२॥ जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामानाम्नाऽभिरक्षितम्। यः कंठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥ १३॥ वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्॥ अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥ १४॥ आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः। तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १५॥ आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥ १६॥ तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ। पुंडरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनांबरौ॥ १७॥ फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १८॥ शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्। रक्षः कुलनिहंतारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥ १९॥ आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ। रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥ २०॥ सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा। गच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु

सलक्ष्मणः।। २१।। रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली। काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ।। २२।। वेदांतवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः। जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः।। २३।। इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयाऽन्वितः। अश्वमेधादिकं पुण्यं स प्राप्नोति न संशयः।। २४।। रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्। स्तुवन्तो नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः।। २५।। रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्। राजेन्द्रं सत्यसंधं दरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं वंदे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्।। २६।। रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।। २७।। श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम। श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम।। २८।। श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि, श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि। श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचंद्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।। २९।। माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः। सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।। ३०।। दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तं वंदे रघुनंदनम्।। ३१।। लोकभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरूपं कारुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।। ३२।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३॥ कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्। आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ ३४॥ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ ३५॥ भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्। तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥ ३६॥ रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।

॥ अथ श्री गणेशकवचम्॥

श्रीगणेशायः नमः॥ गौर्युवाच॥ एषोऽतिचपलो दैत्यान्बाल्येऽपि नाशयत्यहो। अग्रे किं कर्म कर्तेति न जाने मुनिसत्तम॥ १॥ दैत्या नानाविधा दुष्टाः साधुदेवद्रुहः खलाः। अतोऽस्य कंठे किंचित्त्वं रक्षार्थं बद्धुमर्हसि॥ २॥ मुनिरुवाच॥ ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममु दिग्बाहुमाद्ये युगे त्रेताया तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदम्। द्वापरके तु गजाननं युगभुजं रक्तांगरागं विभुं तुर्ये तु द्विभुजं सितांगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा॥ ३॥ विनायकः शिखां पातु परमात्मा परात्परः। अतिसुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः॥ ४॥ ललाटं कश्यपः पातु भ्रूयुगं तु महोदरः। नयने भालचंद्रस्तु गजास्यस्त्वोष्ठपल्लवौ॥ ५॥ जिह्वां पातु

गणक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः। वाचं विनायकः पातु दंतान् रक्षतु दुर्मुखः॥ ६॥ श्रवणौ पाशपाणिस्तु नासिकां चिंतितार्थदः। गणेशस्तु मुखं कंठं पातु देवो गणंजयः॥ ७॥ स्कंधौ पातु गजस्कंधः स्तनौ विघ्नविनाशनः। हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान्॥ ८॥ धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहरः शुभः। लिंग गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः॥ ९॥ गणक्रीडो जानुजंघे ऊरू मंगलमूर्तिमान्। एकदंतो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदाऽवतु॥ १०॥ क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः। अङ्गुलीश्च नखान्पातु पद्महस्तोऽरिनाशनः॥ ११॥ सर्वांगाणि मयूरेशो विश्ववव्यापी सदाऽवतु। अनुक्तमपि यत्स्थानं धूम्रकेतुः सदाऽवतु॥ १२॥ आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु। प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेयां सिद्धिदायकः॥ १३॥ दक्षिणस्यामुमापुत्रो नैर्ऋत्यां तु गणेश्वरः। प्रतीच्यां विघ्नहर्ताऽव्याद्वायव्यां गजकर्णकः॥ १४॥ कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः। दिवाऽव्यादेकदंतस्तु रात्रौ संध्यासु विघ्नहृत्॥ १५॥ राक्षसासुरवेतालग्रहभूतपिशाचतः। पाशांकुशधरः पातु रजःसत्त्वतमःस्मृतीः॥ १६॥ ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च लज्जां कीर्तिं तथा कुलम्। वपुर्धनं च धान्यं च गृहदारान्सुतान् सखीन्॥ १७॥ सर्वायुधधरः क्षेत्रं मयूरेशोऽवतात्सदा। कपिलोऽजाविकं पातु गजाश्वान्विकटोऽवतु॥ १८॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं यः कंठे धारयेत्सुधीः। न भयं जायते तस्य यक्षरक्षः पिशाचतः॥ १९॥

त्रिसंध्यं जपते यस्तु वज्रसारतनुर्भवेत्। यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत्॥ २०॥ युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्नुयाद् ध्रुवम्। मारणोच्चाटनाकर्षस्तंभमोहनकर्मणि॥ २१॥ सप्तवारं जपेदेतद्दिनानामेकविंशतिम्। तत्तत्फलमवाप्नोति साधको नात्र संशयः॥ २२॥ एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि यः। कारागृहगतं सद्यो राजा वध्यं च मोचयेत्॥ २३॥ राजदर्शनवेलायां पठेदेतत्त्रिवारतः। स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिञ्च सभां जयेत्॥ २४॥ इदं गणेशकवचं काश्यपेन समीरितम्। मुद्गलाय च तेनाथ मांडव्याय महर्षये ॥ २५॥ मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम्। न देयं भक्तिहीनाय देयं श्रद्धावते शुभम्॥ २६॥ अनेनास्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत्क्वचित्। राक्षसासुरवेतालदैत्यदानवसंभवा॥ २७॥ इति गणेशकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ सूर्यकवचम्॥

श्रीसूर्य उवाच। सांब सांब महाबाहो शृणु मे कवचं शुभम्। त्रैलौक्यमंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१॥ यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक् फलं प्राप्नोति निश्चितम्। यद् धृत्वा च महादेवो गणानामधिपोऽभवत्॥ २॥ पठनाद्धारणाद्विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा। एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः॥ ३॥ कवचस्यास्य ऋषिर्ब्रह्मा छंदोऽनुष्टुबुदाहृतः। श्रीसूर्यो देवता चात्र सर्वदेवनमस्कृतः॥ ४॥ यश आरोग्यमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।

प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम्।। ५।। सूर्योऽव्यान्नयनद्वंद्वमादित्यः कर्णयुग्मकम्। अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः।। ६।। ह्रीं बीजं मे मुखं पातु हृदयं भुवनेश्वरी। चन्द्रबिंबं विंशदाद्यं पातु मे गुह्यदेशकम्।। ७।। अक्षरोऽसौ महामन्त्रः सर्वतन्त्रेषु गोपितः। शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षीबिंदुभूषितः ।। ८।। एकाक्षरो महामन्त्रः श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः। गुह्याद्गुह्यतरो मन्त्रो वांछाचिंतामणिः स्मृतः।। ९।। शीर्षादिपादपर्यंतं सदा पातु मनूत्तमः। इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।। १०।। श्रीप्रदं कांतिदं नित्यं धनारोग्यविवर्धनम्। कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम्।। ११।। त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान् भवेत्। बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते।।१२।। तत्तत्सर्वं भवेत्तस्य कवचस्य च धारणात्। भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः ।।१३।। ब्रह्मराक्षसवेताला न द्रष्टुमपि तं क्षमाः। दूरादेव पालायन्ते तस्य संकीर्तनादपि ।।१४।। भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरुकुंकुमैः। रविवारे च संक्रांत्यां सप्तम्यां च विशेषतः।। १५।। धारयेत् साधकश्रेष्ठः श्रीसूर्यस्य प्रियो भवेत्। त्रिलौहमध्यगं कृत्वा धारयेद्दक्षिणे करे।। १६।। शिखायामथवा कंठे सोऽपि सूर्यो न संशयः। इति ते कथितं सांब त्रैलोक्यमंगलाभिधम् ।। १७ ।। कवचं दुर्लभं लोके तवस्नेहात् प्रकाशितम्। अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम्।। १८।। सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटि शतैरपि

॥ १९॥ इति सूर्यकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ राधाकवचम्॥

पार्वत्युवाच॥ कैलासवासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक। राधिकाकवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो ॥ १॥ यद्यस्ति करुणा नाथ त्राहि मां दुःखतो भयात्। त्वमेव शरणं नाथ शूलपाणे पिनाकधृक्॥ २॥ शिव उवाच॥ शृणुष्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्वसूचितम्॥ सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वहत्याहरं परम्॥ ३॥ हरिभक्तिप्रदं साक्षाद् भुक्तिमुक्तिप्रसाधनम्। त्रैलौक्याकर्षणं देवि हरिसान्निध्यकारकम्॥ ४॥ सर्वत्र जयदं देवि सर्वशत्रुभयावहम्॥ सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्तिहरं परम्॥ ५॥ चतुर्धा मुक्तिजनकं सदानन्दकरं परम्। राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फलदायकम्॥ ६॥ इदं कवचमज्ञात्वा राधामंत्रं च यो जपेत्। स नाप्नोति फलं तस्य विघ्नास्तस्य पदे पदे॥ ७॥ ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप्छंदश्च कीर्तितम्। राधाऽस्य देवता प्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम् ॥ ८॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः। श्रीराधा मे शिरः पातु ललाटं राधिका तथा॥ ९॥ श्रीमती नेत्रयुगलं कर्णौ गोपेन्द्रनंदिनी। हरिप्रिया नासिकां च भ्रूयुगं शशिशोभना॥ १०॥ ओष्ठं पातु कृपादेवी अधरं गोपिका तथा। वृषभानुसुता दन्तांश्चिबुकं गोपनंदिनी॥ ११॥ चंद्रावली पातु गण्डं जिह्वां

कृष्णप्रिया तथा। कण्ठं पातु हरिप्राणा हृदयं विजया तथा।। १२।। बाहू द्वौ चंद्रवदना उदरं सुबलस्वसा। कोटियोगान्विता पातु पादौ सौभद्रिका तथा।। १३।। नखाश्चंद्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा। नखान् विधुमुखी देवी गोपी पादतलं तथा।। १४।। शुभप्रदा पातु पृष्ठं कुक्षी श्रीकांतवल्लभा। जानुदेशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः।। १५।। वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी। पूर्वां दिशं कृष्णरता कृष्णप्राणा च पश्चिमाम्।। १६।। उत्तरां हरिता पातु दक्षिणां वृषभानुजा। चंद्रावली नैशमेव दिवा क्ष्वेडितमेखला।। १७।। सौभाग्यदा मध्यदिने सायाह्ने कामरूपिणी। रौद्री प्रातः पातु मां हि गोपिनी राजनीक्षये।। १८।। हेतुदा संगवे पातु केतुमाला दिवार्धकम्। शेषाऽपराह्णसमये शमिता सर्वसंधिषु।। १९।। योगिनी भोगसमये रतौ रतिप्रदा सदा। कामेशी कौतुके नित्यं योगे रत्नावली मम।। २०।। सर्वदा सर्वकार्येषु राधिका कृष्णमानसा। इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।। २१।। सर्वरक्षाकरं नाम महारक्षाकरं परम्। प्रातर्मध्याह्नसमये सायाह्ने प्रपठेद्यदि।। २२।। सर्वार्थसिद्धिस्तस्य स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते। राजद्वारे सभायां च संग्रामे शत्रुसंकटे।।२३।। प्राणार्थनाशसमये यः पठेत्प्रयतो नरः। तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि न भयं विद्यते क्वचित्।। २४।। आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः। गंगास्नानाद्धरेर्नामग्रहणाद्यत्फलं लभेत्।। २५।। तत्फलं तस्य भवति यः

पठेत्प्रयतः शुचिः। हरिद्रारोचनाचन्द्रमण्डितं हरिचन्दनम्॥ २६॥ कृत्वा लिखित्वा भूर्जे च धारयेन्मस्तके भुजे। कंठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशयः॥ २७॥ कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टि स्थितिं हरिः। संहारं नियतं चाहं करोमि कुरुते तथा॥ २८॥ वैष्णवाय विशुद्धाय विरागगुणशालिने दद्यात्कवचमव्यग्रमन्यथा नाशमाप्नुयात्॥ २९॥ ॥ इति राधाकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ श्री हयग्रीवकवचम्॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः॥ पार्वत्युवाच। देवदेव महादेव करुणाकर शंकर। त्वया प्रसादशीलेन कथितानि रमापतेः॥ १॥ बहूनामवताराणां बहूनि कवचानि च। इदानीं श्रोतुमिच्छामि हयास्यकवचं प्रभो ॥ २॥ शंकर उवाच॥ देवि प्रियंवदे तुभ्यं रहस्यमपि तत्प्रिये। कलशांबुधिपीयूषहयास्यकवचं वदे॥ ३॥ महाकल्पांतयामिन्याश्चरमप्रहरे स्वयम्। लीलया हयवक्त्रोत्थं रूपमाधाय योऽरमत्॥ ४॥ तेन यद्धयशीर्षेण त्रयीरक्षणकांक्षया। वेदोपदेशः प्राक्काले उपदिष्टो विरिंचये॥ ५॥ पुत्रवान्स ततो मह्यं विरिंचिरुपदिष्टवान्। कवचं हयशीर्षस्य तत्तुभ्यं कथायाम्यहम्॥ ६॥ हयास्यकवचस्यास्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः। छंदोऽनुष्टुप् तथा देवो हयग्रीव उदाहृतः॥ ७॥ ह्रौं तु बीजं समाख्यातं ह्रीं शक्तिः समुदाहृता। ॐ कीलकं समाख्यातमुच्चैरुत्

कीलकं तथा।। ८।। लक्ष्मीकरांभोरुहहेमकुंभपीयूषपूरैरभिषिक्तशीर्षम्।। व्याख्यानमालांबुजपुस्तकानि हस्तैर्वहन्तं हयतुंडमीडे।। ९।। सुधासिक्तः शिरः पातु भालं पातु शशिप्रभः। दृशौ रक्षतु दैत्यारिर्नासां वोद्धृतवारिधिः ।। १०।। श्रोत्रं पातु स्थिरश्रोत्रः कपोलौ करुणानिधिः। मुखं पातु गिरां स्वामी जिह्वां पातु सुरारिहृत्।। ११।। हनुं हनुमता सेव्यः कण्ठं वैकुण्ठनायकः। ग्रीवा पातु हयग्रीवो हृदयं कमलालयः।। १२।। ऊर्ध्वं च विश्वभृत्पातु नाभिं पंकजलोचनः। मेढ्रं प्रजापतिः पातु ऊरू पातु गदाधरः।। १३।। जानुनी विश्वहृत् पातु जंघे तु जगतां पतिः। गुल्फौ पातु हयध्वंसी पादौ विज्ञानवारिधिः।। १४।। प्राच्यां रक्षतु वागीशो दक्षिणायां वरायुधः। प्रतीच्यां विश्वभृत् पातु कौबेर्य्यां शिववंदितः।। १५।। ऊर्ध्वं पातु हरिः साक्षादधः पातु गुणाकरः। अन्तरिक्षे हरिः पातु विश्वतः पातु विश्वधृक्।। १६।। पुराणं कवचं धीमान् संनह्योन्निजविग्रहे। दुर्गवाक् शरव्यूहैः स कदाचिन्न बाध्यते।। १७।। जपेद्य एतत्कवचं त्रिसंध्यं भक्तिभावतः। मूढोऽपि गीष्पतिस्पर्द्धी जायते नात्र संशयः।। १८।। इति हयग्रीवकवचम् सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्री तुलसीकवचम्।।

अस्य श्रीतुलसीकवचस्तोत्रमंत्रस्य श्रीमहादेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीतुलसी देवता। मम

ईप्सितकामनासिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।। तुलसी श्रीमहादेवि नमः पंकजधारिणि। शिरो मे तुलसी पातु भालं पातु यशस्विनी।। १।। दृशौ मे पद्मनयना श्रीसखी श्रवणे मम। घ्राणं पातु सुगन्धा मे, मुखं च ममा जिह्वां मे पातुशुभदा, कण्ठं विद्यामयी मम। स्कन्धौ कहलारिणी पातु हृदयं विष्णुवल्लभा।। ३।। पुण्यदा मे पातु मध्यं नाभिं सौभाग्यदायिनी। कटिं कुण्डलिनी पातु ऊरू नारदवंदिता।। ४।। जननी जानुनी पातु जंघे सकलवंदिता। नारायणप्रिया पादौ सर्वाङ्गं सर्वरक्षिणी।। ५।। संकटे विषमे दुर्गे भये वादे महाहवे। नित्यं हि संध्ययोः पातु तुलसी सर्वतः सदा।। ६।। इतीदं परमं गुह्यं तुलस्याः कवचामृतम्। मर्त्यानाममृतार्थाय भीतानामभयाय च।। ७।। मोक्षाय च मुमुक्षूणां ध्यायिनां ध्यानयोगकृत्। वशाय वश्यकामानां विद्यायै वेदवादिनाम्।। ८।। द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पापशान्तये।। ९।। अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय स्वर्गमिच्छताम्। पशव्यं पशुकामानां पुत्रदं पुत्रकांक्षिणाम्।। १०।। राज्याय भ्रष्टराज्यानामशान्तानां च शान्तये। भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि।। ११।। जाप्यं त्रिवर्गसिद्ध्यर्थं गृहस्थेन विशेषतः। उद्यन्तं चण्डकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलिः।। १२।। तुलसीकानने तिष्ठन्नासीनो वा जपेदिदम्। सर्वान् कामानवाप्नोति तथैव मम सन्निधिम् ।। १३।। मम प्रियकरं नित्यं हरिभक्तिविवर्धनम्। या स्यान्मृतप्रजा नारी तस्या अङ्गं प्रमार्जयेत्।। १४।। सा

पुत्रं लभते दीर्घजीविनं चाप्यरोगिणम्। वंध्याया मार्जयेदङ्गं कुशैर्मन्त्रेण साधकः।। १५।। साऽपि संवत्सरादेव गर्भं धत्ते मनोहरम्। अश्वत्थे राजवश्यार्थी जपेदग्नेः सुरूपभाक्।। १६।। पलाशमूले विद्यार्थी तेजोऽर्थ्यभिमुखो रवेः। कन्यार्थी चंडिकागेहे शत्रुहत्यै गृहे मम।। १७।। श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने स्त्रीवशा भवेत्। किमत्र बहुनोक्तेन शृणु सैन्येश तत्त्वतः।। १८।। यं यं काममभिध्यायेत्तं तं प्राप्नोत्यसंशयम्। मम गेहगतस्त्वं तु तारकस्य वधेच्छया।। १९।। जपन् स्तोत्रं च कवचं तुलसीगतमानसः। मण्डलात्तारकं हन्ता भविष्यसि न संशयः।। २०।। इति श्री तुलसीकवचं संपूर्णम्।।

।। अथ मृतसंजीवनकवचम्।।

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युंजयेश्वरम्। मृतसंजीवनं नाम्ना कवचं प्रजपेत्सदा।। १।। सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम्। महादेवस्य कवचं मृतसंजीवनामकम्।। २।। समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम्। श्रुत्वैतद्दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा।। ३।। वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः। मृत्युंजयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा।। ४।। दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः। सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा।। ५।। अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः। यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु।। ६।।

खड्गभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः। रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु॥ ७॥ पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः। वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदावतु॥ ८॥ गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः। वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा॥ ९॥ शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः। सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः॥ १०॥ शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः। ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः॥ ११॥ ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु। शिरो मे शंकरः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः॥ १२॥ भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु। भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः॥ १३॥ नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः। जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान्मे गिरिशोऽवतु॥ १४॥ मृत्यंजयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः। पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम॥ १५॥ पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः। नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः॥ १६॥ कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः॥ गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः॥ १७॥ जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका। पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः॥ १८॥ गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम। मृत्युंजयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः॥ १९॥ सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः। एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्

॥ २०॥ मृतसंजीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम्। सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्॥ २१॥ यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत्सुसमाहितः। स कालमृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते॥ २२॥ हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं संजीवयत्यसौ। आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन॥ २३॥ कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा। अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः॥ २४॥ युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्। युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते॥ २५॥ न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै। विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा॥ २६॥ प्रतरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम्। अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च॥ २७॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः। अजरामरणो भूत्वा सदा षोडषवार्षिकः॥ २८॥ विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्। तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्॥ २९॥ मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपिदुर्लभम्॥ ३०॥ ॥ इति मृतसंजीवकवचं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ श्री हनुमदघोरास्त्रम्॥

श्री हनुमते नमः॥ ॐ अस्य श्री अनन्तघोरप्रलयज्वालग्निरौद्रस्य श्रीवीरहनुमद् असाध्य-साधनाघोरास्त्रमूलमन्त्रस्य ईश्वरऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीरामलक्ष्मणौ देवता नानाछन्दांसि सौ बीजं अञ्जनीसूनुरिति

शक्तिः।। वायुपुत्र इति कीलकम्।। श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे स्वर्गलोकमृत्युलोकपाताललोकवश्यार्थं नवखण्डपृथ्वीवश्यार्थं मम ऋद्धिसिद्धितत्त्वपदसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।। ॐ नमो भगवते दावानल कालाग्निहनुमते ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ नमोभगवते श्रीप्रतापहनुमते महावीराय ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते ॐ महः अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते ॐ जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ नमो भगवते प्रलयमारुतहनुमते ॐ तपः ॐ सत्यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। ॐ नमो भगवते दावानलकालग्निहनुमते ॐ भूः हृदयाय नमः।। ॐ नमो भगवते श्रीप्रतापहनुमते महावीराय भुवः शिरसे स्वाहा।। ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते ॐ स्वः शिखायै वषट्।। ॐ नमोभगवते चिन्तामणिहनुमते ॐ महःकवचाय हुम्।। ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते ॐ जनः नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ नमो भगवते प्रलयमारुतहनुमते ॐ तपः ॐ सत्यं अस्त्राय फट्।। ॐ नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते तेजोवितानधवलीकृतवज्रदेहवज्रकाय वज्रतुण्ड वज्रनख वज्रमुख बाहुवज्र रोमवज्र नेत्रवज्र दन्तवज्र करकमलभास्कराय भीमकरपिंगलाक्ष उद्यत्प्रलयकालरौद्रवीरभद्रावतार शरभशाल्वभैरवदोर्दण्ड लङ्कापुरीदहन उदधिलङ्घन दशग्रीवशिरः कृतान्त

सीताश्वासन वायुसुत ईश्वरपुत्र अञ्जनीगर्भसंभूत उदयभास्कर बिम्बानलग्रासक देव दानवऋषिमुनिवन्द्य शक्तिआयुधपाशपरशुशूलपाशुपतास्त्र ब्रह्मास्त्र वैष्णवास्त्र नारायणास्त्र कालशक्ति कालदण्ड कालपाश अघोरास्त्रनिवारणाय पाशुपतास्त्रनिवारणाय नारायणास्त्रवैष्णवास्त्रनिवारणाय नारायणास्त्रमृडाय सर्वशक्तिमयात्मकाय परविद्यानिवारणाय अग्निदीप्ताय अथर्वणवेदसिद्धि स्थिरकाल निराहार वायुवेग मनोवेग श्रीरामतारक परब्रह्मविश्वरूपनिरञ्जन लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर जलस्थलाग्निः मम मनो भेदि२ सर्वशत्रुन् छेदि२ मम वैरीन् खादय२ मां संजीवय ? पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसंधिकरण निष्कलंकित कुमार ब्रह्मचारिन् दिगम्बर सर्वपापग्रह कुमारग्रह सर्वग्रहाञ्छेदय २ भेदय२ भिन्दि २ खादय२ कण्टकां स्त्रोटय २ मारय २ शोषय २ ज्वालय २ हयदेवदैत्यान्नाशय २ अतिशोषय २ सर्वत्रमां रक्ष २ शाकिनी डाकिनी विध्वंसय २ हनुमते मां रक्ष २ आं-ऊँ ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा।। ॐ नमो भगवते श्रीप्रतापहनुमते महावीराय सर्वदुःखविनाशनाय ग्रहमण्डल भूतमण्डल प्रेतमण्डल पिशाचमण्डल उच्चाटनाय अन्तर्भावादिकज्वर माहेश्वरज्वर विष्णुज्वर ब्रह्मज्वर विषमज्वर शीतज्वर वातज्वर एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं अर्द्धमासिकं षाण्मासिकं सां वत्सरिकवातपित्तश्लेष्मिकसन्निपातिक अन्तरगुप्तापस्मारिकं भ्रामिकं ज्वरम् छेदय २ भेदय २ ह्रीं फट्

स्वाहा। ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते अङ्गशूल अक्षिशूल गुदशूल कटिशूल जङ्घशूल पादशूल पित्तशूल वायुशूल स्तनशूलादि सर्वशूलं निर्मूलय २ दानवदैत्यकमिनी वेतालब्रह्मराक्षस कोलहल नागपाश अनन्तवासुकीतक्षक कर्कोटक कालीय पद्मक कुमुद ज्वल२ नागपाश महानागान् कालपाशविषनिर्विषं कुरु २ स्वाहा।। ॐ पातालगरुडहनुमते भैरवाय नमो गजसिंहेन्द्रारि पाशबन्धं छेदय २ प्रलयमारुतकालाग्निहनुमते शृंखलाबन्धं मोक्षय २ सर्वबालग्रहं छेदय २ सर्व कार्याणि साधय २मारणमोहनघृणिं मर्दय २ मारय२ वानराय मम प्रसन्न श्रीरामरक्ष सिंहभैरवस्वरूप ॐ द्रां द्रीं क्ष्रौं भैं घ्रां श्रीं क्लीं क्लीं क्रां क्रां क्रौं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं खख ४ जय ४ खें खें हुं फट् स्वाहा।। ४।। ॐ नमो भगवते कालाग्निरुद्रहनुमते भ्रामय २ वद२ कुरु। जय२ हस२ दुष्टग्रहं प्रज्वालय२ मर्दय२ त्रासय२ शमय२ अस्तोभत्रिशूलडमरुकालमृत्युपाशकपाल—खट्वांगधराय अभयशाश्वताय आवर्त्ताय आद्यन्तरभूषणाय परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रशतसहस्रकोटिपुञ्जं भेदय२ अग्निं बन्धय२ सर्वग्रहं बन्धय२ सर्वविषं बन्धय२ अनन्ताग्निदंष्ट्रनागानां द्वादशकुलवृश्चिकानामेकादशकुलभूतान् हन२ वज्रत उत्तुङ्गानुच्चाटय२ मारण—मोहन—वशीकरणस्तंभनजृंभणाकर्षणोच्चाटन मीलनविद्वेषणयुद्धतर्कान्मम वैरिणं बन्धय २ ॐ नमो भगवते अंकुमारिपादत्रिहारबाणोग्रमूर्तये ग्रामवासिनेऽतिपूर्वशक्ताय सर्वायुधानि

अस्य क्षयाय धारय२ लं लं लं घ्रां निःस्वाहा।। ५।। ॐ नमो भगवते भद्रजातिनीलकंठहनुमते ॐ ठुं ठुं ठुं ठं ठं ठं लं लं लं देवदत्तदिगंबर अष्टमहाभैरवअष्टाङ्गधराय नवनाटकभैरवनवाङ्गधराय अष्टमहाशक्ति अष्टाङ्गधराय नव ब्रह्ममयाय दशविष्णुरूपाय एकादशरुद्रावताराय द्वादशार्कतेजसे त्रयोदशसोममुखाय वीरहनुमते स्तम्भनमोहनवशीकरणत्रिवश्याय नमः। राजमुखबन्धनाय बलीमुखबन्धनमकरमुखबंधनशत्रुमुख जिह्वाव्या—घ्रसर्पवृश्चिक अग्निज्वालाविषनिगडान् सर्वजनवैरिमुखन्धन व्याघ्रमुख बन्धन वायुवीरहनुमन् ईश्वरावतार वायुनन्दन अंजनीसुत बन्धु बन्धु सत्यबन्धु अं हां हीं हुं अस्य ह्रीं ह्रां त्रीं यां भ्रें भ्रां हट हट खट सर्वखट—विश्वखट—शत्रुखट—वश्यखट सर्वजनादृश्यखट। लं लां श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं शत्रुमनः स्तम्भय२ भेदय२ मे विजय २ यं ह्रीं वं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हीं सर्वजनसार ह्रीं ह्रीं खट विश्वखट शत्रुखटसर्वविषमंत्रार्थसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।। ६।। रामचन्द्रं महादेवं वीरभद्रस्तवं कृतम्।। ईप्सितार्थं लभेत्सद्यस्त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।। ७।। हनुमतःप्रसादेन सर्वत्र विजयी भवेत्। लक्षमावर्त्तयेद्यस्तु प्रत्यक्षो जायते ध्रुवम्।। ८।। इति श्री हनुमदघोरास्त्रनिरुपम्।।

।। अथ श्री हनुमत् लोललांगूल शत्रुञ्जयस्तोत्रम्।।

अस्य श्रीहनुमल्लाङ्गूलशत्रुंजयस्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वरऋषिरनुष्टुप्छन्दः।। श्रीहनुमान् रुद्रो देवता। हं बीजं स्वाहा शक्तिः।। हा हा हा इति कीलकम्।। मम सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।। ओं हां हीं हूं हैं हौं हः। मम सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।। ओं हां हीं हूं हैं हौं हः। ॐ हां आञ्जनेयाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ हीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ हूं अक्षयकुमारविध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ हैं लंकाविदाहकाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हौं रुद्रावताराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ हः सकलशत्रुसंहारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। इति करन्यासः।। ॐ हां आञ्जनेयाय हृदयाय नमः।। ॐ हीं रामदूताय शिरसे स्वाहा।। ॐ हूं अक्षयकुमारविध्वंसकाय शिखायै वषट्।। ॐ हैं लंकाविदाहकाय कवचाय हुम्।। ॐ हौं रुद्रावताराय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ हः सकलशत्रुसंहारणाय अस्त्राय फट्। इति हृदयादिन्यासः।। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ह्रैं स्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें हस्त्रों नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमण पराक्रम श्रीरामभक्त मम परस्य च सर्वशत्रून् चतुर्वर्णसम्भवान् पुंस्त्रीनपुंसकान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थान् समीपस्थान् नानानामधेयान् नानासंकरजातीयान्

कलत्रपुत्रभृत्यबन्धुसुतसमेतान् प्रभुशक्तिसहितान् धनधान्यादिसंपत्तियुतान् राज्ञो राजसेवकान् मन्त्रिसचिवसखीनात्यन्तिकान् क्षणेन त्वरया एतद्दिनावधिनानोपायैर्मारय२ शस्त्रैश्छेदय२ घातय२ भ्रामय२ भयातुरान् विसंज्ञान् सद्यः कुरु२ भस्मीभूतान् उद्धूलय२ भक्त जनवत्सलसीताशोकापहारक सर्वत्र मामेनं च रक्ष २ हा हा हा हुं हुं हुं भूतसंघैः सह भक्षय भक्षय क्रुद्धचेतसा नखैर्विदारय २ देशादस्मादुच्चाटय२ पिशाचवद्भ्रंशय २ घे घे घे हुं हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्रीहनुमते महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवारणाय भक्तजनमनःसंकल्पानाकल्पद्रुमाय दुष्टजनमनोरथस्तम्भनाय प्रभञ्जनप्राणप्रियाय॥ अथ ध्यानम्॥ श्रीमन्तं हनुमन्तमात्तरिपुभिद्भूभृत्तनुभ्राजितं वल्गद्बालधि बद्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम्॥ रोषारक्तपिशंगनेत्रनलिनं भ्रूभंगसंगस्फुरत्प्रोद्यच्चंडमयूखमंडलमुखं दुःखापहं दुःखिनाम्॥ १॥ कौपीनं कटिसूत्रमौञ्ज्यजिनयुग्देहं विदेहात्मजाप्राणाधीशपदारविन्दनिहतस्वान्तं कृतान्तं द्विषाम्॥ ध्यात्वैवं समरांगणस्थितमथानीय स्वहृत्पंकजे संपूज्याखिलपूजनोक्तविधिना संप्रार्थयेत्प्रार्थितम्॥ २॥ हनूमानञ्जनीसूनो महाबल पराक्रम॥ लोललांगूलपातेन ममारातिं निपातय॥ ३॥ अक्षक्षपणपिङ्गाक्ष क्षितिजांशुकक्षयंकर॥ लोल० ॥ ४॥ मर्कटाधिपमार्तण्डमण्डलग्रासकारक॥ लोल०॥ ५॥ रुद्रावतारसंसारदुः खभारापहारक॥ लो

ल०॥ ६॥ श्रीरामचारणाम्भोजमधुपायितमानस॥ लोल०॥ ७॥ बालिकालरदाक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन प्रभो॥ लोल०॥ ८॥ सीताविरहवारीशमग्निसीतेश तारक॥ लोल०॥ ९॥ रक्षोराजप्रतापाग्निदह्यमानजगद्घन॥ लोल०॥१०॥ ग्रस्ताशेषजगत्स्वास्थ्यराक्षसाम्भोधिमन्दर॥ लोल०॥१२॥ जगन्मनोदुरुल्लङ्घ्य पारावारविलङ्घन॥ लोल०॥ १७॥ वैदेहीविरहाक्रान्त रामरोषैकविग्रह॥ लोल०॥ १८। वज्राङ्गनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुंठन ॥ लोल० १९॥ अखर्वगर्वगन्धर्वपर्वतोद्भेदनेश्वर॥ लोल०॥ २०॥ लक्ष्मणप्राणसंत्राणत्रातस्तीक्ष्णकरान्वय ॥ लोल०॥ २१॥ रामादिविप्रयोगार्तभरताद्यार्तिनाशन॥ लोल०॥ २२॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेपसमुत्क्षिप्तारिवैभव ॥ लोल०॥ २३॥ सीताशीर्वादसंपन्नसमस्ताभयवाञ्छित॥ लोललांगूलापातेन ममारतिं निपातय॥ २४॥ इत्येवम श्वत्थतलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत्स्तवं यः॥ स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात्॥ २५॥ इति श्रीहनुमच्छत्रुंजयस्तोत्रं संपूर्णम्॥

॥ अथ श्री हनुमतजंजीरा॥

ॐ नमो हनुमन्त वीर भोजन पुवा लड्डू खीर आबालब्रह्मचारी जमकातरिकाटि डारी शंका डाईन भूत

प्रेत निवारनकारी धर्मधुरीन पवनकुमार कुलिशसमान वज्रशरीर तेरे कोप से परअपकारी भूत प्रेत पिशाच मारी डामरी वेताल ब्रह्मारक्षसन की छाती फाटै जहां वीर बजरंगी डटै सत्यसंध गुरु की वाचा सत्य दोहाई वीर अंजनीकुमार की ।। इति श्री हनुमतजंजीरा सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्री हनुमत्स्तोत्रम्।।

शं शं शं सिद्धिनाथं प्रणमति चरणं वायुपुत्रं च रौद्रम्।। वं वं वं विश्वरूपं हहहह हसितं गर्जितंमेघछत्रम्।। तं तं त्रैलौक्यनाथं तपति दिनकरं तं त्रिनेत्रस्वरूपम्।। कं कं कंदर्पश्वयं कमलमनहरं शाकिनीकाल रूपम् ।। १।। रं रं रं रामदूतं रणगजदमितं रावणच्छेददक्षं बं बं बं बालरूपं नतगिरिचरणं कंपितं सूर्यबिंबम्।। मं मं मं मंत्रसिद्धिं कपिकुलतिलकं मर्दनं शकिनीनां हुं हुं हुं कारबीजं हनति हनुमतं हन्यते शत्रुसैन्यम्।। २।। दं दं दं दीर्घरूपं धरकरशिखरं पातितं मेघनादं ऊं ऊं उच्चारितं वै सकलभुवतलं योगिनीवृन्दरूपम्।। क्षं क्षं क्षं क्षिप्रवेगं क्रमति च जलधिं ज्वालितं रक्ष दुर्गं क्षें क्षें क्षें क्षेमतत्त्वं दनुरुहकुलकं मुच्यते बिंबकारम्।। ३।। कं कं कं कालदुष्टं जलनिधितरणं राक्षसानां विनाशे दक्षं श्रेष्ठं कवीनां त्रिभुवनचरतां प्राणिनां प्राणरूपम्।। ह्रां ह्रां ह्रां ह्रासतत्त्वं त्रिभुवनरचितं दैवतं सर्वभूते देवानां च त्रयाणां फणिभुवनधरं व्यापकं वायुरूपम्।। ४।।

त्वं त्वं त्वं वेदतत्वं बहुऋचयजुषां सामचाथर्वरूपं कं कं कं कंदनेत्वं ननु कमलतले राक्षसान् रौद्ररूपान्।। खं खं खं खड्गहस्तं झटितिभुवतले त्रोटितं नागपाशं ॐ ॐ ॐ काररूपं त्रिभुवनपठितं वेदमंत्राधिमंत्रम् ॥ ५॥ संग्रामे शत्रुमध्ये जलनिधितरणे व्याघ्रसिंहे च सर्पे राजद्वारे च मार्गे गिरिगुहविवरे चोषरे कंदरे वा।। भूतप्रेतादियुक्ते ग्रहगणविषये शाकिनीडाकिनीनां देशे विस्फोटकानां ज्वरवमनशिरः पीडनेनाशकस्त्वम्।। ६ ।।

।। अथ श्री हनुमत् मालामन्त्रः।।

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते प्रकटपराक्रम आक्रान्तदिङ्मण्डल यशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितय वज्रदेह ज्वलदग्निसूर्यकोटिसमप्रभतनूरुह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहनोदधिलंघन दशग्रीवशिरः कृतान्तक सीताश्वासन वायुसुत अञ्जनीगर्भसंभूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुगीवसख्यकारण बालिनिवर्हणकारण द्रोणपर्वतोत्पाटन अशोकवनविदारणाक्षयकुमारच्छेदन वनरक्षाकरसमूहवि— भञ्जन ब्रह्मास्त्रब्रह्मशाक्तिग्रसन लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारण शल्यविशल्यौषधिसमानयनबालोदितभानुमण्डलग्रसन मेघनादहोमविध्वंसन इन्द्रजिद्वधकारण सीतारक्षक राक्षसीसंघविदारण कुम्भकर्णादिवधपरायण श्रीरामभक्तितत्पर समुद्रव्योमद्रुमलङ्घन महासामर्थ्य महातेजः पुञ्जविराजमान स्वमिवाचनसंपादितार्जुन संयुगसहाय कुमार

ब्रह्मचारिन् गम्भीरशब्दोदय दक्षिणाशामार्तण्ड मेरुपर्वतपीठिकार्चन सकलमन्त्रागमाचार्य मम सर्वग्रहविनाशन सर्वज्वरोच्चाटन सर्वविषविनाशन सर्वापत्तिनिवारण सर्वदुष्टनिवर्हण सर्पव्याघ्रादि भयनिवारण सर्वशत्रूच्छेदन मम परस्य च त्रिभुवनपुंस्त्रीनपुंसकात्मकं सर्वजीवजातं वशय वशय ममाज्ञाकारकं संपादय संपादय नानानामधेयान्सर्वान् राज्ञः सपरिवारान् मम सेवकादीन्कुरु कुरु सर्वशस्त्रास्त्रविषाणि विध्वंसय विध्वंसय ह्रां ह्रीं ह्रूं हा हा हा एह्येहि ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ख्फ्रें ह्स्फ्रें सर्वशत्रून् हन हन परबलानि परसैन्यानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्यजातं साधय साधय सर्वदुष्टदुर्जनमुचानि कीलय कीलय घे घे घे हा हा हा हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा ।। इति मालामन्त्रः सम्पूर्णः।।

।। अथ श्री हनुमदापदुद्धार स्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्रीहनुमदापदुद्धारस्तोत्रस्य विभीषणऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीहनुमान्परमात्मादेवता मारुतात्मज इति बीजम् अञ्जनासूनुरिति शक्तिः रुद्रपुत्र इति कीलकम् श्रीहनुमत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। अथ ध्यानम्।। वामे करे वैरभिदं वहन्तं शैलं परे शृंखलहारिटंकम्। दधानमच्छाक्षसुवर्णवर्णं भजे ज्वलत्कुण्डल रामदूतम्।। १।। आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्। पारिजाततरुमूलवासिनं भादयामि पवमाननन्दनम्।। २।।

विभीषण उवाच।। आपन्नाखिललोकार्तिहारिणे श्रीहनूमते। अकस्मादागतोत्पातनाशनाय नमोऽस्तुते।। १।। सीतावियुक्तश्रीरामशोकदुःखभयापह। तापत्रितयसंहारिन्नाञ्जनेय नमोऽस्तुते।। २।। आधिव्याधिमहामारी ग्रहपीडापहारिणे। प्राणपहर्त्रे दैत्यानां रामप्राणात्मने नमः।। ३।। संसारसागरावर्तगर्तसम्भ्रान्तचेतसाम्। शरणागतमर्त्यानां शरण्याय नमोऽस्तुते।। ४।। राजद्वारे बिलद्वारे प्रवेशे भूतसंकुले। गजसिंहमहाव्याघ्रचौरभीषणकानने।। ५।। शरण्यातिशरण्याय वातात्मज नमोस्तुते। प्रदोषे वा प्रभाते वा ये स्मरन्त्यञ्जनीसुतम्।। ६।। अर्थसिद्धिं यशः कोर्तिं प्रापुवन्ति न संशयः। कारागारे प्रयाणे च संग्रामे देशविप्लवे।। ७।। ये स्मरन्ति हनूमन्तं तेषां नास्ति विपद्भयम्। वज्रदेहाय कालग्नि रुद्रायामिततेजसे।। ८।। दृप्त दैत्यमहादर्पदलनाय नमोऽस्तुते। ब्रह्मास्त्रस्तम्भनायास्मै नमः श्रीरुद्रमूर्तये।। ९।। जप्त्वा मंत्रमिद स्तोत्रं वसुवारं पठेन्नरः। राजद्वारे सभामध्ये प्राप्तवादे जपेत्सदा ।। १०।। विभीषणकृतं स्तोत्रं यः पठेत्सततं नरः। सर्वापद्भ्यो विमुच्येत नात्रकार्या विचारणा।। ११।। अपूपैः प्रतिदिनं पूज्य पाठं कुर्याद्धि यो नरः। सशीघ्रं सिद्धकार्यः स्याद्रामचन्द्रेणभाषितम्।। १२।। सहस्रावृत्तिपाठेन सर्वसिद्धिर्नसंशयः।। इति श्रीविभीषणकृत स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ वडवानलस्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्रीहनुमद् वडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिः श्रीवाडवानलहनुमान् देवता मम समस्तरोगप्रशमनार्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं हनुमद् वडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये। ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते प्रकटपराक्रमसकलदिङ्मडलयशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लंकापुरीदहन उमाऽमलमन्त्र उदधिबन्धन दशशिरः कृतान्तक सीताश्वासन वायुपुत्र अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्यकारण पर्वतोत्पाटन कुमार ब्रह्मचारिन् गभीरनाद सर्वपापग्रहवारण सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनीविध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महावीरवीराय सर्वदुःखनिवारणाय ग्रहमंडल सर्वभूतमंडल सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन भूतज्वर एकाहिकज्वर द्व्याहिकज्वर त्र्याहिकज्वरचातुर्थिकज्वर संतापज्वर विषमज्वर तापज्वर माहेश्वरज्वरवैष्णवज्वरान् छिन्धि२ यक्षब्रह्मराक्षसभूतप्रेतपिशाचान् उच्चाटय२ ॐ यक्षब्रह्मराक्षसभूतप्रेतपिशाचान् उच्चाटय२ ॐ ह्रां श्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हां हां हां हां ओं सौं एहि एहि एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाश भुवनं भेदय२ छेदय२ मारय२ शोषय२ मोहय२ ज्वालय२ प्रहारय२ सकलमायां भेदय२ ॐ

ह्रां ह्रीं ॐ नमोभगवते महाहनुमते सर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय२ सकलबन्धनमोक्षणं कुरु२ शिरःशूल गुल्मशूल सर्वशूलान् निर्मूलय२ नागापाशानन्तवासुकितक्षककर्कोटककालियान् यक्षकुलजलचरबिलचर रात्रिंचर दिवाचरान् सर्वान्निर्विषान् कुरु २ स्वाहा राजभयचौरभय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र परविद्या छेदय२ स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्वतन्त्र स्वविद्या प्रकटय २ सर्वारिष्टान् नाशय २ असाध्यं साधय २ हुँ फट् स्वाहा।। इति श्री हनुमद्वडवानलस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्री हनुमद् दुर्गस्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्रीअनन्त घोर प्रलय ज्वालाग्नि रूद्रस्य वीर हनुमतोऽसाध्यसाधनस्याघोर घोरस्त्रावयेति प्रयोगस्य अस्य मूलमंत्रस्य ईश्वर ऋषिः नाना विधानि छन्दांसि श्रीराम–लक्ष्मण–हनुमन्तो देवता हौं बीजं अंजनीसूनुरिति शक्तिः वायुपुत्र इति कीलकं श्री हनुमत्–प्रसाद–सिद्ध्यर्थं मम स्वर्ग मृत्युलोक पाताल सिद्ध्यर्थं नवखंडपृथिवी प्राप्त्यर्थं ऋद्धि–सिद्धि–तत्व–पद–सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः। ॐ अंजनीसुताय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ रामदूताय नमः तर्ज्जनीभ्यां नमः।। ॐ वायुपुत्राय नमः मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ रुद्रमूर्तये नमः अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ अग्निगर्भाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ महाबलाय नमः

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। एवं हृदयादिन्यासः।। अथ ध्यानं कुर्यात् उदयादित्य संकाशमुदारभुजविक्रमम्।। कंदर्पकोटिलावण्यं सर्व–विद्या–विशारदम्।। १।। श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम्।। अभयं वरदं दोर्भ्यां कल्पयन् मारुतात्मजम्।। २।। इति ध्यात्वा पंचोपचारैः संपूजयेत्।। श्रीं।। ॐ नमो भगवते दावानलकालग्निहनुमते ज्योतिर्वितानधवलीकृत वज्रदेह वज्रकाय वज्रमुख वज्रनख वज्रबाहु वज्ररोम वज्रनेत्र वज्रदन्त वज्रकरकमलात्मकाय भीमकपिगलाक्ष उग्र प्रलय काल रुद्रावतार शरभ शाल्व भैरव दोर्दंड लंकापुरीदहन उदधिलङ्घन दशशिरस्कृतांत सीताश्वासन ईश्वरावतार वायुसुत अञ्जनीगर्भसभूत उदयभास्कर बिम्बानलग्रासक देवदानव–ऋषिमुनिवन्द्य पाशुपतास्त्र ब्रह्मास्त्र वैष्णवास्त्र कालशक्ति कालदण्ड कालपाश अघोरास्त्र निवारणाय नारायणास्त्र मृडाय सर्वशक्तिमयात्मकाय अथर्वणवेद सिद्ध चिरकाल निराहार वायुवेग मनोवेग श्रीराम तारक परब्रह्म विश्वरूप निर्मल लक्ष्मण प्राण प्रतिष्ठाऽनन्द करतल जल अग्नि मर्माणि भेदय २ सर्वशत्रुं छेदय २ मम वैरिणं खादय २ संजीवन–पर्वतोत्पाटनाय डाकिनी–विध्वंसिन् सुग्रीव–संधायिन् निष्कलंकित कुमार ब्रह्मचारिन् दिगम्बर लोष्ट सर्वं पापग्रहं कुमारग्रहं छेदय २ भेदय २ भिन्दि २ स्वाहा।। १।। कण्टकान् ताडय २ मारय २ शोषय २ ज्वालय २ हारय २ अमुकं नाशय २ अतिशोषय २ मां सर्वत्र रक्ष।। २।।

ॐ नमो भगवते श्रीप्रतापहनुमते महावीराय सर्वदुःख–निवारणाय ग्रहमंडल भूतमंडल प्रेतमंडल पिशाच मंडलम् उच्चाटय २ अंतर्भावादिकज्वर माहेश्वरज्वर विष्णुज्वर ब्रह्मज्वर शीतज्वर वातज्वर एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं अर्धमासिकं षण्मासिकं साम्वत्सरिकं वात पित्त श्लेष्मान्तक सन्निपातकम् अन्तर्गत अपस्मारी भ्रमं छेदय २ भेदय २।। ॐ नमो भगवते चिन्तामणये हनुमते अंगशूल शिरःशूल अक्षिशूल गुदशूल जङ्घशूल पादशूल पित्तशूल वायुशूल स्तनशूल सर्वशूलानि निर्मूलय २ दानव दैत्य कामिनी सहित वेताल ब्रह्मराक्षस कोलाहल नागपाश अनन्त वासुकि तक्षक कालिन्दी सर्प जलोदर रोगपाश महानाग कूटपाशं विषं निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा।। पाताल गरुड भैरव मदगजसिंहेन्द्रादि पाशं बन्धय २ छेदय २ प्रलय महाकालाग्नि हनुमन् शृङ्खलाबन्धनं विमोक्षय २ सर्वं बालग्रहं छेदय २ सर्वकार्य्याणि साधय २ मां प्रसन्न श्रीराम रक्ष २ सिंह भैरवस्वरूप।। ॐ द्रां द्रीं शों भें घ्रां श्रीं क्लां क्लीं क्रां क्रां ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं खं।। जय मारणमोहनादीनि दम २ मारय २ वारय २ वानराय २ खें खें हूं फट् स्वाहा।। भ्रामय २ लव लव वै कुरु २ जय २ हंस मंद दुष्ट ग्रहान् प्रज्वालय २ मृडय २ तृषासहमानाय अस्त्र भार भय त्रिशूल डमरु काल मृत्यु कपाल खड्गधराय अभय शान्तरूपाय आवर्तय २ आद्यन्त परमन्त्र परयन्त्र शत सहस्र लक्ष कोटि पुट

भेदनाय२ अग्निबन्धाय२ अनन्तादि दुष्टनागानां द्वादश कुल वृश्चिकानामेकादश कुल लूतानां हन २ वज्र तुङ्गाढ्यान् उच्चाटय २ मारण मोहन वशीकरण स्तम्भन जृम्भण आकर्षण उच्चाटन मीलन विद्वेषण युद्ध तर्क मम वैरिणं बन्धय २ ॐ कुमार दत्ताहवाय ग्रहभूताय ग्रामवासि जन्मरक्षाय पूर्वशक्ताय सर्वाङ्गावधाने स्वाहा अस्य अक्षय धारय।। ॐ लं लं लं घ्रौं घ्रैं निं स्वाहा।। हुं हुं हुं टं३ लं लं लं देवदत्तदिगम्बर अष्टभामा भैरव, अष्टांगधराय नवनाथ भैरव वानरांगधराय नव ब्रह्म दश विष्णुरूपाय एकादश रूद्रावताराय द्वादशार्क तेजाय त्रयोदश सोमशुक्राय वीर हनुमन् सामन भेदन मोहन वशीकरण ते नाशाय नमः राजमुखबन्धन मकरमुख शूकरमुख जिह्वा व्याघ्र सर्प वृश्चिकाग्निज्वाला विषनिगडन सर्वजन वैरिमुख बन्ध वायु वीर हनुमन् ईश्वरावतार वायुनंदन अञ्जनी सुत बन्ध२ सत्यं बन्ध२ श्रीरामचन्द्र उवाच महादेव उवाच वीरभद्र उवाच ॐ हां हां हूं अस्त्राय ह्रीं ह्रीं घ्रीं श्रीं यों भें भें भें भ्रां हट २ सर्वषट् विश्वषट् शत्रु षट् वश्य षट् सर्व हेमाद्रि षट् लां लां स्त्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं मनस्तम्भय२ भञ्जय२ ओं ह्रीं ह्रीं ही ह्रीं मैं सर्व हौं२ सर्वविष सर्वमंत्रार्थसिद्धिं कुरु२ स्वाहा। इति अथर्वणवेदोक्तं हनुमद्दुर्गं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्री रामस्तवराजस्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्रीरामचंद्रस्तवराजस्तोत्रमंत्रस्य सनत्कुमारऋषिः।। अनुष्टुप् छंदः।। श्रीरामो देवता।। सीता बीजम्।। हनुमान् शक्तिः।। श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। सूतउवाच– सर्वशास्त्रर्थतत्त्वज्ञं व्यासं सत्यवतीसुतम्।। धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम्।। १।। युधिष्ठर उवाच– भगवन् योगिनां श्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद।। किं तत्त्वं किं परं जाप्यं कि ध्यानं मुक्तिसाधनम्।। २।। श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे. मुनिसत्तम।। वेदव्यास उवाच– धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः।। ३।। यत्परं यद्गुणातीतं यज्योतिरमलं शिवम्।। तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपदकारणम्।। ४।। श्रीरामेतिपरं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।। ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः।। ५।। श्रीरामरामेति जना ये जपंति च सर्वदा।। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः।। ६।। स्तवराजं पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता।। तत् सर्वं संप्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरः सरम्।। ७।। तापत्रयाग्निशमनं सर्वाघौघनिकृंतनम्।। दारिद्र्यदुः खशमनं सर्वसंपत्करं शिवम्।। ८।। विज्ञानफलदं दिव्यं मोक्षैकफलसाधनम्।। नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि रामकृष्णजगन्मयम्।। ९।। अयोध्या नगरे रम्ये रत्नमंडपमध्यगे।। स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम्।। १०।। तन्मध्येऽष्टदलं पद्म नानारत्नैश्च वेष्टितम्।। स्मरन्मध्ये दाशरथिं सहस्रादित्य

तेजसम्।। ११।। पितुरंकगतं राममिंद्रनीलमणिप्रभम्।। कोमलांगं विशालाक्षं विद्युद्वर्णवरावृतम्।। १२।। भानुकोटिप्रतीकाशं किरीटेन विराजितम्।। रत्नग्रैवेयकेयूरं रत्नकुण्डलमण्डितम्।। १३।। रत्नककणमंजी-रकटिसूत्रैरलंकृतम्।। श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम्।। १४।। दिव्यरत्नसमायुक्तं मुद्रिकाभिरलंकृतम्।। राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्स्मिताननम्।। १५।। तुलसीकुन्दमन्दारपुष्पमाल्यैरलंकृतम्।। कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यग-न्धानुलेपनम्।। १६।। योगशास्त्रेष्वभिरतं योगीशं योगदायकम्।। सदा भरतसौमित्रिशत्रुघ्नैरुपशोभितम्।। १७।। विद्याधरसुराधीशसिद्धगन्धर्वकिन्नरैः।। योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम्।। १८।। विश्वामित्रवसिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम्।। सनकादिमुनि श्रेष्ठैर्योगिवृन्दैश्च सेवितम्।। १९।। रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम्।। मंगलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम्।। २०।। सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम्।। कौसल्यानन्दनं रामं धनुर्बाणधरं हरिम्।। २१।। एवं संचिन्तयन्विष्णुं यज्ज्योतिरमलं विभुम्।। प्रहृष्टमनसो भूत्वा मुनिवर्यः स नारदः।। २२।। सर्वलोकहितार्थाय तुष्टाव रघुनन्दनम्।। कृतांजलिपुटो भूत्वा चिन्तयेदद्भुतं हरिम्।। २३।। यदेकं यत्परं नित्यं यदनंतं चिदात्मकम्।। यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिंतयाम्यहम्।। २४।। विज्ञानहेतुं विमलायताक्षं प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुम्।। श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवं परात्परं राममहं भजामि।। २५।। कविं पुराणं पुरुषं पुरस्तात्सनातनं

योगिनमीशितारम्।। अणोरणीयांसमनंतवीर्यं प्राणेश्वरं राममसौ ददर्श।। २६।। नारद उवाच– नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम्।। कविं पुराणं योगीशं रामं दशरथात्मजम्।। २७।। रामराजं रघुवरं कौशल्यानन्दवर्धनम्।। भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम्।। २८।। सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम्।। सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम्।। २९।। आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम्।। आनंदरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम्।। ३०।। जामदग्न्यं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम्।। वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम्।। ३१।। श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्तयानंदविग्रहम्।। हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम्।। ३२।। श्रीवल्लभं कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम्।। मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम्।। ३३।। वासुदेवं जगद्योनिमनादि निधनं हरिम्।। गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम्।। ३४।। गोगोपालपरीवारं गोपकन्यासमावृतम्।। विद्युत्पुंजप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्।। ३५।। गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम्।। कामरूपं कलावन्तं कामिनीकामदं विभुम्।। ३६।। मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम्।। श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम्।। ३७।। भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिं भूतिभूषणम्।। सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरणिम्।। ३८।। श्रीनृसिंह महाबाहुं महान्तं दीप्ततेजसम्।। चिदानन्दमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम्।। ३९।।

आदित्यमण्डलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम्।। भक्तप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम्।। ४०।। कौसल्येयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियम्।। सिंहासने समासीनं नित्यव्रतमकल्मषम्।। ४१।। विश्वामित्रप्रियं दान्तं स्वदारनियमव्रतम्।। यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम् ।। ४२।। सत्यसन्धं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम्।। सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम्।। ४३।। दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम्।। बालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम् ।। ४४।। नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्प्रियम् ।। शुद्धं सूक्ष्मपरं शान्तं तारकं ब्रह्मरूपिणम्।। ४५।। सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम्।। सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम्।। ४६।। निरामयं निराभासं निरवद्यं निरंजनम्।। नित्यानन्दनिराकारमद्वैतं तमसः परम् ।। ४७।। परात्परतरं तत्त्वं सत्यानन्दचिदात्मकम्।। मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम्।। ४८।। सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम्।। नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम्।। ४९।। नमोस्तु वासुदेवाय ज्योतिषां पतये नमः।। नमोस्तु रामदेवाय जगदानन्दरूपिणे।। ५०।। नमो वेदान्तनिष्ठाय योगिने ब्रह्मवादिने ।। मायामयं निरस्ताय प्रपन्नजनसेवितम्।। ५१।। वन्दामहे महेशानं चण्डकोदण्डखण्डनम्।। जनकीहृदयानन्दवर्धनं रघुनन्दनम् ।। ५२।। उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामाय ते कामाय प्रमदामनोहरगुणग्रामाय रामात्मने।। योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारविध्वंसाय स्फुरदोजसे

रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः॥ ५३॥ भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठमादित्यचन्द्रानलसुप्रभावम्॥ सर्वात्मकं सर्वजगत्स्वरूपं नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ५४॥ निरञ्जनं निष्प्रतिमं निरीहं निराश्रयंनिष्कलमप्रपंचम्॥ नित्यं ध्रुवं निर्विषयं स्वरूपं निरन्तरं राममहं भजामि॥ ५५॥ भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तं भक्तप्रियं भानुकुलप्रदीपम्॥ भूतत्रिनाथं भुवनाधिपत्यं भजामि रामं भवरोगवैद्यम्॥ ५६॥ सर्वाधिपत्यं समरे गभीरं सत्यं चिदानन्दमयस्वरूपम्॥ सत्यं शिवं शान्तिमयं शरण्यं सनातनं राममहं भजामि॥ ५७॥ कार्यं क्रियाकारणमप्रमेयं कविं पुराणं कमलायताक्षम्॥ कुमारवेद्यं करुणामयं तं कल्पद्रुमं राममहं भजामि॥ ५८॥ त्रैलाक्यनाथं सरसीरुहाक्षं दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम्॥ महाबलं वेदनिधिं सुरेशं सनातनं राममहं भजामि॥ ५९॥ वेदान्तवेद्यं कविमीशितारमनादिमध्यान्तमचित्यमाद्यम् ॥ अगोचरं निर्मलमेकरूपं नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ६०॥ अशेषवेदात्मकमादिसंज्ञमजं हरिं विष्णुमनन्तमाद्यम्॥ अपारसंवित्सुखमेकरूपं परात्परं राममहं भजामि ॥ ६१॥ तत्त्वंस्वरूपं पुरुषं पुराणं स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम्॥ राजाधिराजं रविमण्डलस्थं विश्वेश्वरं राममहं भजामि॥ ६२॥ लोकाभिरामं रघुवंशनाथं हरिं चिदानन्दमयं मुकुन्दम्॥ अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रं नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ६३॥ योगीन्द्रसंघैश्च सुसेव्यमानं नारायणं निर्मलमादिदेवम्॥ नतोऽस्मि नित्यं

जगदेकनाथमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। ६४।। विभूतिदं विश्वसृजं विराजं राजेन्द्रमीशं रघुवंशनाथम्।। अचिंत्यमव्यक्तमनन्तमूर्तिं ज्योतिर्मयं राममहं भजामि।। ६५।। अशेषसंसारविकारहीनमादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।। समस्तसाक्षिं तमसः परस्तान्नारायणं विष्णुमहं भजामि।। ६६।। मुनींद्रगुह्यं परिपूर्णकामं कलानिधिं कल्मषनाशहेतुम्।। परात्परं यत्परमं पवित्रं नमामि रामं महतो महान्तम्।। ६७।। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो देवतास्तथा।। आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन।। ६८।। तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा।। विप्रा वेदास्तथा यज्ञाः पुराणं धर्मसंहिताः ।। ६९।। वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैवच।। यक्षराक्षसगन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजादिभिः।। ७०।। सनकादिमुनि श्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुंगव।। वसवोष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादश स्मृताः।। ७१।। तारका दशदिक् चैव त्वमेव रघुनन्दन।। सप्तद्वीपाः समुद्राश्च नागा नद्यस्तथा द्रुमाः।। ७२।। स्थावरा जगमाश्चैव त्वमेव रघुनायक।। देवतिर्यङ्मनुष्याणां दानवानां तथैव च।। ७३।। माता पिता तथा भ्राता त्वमेवरघुवल्लभ।। सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेवहि।। ७४।। त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम।। त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोऽन्यन्नैव किंचन।। ७५।। शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परंब्रह्म सनातनम्।। राजीवलोचनं रामं प्रणमामि जगत्पतिम्।। ७६।। व्यास उवाच।। ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुंगवम्।।

तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम्।। ७७।। नारद उवाच।। यदि तुष्टोसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे।। त्वन्मूर्तिदर्शनेनैव कृतार्थोहं च सर्वदा।। ७८।। धन्योहं कृतकृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम।। अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ।। ७९।। अद्य मे सफलं ज्ञानमद्य मे सफलं तपः।। अद्य मे सफल जन्म त्वत्पादांभोजदर्शनात्।। ८०।। अद्य मे सफलं सर्वं त्वन्नामस्मरणात्तथा।। त्वत्पादाभोरुहद्वन्द्वे सद्भक्तिं देहि राघव।। ८१।। ततः परमसंप्रीतो रामः प्राह स नारदम्।। श्रीराम उवाच– मुनिवर्य्य महाभाग मुने त्विष्टं ददामि ते।। यत्त्वया चेप्सितं सर्वं मनसा तद्भविष्यति।। ८२।। नारद उवाच।। वर न याचे रघुनाथ युष्मत्पादाब्जभक्तिः सततं ममास्तु।। इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे।। ८३।। व्यास उवाच– इत्येवमीडितो रामः प्रादात्तस्मै वरांतरम्।। वीरो राम महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः।। ८४।। अद्वैतममलं ज्ञानं त्वन्नामस्मरणं तथा।। अन्तर्दधे जगन्नाथः पुरतस्तस्य राघवः।। ८५।। इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम्।। सर्वसौभाग्यसंपत्तिदायकं मुक्तिदं शुभम्।। ८६।। कथितं ब्रह्मपुत्रेण वेदानां सारमुत्तमम्।। गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं तव स्नेहात्प्रकीर्तितम्।। ८७।। यः पठेच्छृणुयाद्वापि त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः।। ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च।। ८८।। स्वर्णस्तेयं सुरापानं गुरुतल्पयुतानि च।। गोवधाद्युपपापानि अनृतात्संभवानि च।। ८९।।

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुत शतोद्भवैः।। मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।। ९०।।। श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।। इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते।। ९१।। रामं सत्यं परं ब्रह्म रामात् किंचिन्न विद्यते।। तस्माद्रामस्य रूपोऽयं सत्यं सत्यमिदं जगत्।। ९२।। श्रीसूत उवाच।। श्रीरामचन्द्र रघुपुंगव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।। राजाधिराज रघुनन्दन रामचंद्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोस्मि।। ९३।। वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामंडपे मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने संस्थितम्।। अग्रे वाचयति प्रभंजनसुते तत्त्वं मुनीन्द्रैः परं व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्।। ९४।। रामं रत्नकिरीटकुण्डलयुतं केयूरहारान्वितं सीतालंकृतवामभागममलं सिंहासनस्थं विभुम्।। सुग्रीवादिहरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा विश्वामित्रपराशरादिमुनिभिः संस्तूयमानं प्रभुम्।। ९५।। सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानं भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम्।। महितनृपभयानं सीतया शोभमान स्मरहृदयविमानं ब्रह्म रामाभिधानम्।। ९६।। रघुवर तवमूर्तिर्मामके मानसाब्जे नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे।। अनिशमतुलकीर्त्या मस्तकं त्वत्पदाब्जं भव जलनिधिमग्नं रक्ष मामार्तबंधो।। ९७।। रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम्।। कौसल्याभक्तिसंभूतं जानकीकण्ठभूषणम्।। ९८।। विमलकमलनेत्रं विस्फुरन्नीलगात्रं तपनकुलपवित्रं दानविद्वांसमित्रम्।। भुवनकुलचरित्रं

भूमिपुत्रिकलत्रममितगुणसमुद्रं रामचन्द्रं नमामि।। ९९।। इति श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीरामसर्वस्वस्तोत्रम्।।

रामो माता मत्पितारामचन्द्रो भ्रातारामो मत्सखा रामचन्द्रः।। रामः स्वामी राम एवार्थदाता रामादन्यं नैव जाने न जाने।। १।। रामः सेव्यो वन्दनीयोऽपि रामो रामोनित्य मादृशैश्चिंतनीयः। रामो ज्ञानं ध्यानगम्योऽपि रामो रामादन्यं नैव जाने न जाने।। २।। रामो भुक्तिर्मुक्तिदाता च समो रामोऽस्माकं राजते राजराजः। लोकेऽस्माभिर्लोक्यते रामचन्द्रो रामादन्यं नैव जाने न जाने।। ३।। रामोधर्म्मः कर्म्मरामो मदीयं रामोमह्यं कर्मसिद्धिप्रदाता।। रामोऽजस्रः कर्म्मसिद्धिस्वरूपी रामादन्यं नैव जाने न जाने।। ४।। रामोऽस्माभिः पूजनीयोनितान्तं रामोऽस्माभिः प्रत्यह कीर्तनीयः। रामोऽस्माभिर्गोपनीयो गुहान्ते रामदन्यं नैव जाने न जाने।। ५।। रामोऽस्माकं दुःखहर्ता त्रिलोक्यां रामोऽस्माकं कर्मकर्ता सैदव। रामोऽस्माकं कर्मभूतो विभाति रामादन्यं नैव जाने न जाने।। ६।। रामोज्ञातिः ख्यातिरप्येव रामो रामः कीर्तिः पूर्तिरप्येव रामः। सर्वस्वं मे रामचन्द्रोऽवनीन्द्रो रामादन्यं नैव जाने न जाने।। ७।। ग्रामेरण्ये जागरे स्वप्नकाले मार्गे दुर्गे गच्छतोऽगच्छतो मे। शश्वल्लोके रक्षकस्त्वेव रामो रामादन्यं नैव जाने न जाने।। ८।। ये वै त्रिसंध्यं प्रपठंति नित्यं श्रीरामसर्वस्वमनन्यभक्त्या।

श्रीरामरामेण कृतं कृतार्थास्तेऽप्यच्युतं रामपदं प्रयान्ति।। ९।। इति श्रीरामसर्वस्वस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीरामदुर्गस्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्रीरामदुर्गस्तोत्रमन्त्रस्य कौशिकऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीरामो देवता रां बीजं नमः शक्ति। रामाय कीलकम् श्रीरामप्रसादसिद्धिद्वारा मम सर्वतो रक्षापूर्वकनानाप्रयोगसिध्यर्थे श्रीरामदुर्गमन्त्रस्य पाठे विनियोगः।। ॐ ऐं क्लीं ह्रीं रीं चों ह्रीं रीं चों ह्रीं श्रीं आं क्रौं ॐ नमोभगवते रामाय मम सर्वाभीष्टं साधय२ फट् स्वाहा।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ रामाय नमः।। ॐ नमो भगवते रामाय मम प्राच्यां ज्वल २प्रज्वल २ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा।। १।। ॐ ऐं ह्री क्लीं ॐ लं लक्ष्मणाय नमः।। ओं नमो भगवते लक्ष्मणाय मम याम्यां ज्वल२ प्रज्वल२ मां रक्ष २ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा।। २।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ भं भरताय नमः।। ॐ नमो भगवते भरताय मम प्रतीच्यां ज्वल २ प्रज्वल २ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूँ फट् स्वाहा।। ३।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ओं शं शत्रुघ्नाय नमः।। ओं नमो भगवते शत्रुघ्नाय मम उदीच्यां ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय २ मां रक्ष २ सर्वदुष्टेभ्यो

हूं फट् स्वाहा॥ ४॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ जानक्यै नमः॥ ॐ नमो भगवते मे ऐशान्यां ज्वल २ प्रज्वल २ निर्धनं सधनं साधय २ मां रक्ष २ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ ५॥ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ सुं सुग्रीवाय नमः॥ ॐ नमो भगवते सुग्रीवाय ममाग्नेय्यां ज्वल २ प्रज्वल २ निर्धनं सधनं साधय २ मां रक्ष २ सर्व दुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा ॥ ६॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ विं विभीषणाय नमः॥ ॐ नमो भगवते विभीषणाय मम नैर्ऋत्यां ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष २सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ ७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ वं वायुसुताय नमः॥ ॐ नमो भगवते वायुसुताय मम वायव्यां ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ ८॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ मं महावीरविष्णवे नमः॥ ॐ नमो भगवते महाविष्णवे मम ऊर्ध्वं ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ ९॥ ॐ ऐ ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नृं नृसिंहाय नमः॥ ॐ नमो भगवते नृसिंहाय मम मध्ये ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ १०॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ वं वामनाय नमः॥ ॐ नमो भगवते वामनाय मम अधो ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा॥ ११॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐ कं केशवाय नमः॥ ॐ

नमोभवगते केशवाय मम सर्वतः ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय२ मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा।। १२।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ मं मर्कटनायकाय नमः।। ॐ नमो भगवते मर्कटनायकाय मम सर्वदा ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं२ साधय मां रक्ष२ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा।। १३।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ कं कपिनाथाय कपिपुंगवाय नमः।। ओं नमो भगवते कपिपुंगवाय मम चतुर्द्वारं सदा ज्वल२ प्रज्वल२ निर्धनं सधनं साधय २ मां रक्ष २ सर्वदुष्टेभ्यो हूं फट् स्वाहा।। १४।। ॐ ऐं ह्रीं क्ली श्रीं रां रीं चों ह्रीं श्रीं आं क्रौं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नमो भगवते रामाय सर्वाभीष्टं साधय २ हूं फट् स्वाहा।। १५।। इति श्रीरामदुर्गस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ संग्रामविजयविद्या।।

ईश्वर उवाच–संग्रामाविजयां विद्यां पदमालां वदाम्यहम्।

ॐ ह्री चामुण्डे श्मशानवासिनि खट्वाङ्गकपालहस्ते महा प्रेतसमारूढे महाविमानसमाकुले कालरात्रि महागणपरिवृते महामुखे बहुभुजे घण्टाडमरुकिङ्किणि हस्ते अट्टाट्टहासे किलि किलि, ॐ हूं फट्, दंष्ट्राघोरान्धकारिणि नादशब्दबहुले गजचर्मप्रावृतशरीरे मांसदिग्धे लेलिहानोग्रजिह्वे महाराक्षसि रौद्रदंष्ट्राकराले

भीमाट्टाट्टहासे स्फुरद्विद्युत्प्रभे चल चल, ॐ चकोरनेत्रे चिलि चिलि, ॐ ललज्जिह्वे, ॐ भ्रीं भृकुटिमुखि हुंकारभयत्रासनि कपालमालावेष्टित जटामुकुटशसिशाङ्कधारिण, अट्टाट्टहासे किलि किलि, ॐ ह्रूं दंष्ट्राघोरान्धकारिणि सर्वविघ्नविनाशिनि , इदं कर्म साधय साधय, ॐ शीघ्रं कुरु कुरु, ॐ फट्, ओमङ्कुशेन शमय प्रवेशय, ॐ रङ्ग रङ्ग कम्पय कम्पय, ॐ चालय, ॐ रुधिरमांसमद्यप्रिये हन हन, ॐ कुट्ट, ॐ छिन्द, ॐ मारय, ओमनुक्रमय, ॐ वज्रशरीरं पातय, ॐ त्रैलोक्यगतं दुष्टमदुष्टं वा गृहीतमगृहीतं वाऽऽवेशय, ॐ नृत्य, ॐ वन्द, ॐ कोटराक्ष्यूर्ध्वकेश्युलूकवदने करङ्किणि दह, ॐ पच पच, ॐ गृह्ण, ओं मण्डलमध्ये प्रवेशय ओं किं विलम्बसि ब्रह्मसत्येन, विष्णुसत्येन, रुद्रसत्येन, ऋषिसत्येन, आवेशय ओं किलि किलि, ॐ खिलि खिलि विलि विलि, ॐ विकृतरूपधारिणि कृष्णभुजङ्गवेष्टितशरीरे सर्वग्रहावेशनि प्रलम्बौष्ठिनि भ्रू भङ्गलग्ननासिके विकटमुखि कपिलजटे ब्राह्मि भञ्ज, ज्वालामुखि स्वन, ॐ रक्ताक्षि धूर्णय भूमिं पातय, ॐ शिरो गृह्ण चक्षुर्मीलय हस्तपादौ गृह्ण मुद्रां स्फोटय, ॐ फट् ॐ विदारय, ॐ त्रिशूलेन च्छेदय, ॐवज्रेण हन, ओं दण्डेन ताडय, ॐ चक्रेण छेदय२ ॐ शक्त्या भेदय दंष्ट्रया कीलय ॐ कर्णिकया पाटय, ओमङ्कुशेन गृह्ण, ॐ शिरोक्षिज्वरमैकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं

डाकिनीस्कन्दग्रहान्मुञ्च मुञ्च, ॐ पच, ओमुत्सादय, ॐ भूमिं पातय, ॐ गृह्ण, ॐ ब्रह्माण्येहि, ॐ माहेश्वर्येहि (ॐ) कौमार्येहि, ॐ वैष्णव्येहि, ॐ वाराह्येहि, ॐ ओमैन्द्र्येहि, ॐ चामुण्डे एहि ॐ रेवत्येहि, ओमाकाशरेवत्येहि, ॐ हिमवच्चारिण्येहि, ॐ रुरुमर्दिन्यसुरक्षयंकर्याकाशगामिनि पाशेन बन्ध बन्ध, अङ्कुशेन कट कट समयंतिष्ठ, ॐ मण्डलं प्रवेशय, ॐ गृह्ण मुखं बन्ध, ॐ चक्षुर्बन्ध हस्तपादौ च बन्ध दुष्टग्रहान्सर्वान्बन्ध, ॐ दिशो बन्ध, ॐ विदिशो बन्ध, अधस्ताद्बन्ध, ॐ सर्वं बन्ध, ॐ भस्मना पानीयेन वा मृत्तिकया सर्षपैर्वा सर्वानावेशय, ॐ पातय, ॐ चामुण्डे किलि किलि, ॐ विच्चे हुं फट् स्वाहा। पदमाला जयाख्येयं सर्वकर्मप्रसाधिका। सर्वदा होमजप्याद्यैः पाठाद्यैश्च रणे जयः॥ ३॥ अष्टाविंशभुजा ध्येया असिखेटकषट्करौ। गदादण्डयुतौ चान्यौ शरचापधरौ परौ॥ ४॥ मुष्टिमुद्गरयुक्तौ च शङ्खखड्गयुतौ परौ। ध्वजवज्रधरौ चान्य सचक्रपरशू परौ॥ ५॥ डमरुदर्पणाढ्यौ च शक्तिकुन्तधरौ परौ। हलेन मुसलेनाऽऽढ्यौ पाशतोमरसंयुतौ॥ ६॥ ढक्कापणव संयुक्तावभयौ मुष्टिकान्वितौ। तर्जयन्ती च महिषं घातनी होमतोऽरिजित्॥ त्रिमध्वाक्ततिलैर्होमो न देया यस्य कस्यचित् ॥ ७॥ इति सङ्ग्रामविजयविद्यावर्णनं सम्पूर्णम्॥

।। अथ त्रैलौक्यविजयविद्या।।

ईश्वर उवाच– त्रैलोक्यविजयां वक्ष्ये सर्वयन्त्रविमर्दिनीम्।। १।। ॐ हूं क्षूं हूं, ॐ नमो भगवति दंष्ट्रिणि भीमवक्त्रे महोग्ररूपे हिलि हिलि रक्तनेत्रे किलि किलि महानिस्वने कुलु ओं निर्मांसे कट कट गोनसाभरणे चिलि चिलि शवमालाधारिणि द्रावय, ॐ महारौद्रि सार्द्रचर्मकृताच्छदे विजृम्भ, ॐ नृत्यासिलताधारिणि, भृकुटीकृतापाङ्गे विषमनेत्रकृतानने वसामेदो विलिप्तगात्रे कह कह, ॐ हस हस क्रुद्ध, क्रुद्ध ॐ नीलजीमूतवर्णोऽभ्रमालाकृताभरणे विस्फुर, ॐ घण्टारवावकीर्णदिहे, ॐ सिंसिस्थेऽरुणवर्णे, ऊँ ह्रां ह्रीं हूं रौद्र रूपे ह्रूँ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं हूँ ओमाकर्षय ॐ धून धून, ॐ हे हः खः वज्रिणि भिन्द, ॐ महाकाये छिन्द ॐ करालिनि किटि२ महाभूतमातः सर्वदुष्टनिवारिणि जये, ॐ विजये ॐ त्रैलोक्य विजये हूं फट् स्वाहा।। २।। नीलवर्णां प्रेतसंस्थां विंशहस्तां यजेज्जये। न्यासं कृत्वा तु पञ्चाङ्गं रक्तपुष्पाणि होमयेत्। संग्रामे सैन्यभङ्गः स्यात्त्रैलौक्यविजयापठात्।। ३।। ॐ बहुरूपाय स्तम्भय स्तम्भय, ॐ मोहय, ॐ सर्वशत्रून्द्रावय, ॐ ब्रह्माणमाकर्षय विष्णुमाकर्षय, ॐ महेश्वरमाकर्षय, ओमिन्द्रं टालय, ॐ पर्वतांश्चालय, ॐ सप्तसागराञ्शोषय, ॐ छिन्द च्छिन्द बहुरूपाय नमः।। ४।। भुजंगं नाममृण्मूर्तिसंस्थं विद्यादरिं ततः

॥ ५॥ इति त्रैलोक्यविजयविद्या सम्पूर्णा॥

॥ अथ श्री शालग्रामस्तोत्रम्॥

श्रीरामं सह लक्ष्मणं सकरुणं सीतान्वितं सात्त्विकं वैदेहीमुखपद्मलुब्धमधुपं पौलस्त्यसंहारिणम्। वन्दे वन्द्यपदांबुजं सुरवरं भक्तानुकंपाकरं शत्रुघ्नेन हनूमता च भरतेनासेवितं राघवम्॥ १॥ जयति जनकपुत्री लोकभर्त्री नितान्तं जयति जयति रामः पुण्यपुञ्जस्वरूपः। जयति शुभगराशिर्लक्ष्मणो ज्ञानरूपो जयति किल मनोज्ञा ब्रह्मजाता ह्ययोध्या॥ २॥ अथ श्रीशालग्रामस्तोत्रप्रारम्भः॥ ॐ अस्य श्रीशालग्रामस्तोत्रमंत्रस्य श्री भगवानृषिः॥ नारायणो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीशालग्रामस्तोत्रमंत्रजपे विनियोगः॥ युधिष्ठिर उवाच॥ श्रीदेवता देवेश देवतार्चनमुत्तमम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहि मे पुरुषोत्तम॥ १॥ श्रीभगवानुवाच॥ गण्डक्यां चोत्तरे तीरे गिरिराजस्य दक्षिणे। दशयोजनविस्तीर्णा महाक्षेत्रवसुंधरा॥ २॥ शालग्रामो भवेद्देवो देवी द्वारावती भवेत्। उभयोः संगमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशयः॥ ३॥ शालग्रामशिला यत्र यत्र द्वारावती शिला। उभयोः संगमो यत्र मुक्तिस्तत्र च संशयः॥ ४॥ आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं य इच्छति। शालग्रामशिलावारि पापहारि नमोऽस्तु ते ॥ ५॥ अकालमृत्युहरणं सर्व्वव्याधिविनाशनम्। विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसा

धारयाम्यहम्॥ ६॥ शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि। अंगलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यादिकं दहेत्॥ ७॥ स्नानोदकं पिबेन्नित्यं चक्राङ्कितशिलोद्भवम्॥ प्रक्षाल्य इति तत्तोयं ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥ ८॥ अग्निष्टोमसहस्राणि वाजपेयशतानि च। सम्यक् फलमवाप्नोति विष्णोर्नैवेद्यभक्षणात्॥ ९॥ नैवेद्ययुक्तां तुलसी च मिश्रितां विशेषतः पादजलेन विष्णोः। योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम्॥ १०॥ खण्डिताः स्फुटिता भिन्ना अग्निदग्धास्तथैव च। शालग्रामशिला यत्र तत्र दोषो न विद्यते॥ ११॥ न मंत्रं पूजनं नैव न तीर्थं न च भावना। न स्तुतिर्नोपचारश्च शालग्राम शिलार्चने॥ १२॥ ब्रह्महत्यादिकं पापं मनोवाक्कायसम्भवम्। शीघ्रं नश्यति तत्सर्वं शालग्रामशिलार्चनात्॥ १३॥ नानावर्णमयं चैव नानाभोगेन वेष्टितम्॥ तथा वरप्रसादेन लक्ष्मीकान्तं वदाम्यहम्॥ १४॥ नारायणोद्भवो देवश्चक्रमध्ये च कर्मणा। तथा वरप्रसादेन लक्ष्मीकान्तं वदाम्यहम्॥ १५॥ कृष्णे शिलातले यत्र सूक्ष्मं चक्रं सुदृश्यते। सौभाग्यं सन्ततिं धत्ते सर्वसौख्यं ददाति च॥ १६॥ वासुदेवस्य चिह्नानि दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते। श्रीधरः सुकरे वामे हरिद्वर्णस्तु दृश्यते॥ १७॥ वाराहरूपिणं देवं कूर्माङ्गैरपि चिह्नितम्। गोपदं तत्र दृश्येते वाराहं वामनं तथा॥ १८॥ पीतवर्णस्तु देवानां रक्तवर्णं भयावहम्॥ नारसिंहो भवेद्देवो मोक्षदं च प्रकीर्तितम्॥ १९॥ शङ्खचक्रगदा कूर्माः

शङ्खो यत्र प्रदृश्यते। शङ्खवर्णस्य देवानां वामे देवस्य लक्षणम्।। २०।। दामोदरं तथा स्थूलं मध्ये चक्रं प्रतिष्ठितम्। पूर्णद्वारेण संकीर्णा पीतरेखा च दृश्यते।। २१।। छत्राकारे भवेद्राज्यं वर्तुले च महाश्रियः। चपटे च महादुःखं शूलाग्रे तु रणं ध्रुवम्।। २२।। ललाटे शेष भोगस्तु शिरोपरि सुकाञ्चनम्। चक्रकाञ्चनवर्णानां वामदेवस्य लक्षणम्।। २३।। वामपार्श्वे च वै चक्रे कृष्णवर्णस्तु पिङ्गलम्। लक्ष्मीनृसिंहदेवानां पृथग्वर्णस्तु दृश्यते।। २४।। लम्बोष्ठे च दरिद्रं स्यात् पिङ्गले हानिरेव च। लग्नचक्रे भवेद्व्याधिर्विदारे मरणं ध्रुवम् ।। २५।। पादोदकं च निर्माल्यं मस्तके धारयेत्सदा। विष्णोर्दृष्टं भक्षितव्यं तुलसीदल मिश्रितम्।। २६।। कल्पकोटिसहस्राणि वैकुण्ठे वसते सदा। शालग्रामशिलाबिन्दुर्हत्याकोटिविनाशनः।। २७।। तस्मात्संपूजयेद् ध्यात्वा पूजितं चापि सर्वदा। शालग्रामशिलास्तोत्रं यः पठेच्च द्विजोत्तमः।। २८।। स गच्छेत्परमं स्थानं यत्र लोकेश्वरो हरिः। सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति।। २९।। दशावतारा देवानां पृथग्वर्णस्तु दृश्यते। ईप्सितं लभते राज्यं विष्णुपूजामनुक्रमात्।। ३०।। कोटयो ब्रह्महत्यानामगम्यागम्य कोटयः। ताः सर्वा नाशमायान्ति विष्णुनैवेद्यभक्षणात्।। ३१।। विष्णोः पादोदकं पीत्वा कोटिजन्माघनाशनम्। तस्मादष्टगुणं पापं भूमौ बिन्दुनिपातनात् ।। ३२।। रघुवर! यदभूस्त्वं तादृशो वायसस्य प्रणत इति दयालुर्यस्य चैद्यस्य कृष्ण!।

प्रतिभवमपराद्धुर्मुग्धसा– युज्यदोभूर्वद किमु पदमागस्तस्य तेऽस्तिक्षमायाः।। १।। मह्यं मनः फलमिदं मधुकैटभारे, मत्प्रार्थनीय मदनुग्रह एष एव।। त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्यभृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ।। २।। इति श्री शालग्रामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीदेव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्।।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि न च जाने स्तुतिमहो नचाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा।। न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।। १।। विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्याच्युतिरभूत्।। तदेतत्क्षंतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।। २।। पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।। मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।। ४।। परित्यक्त्वा देवान् विविधविधिसेवाकुलतया मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।। ५।। श्वपाको जल्पाको

भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।। ६।। चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।। कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।। ७।। न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववांछापि च न मे, न विज्ञानपेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।। अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिवशिवभवानीति जपतः।। ८।। नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं रूक्षचिंतनपरैर्नकृतं वचोभिः।। श्यामे त्वमेव यदि किंचनमय्यनाथे धत्से कृपामुचितमंबपरं तवैव।। ९।। आपत्सुमग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ताः जननीं स्मरंति ।। १०।। जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णाकरुणाऽस्ति चेन्मयि।। अपराधपरंपरावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम्।। ११।। मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि।। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।। १२।। इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।। अथ श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः।।

ॐ श्रीरामाय नमः; रामभद्राय, रामचन्द्राय, शाश्वताय, राजीवलोचनाय, श्रीमते, राजेन्द्राय, रघुपुङ्गवाय, जानकीवल्लभाय

जैत्राय, जितामित्राय, जनार्दनाय, विश्वामित्रप्रियाय, दान्ताय, शरणत्राणतत्पराय, बालिप्रमथनाय, वाग्मिने, सत्यवाचे सत्यविक्रमाय, सत्यव्रताय, व्रतधराय, सदाहनुमदाश्रिताय, कोसलेशाय, खरध्वंसिने, विराधवधपण्डिताय, विभीषणपरित्रात्रे, हरकोदण्डखण्डनाय, सप्ततालप्रभेत्रे, दशग्रीवशिरोहराय, जामदग्न्यमहादर्पदलनाय, ताटकान्तकाय, वेदान्तसाराय, वेदात्मने, भवरोगभेषजाय, दूषणत्रिशिरोहन्त्रे, त्रिमूर्तये, त्रिगुणात्मकाय, त्रिविक्रमाय, त्रिलोकात्मने, पुण्यचारित्र्यकीर्तनाय, त्रिलोकरक्षकाय, धन्विने, धीरोदत्तगुणोत्तमाय, मायामानुषचारित्राय, महादेवादिपूजिताय, दण्डकारण्यकर्तनाय, अहल्याशापशमनाय, पितृभक्ताय, वरप्रदाय, जितेन्द्रियाय, जितक्रोधाय, जितामित्राय, जगद्गुरवे, ऋक्षवानरसंघातिने, चित्रकूटसमाश्रयाय, जयन्तबाणवरदाय, सुमित्रापुत्रसेविताय, सर्वदेवाधिदेवाय, मृतवानरजीवनाय, मायामारीचहन्त्रे, महादेवाय, महाभुजाय, सर्वदेवस्तुताय, सर्वपुण्याधिकफलाय, सौम्याय, ब्रह्मण्याय, मुनिसंस्तुताय, महायोगिने, महोदराय, सुग्रीवेप्सितराज्यप्रदाय, स्मृतसर्वाघनाशनाय, आदिपुरुषाय, परमपुरुषाय, महापुरुषाय, पुण्योदयाय, दयासाराय, पुराणपुरुषोत्तमाय, स्मितवक्त्राय, मितभाषिणे, पूर्वभाषिणे, राघवाय, अनन्तगुणगम्भीराय, धीरोदात्तगुणोत्तमाय; मायामानुषचारित्राय, महादेवादिपूजिताय, सेतुकृते, जितवाराशये, सर्वतीर्थमयाय, हरये श्यामाङ्गाय, सुन्दराय, शूराय, पीतवाससे, धनुर्धराय, सर्वयज्ञाधिपाय, यज्वने, जरामरणवर्जिताय, विभीषणप्रतिष्ठात्रे,सर्वयज्ञाधिपाय, यज्वने, सर्वापगुणवर्जिताय, परमात्मने, परस्मैब्रह्मणे, सच्चिदानन्दविग्रहाय, परस्मैज्योतिषे, परस्मैधाम्ने, पराकाशाय, परात्पराय, परेशाय, पारगाय, पराय, सर्वदेवात्मकाय, परस्मै नमः, ॥ इति श्रीराम अष्टोत्तरशतनामावलि सम्पूर्णा॥

।। अथ श्रीहनुमत् अष्टोत्तरशतनामावलिः।।

ॐ हनुमते नमः, श्रीप्रदाय, वायुपुत्राय, रुद्राय, अनघाय, अजराय अमृत्यवे, वीरवीराय, ग्रामवासाय जनाश्रयाय, धनदाय, निर्गुणाय, कायाय, वीराय, निधिपतये, मुनये, पिंगाक्षाय, वरदाय, वाग्मिने, सीताशोकविनाशकाय, शिवाय, शर्वाय, पराय, अव्यक्ताय, व्यक्तव्यक्ताय, रसधराय, पिंगकेशाय, पिंगरोम्णे, श्रुतिगम्याय, सनातनाय, अनादये, भगवते, देवाय, विश्वहेतवे, निराश्रयाय, आरोग्यकर्त्रे विश्वेशाय, विश्वनायकाय, हरीश्वराय, भर्गाय, रामाय, रामभक्ताय, कल्याणाय, प्रकृतिस्थिताय, विश्वम्भराय, विश्वमूर्त्तये, विश्वाकाराय, विश्वदाय, विश्वात्मने विश्वसेव्याय, विश्वाय, विश्वहराय, रवये, विश्वचेष्टाय, विश्वगम्याय विश्वधेयाय, कलाधराय, प्लवंगमाय, कपिश्रेष्ठाय, ज्येष्ठाय, विद्याय, वनेचराय, बालाय, वृद्धाय, युने, तत्वाय, तत्वगम्याय, सख्ये,अजाय, अञ्जनीसूनवे, अव्यग्राय, ग्रामस्वांताय, धराधराय, भूर्लोकाय, भुवर्लोकाय, स्वर्लोकाय, महर्लोकाय, जनोलोकाय, तपसे, अव्याय, सव्याय, ओंकारगम्याय, प्रणवाय, व्यापकाय, अमलाय, शिवाय, धर्मप्रतिष्ठात्रे, रामेष्टाय, फाल्गुनप्रियाय, गोष्पदिने, कृतवारीशाय, पूर्णकामाय, धराधिपाय, रक्षोघ्नाय, पुण्डरीकाक्षाय, शरणागतवत्सलाय, जानकीप्राणदात्रे, रक्षः प्राणापहारकाय, पूर्णाय, सत्याय, पीतवाससे, दिवाकरसमप्रभाय, द्रोणहर्त्रे, शक्तिनेत्रे, शक्तये, राक्षसमारकाय, रक्षोगणघ्नाय, रामदूताय १०८ ।। इति श्रीहनुमत् अष्टोत्तरशतनामावलिः सँम्पूर्णा।।

।। अथ इन्द्रकृतलक्ष्मीस्तुतिः।।

सिंहासनगतः शक्रः संप्राप्य त्रिदिवं पुनः।। देवराज्ये स्थितो देवीं तुष्टावाब्जकरां ततः।। १।। इंद्र उवाच।। नमस्ये सर्वभूतानां जननीमब्जसंभवाम्।। श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्।। २।। पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिभेक्षणाम्।। वन्देपद्ममुखी देवीं पदभनाभप्रियामहम्।। ३।। त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।। संध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती।। ४।। यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।। आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी।। ५।। आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दंडनीतिस्त्वमेव च।। सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपै स्त्वयैतद्देवि पूरितम्।। ६।। का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।। अध्यास्ते देवदेवस्य योगचिन्त्यं गदाभृतः।। ७।। त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम्।। विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम्।। ८।। दाराः पुत्रास्तथाऽऽगारं सुहृद्धान्यं धनादिकम्।। भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ।। ९।। शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।। देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्।। १०।। त्वमंबा सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता।। त्वयैतद्विष्णुना चांब जगद्व्याप्तं चराचरम्।। ११।। मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।। मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाःसर्वपावनि।। १२।। मा पुत्रान्मासुहृद्वर्गान् मापशून्मा

विभूषणम्।। त्यजेथाः मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलालये।। १३।। सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।। त्यज्यंते ते नराः सद्यः संत्यक्ता ये त्वयाऽमले।। १४।। त्वयाऽवलोकिताः सद्यःशीलाद्यैरखिलैर्गुणैः कुलैश्वर्यैश्च युज्यंते पुरुषा निर्गुणा अपि।। १५।। स श्लाध्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान्।। स शूरः स च विक्रांतो यस्त्वया देवि वीक्षितः।। १६।। सद्यो वैगुण्यमायांति शीलाद्याः सकला गुणाः।। पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे।। १७।। न ते वर्णयितुं शक्ता गुणाञ्जिह्वाऽपि वेधसः।। प्रसीद देवि पद्माक्षि माऽस्मांस्त्याक्षीः कदाचन।। १८।। श्रीपराशर उवाच।। एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह हृष्टा शतक्रतुम्।। शृण्वतां सर्वदेवानां सर्वभूतस्थिता द्विज।। १९।। श्रीरुवाच।। परितुष्टाऽस्मि देवेश स्तोत्रेणानेन ते हरे।। वरं वृणीष्व यस्त्विष्टो वरदाऽहं तवागता।। २०।। इंद्र उवाच।। वरदा यदि मे देवि वरार्हो यदि वाऽप्यहम्।। त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेषमेऽस्तुवरःपरः।। २१।। स्तोत्रेण यस्तवैतेन त्वां स्तोष्यत्यब्धिसंभवे।। स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयोऽस्तु वरो मम।। २२।। श्रीरुवाच।। त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ न संत्यक्ष्यामि वासव।। दत्ते वरो मयाऽयं ते स्तोत्राराधनतुष्टया।। २३।। यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः। मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी।। २४।। श्रीपराशर उवाच।। एवं वरं ददौ देवी देवराजाय वै

पुरा॥ मैत्रेय श्रीर्महाभागा स्तोत्राराधनतोषिता॥ २५॥ भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्ना श्रीः पूर्वमुदधेःपुनः॥ देवदानवयत्नेन प्रसूताऽमृतमंथने॥ २६॥ एवं यदा जगत्स्वामी देवदेवो जनार्दनः॥ अवतारं करोत्येषा तदा श्रीस्तत्सहायिनी ॥ २७॥ पुनश्च पद्मात् संभूता यदाऽऽदित्योऽभवद्धरिः॥ यदा च भार्गवोरामस्तदाऽभूद्धरणीत्वियम्॥ २८॥ राघवत्वेऽभवत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनि॥ अन्येषु चावतारेषु विष्णोरेषाऽनपायिनी॥ २९॥ देवत्वे देवदेहेयं मानुषत्वे च मानुषी॥ विष्णोर्देहानुरूपां वै करोत्येषाऽऽत्मनस्तनुम्॥ ३०॥ यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म लक्ष्म्या यश्च पठेन्नरः॥ श्रियो न विच्युतिस्तस्य गृहे यावत्कुलत्रयम्॥ ३१॥ पठ्यते येषु चैवेष गृहेषु श्रीस्तवो मुने॥ अलक्ष्मीः कलहाधारा न तेष्वास्ते कदाचन॥ ३२॥ एतत्ते कथितं ब्रह्मन्यन्मां त्वं परिपृच्छसि॥ क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता पूर्वं भृगुसुता सती॥ ३३॥ इति सकल विभूत्यवाप्तिहेतुः स्तुतिरियमिंद्र मुखोद्गता हि लक्ष्म्याः॥ अनुदिनमिह पठ्यते नृभिर्यैर्वसति न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मीः॥ ३४॥ इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमेंशे नवमेऽध्याये लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ कनकधारा श्रीलक्ष्मीस्तवराजस्तोत्रम्॥

श्रीमान्वेङ्कटनाथार्य्यः कवितार्किककेसरी॥ वेदान्ताचार्यवर्य्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥ १॥ ईशानां जग

तोऽस्य वेंकटपतेर्विष्णोःपरां प्रेयसीं तद्वक्षःस्थल नित्यवासरसिकां तत्क्षान्तिसंवर्द्धनीम्।। पद्मालं कृतपाणिपल्लवयुतां पद्मासनस्थां श्रियं वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वंदे जगन्मातरम्।। २।। मानातीतप्रथितविभवां मंगलं मंगलानां वक्षः पीठीं मधुविजयिनो भूषयंतीं स्वकान्त्या।। प्रत्यक्षानुश्रविकमहिमप्रार्थनीनां प्रजानां श्रेयो मूर्तिं श्रियमशरणस्त्वां शरण्यां प्रपद्ये।। ३।। आविर्भावः कलशजलधावध्वरेवापि यस्याः स्थानं यस्याः सरसिजवनं, विष्णुवक्षःस्थलं वा। भूमा यस्या भुवनमखिलं देवि दिव्यं पदं वा स्तोकप्रज्ञैरनवधिगुणास्तूयसे सा कथं त्वम्।। ४।। स्तोतव्यत्वं दिशति भवती देहिभिःस्तूयमाना तामेव त्वामनितरगतिःस्तोतुमाशंसमानः।। सिद्धारम्भःसकलभुवनश्लाघनीयो भवेयं सेवापेक्षा तव चरणयोः श्रेयसे कस्य न स्यात्।। ५।। यत्संकल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां जन्मस्थानप्रलयरचना जंगमाजंगमानाम्।। तत्कल्याणं किमपि यमिनामेकलक्ष्यं समाधौ पूर्णं तेजस्स्फुरतिभवती पादलाक्षारसांकम्।। ६।। निष्प्रत्यूहप्रणयघटितं देवि नित्यानपायं विष्णु स्त्वंचेदनवधिगुणैर्द्वन्द्वमन्योन्यलक्ष्यम्।। शेषश्चित्तं विमलमनसां मौलयश्च श्रुतीनां संपद्यन्ते विहरणविधौ यस्य शय्याविशेषाः।। ७।। उद्देश्यत्वं जननि भजतोरुज्झितोपाधिगंधं प्रत्यग्रूपे हविषि युवयोरेकशेषित्वयोगात्।। पद्मेपत्युस्तव च निगमैर्नित्यमन्विष्यमाणो नावच्छेदं भजति महिमा नर्त्तयन्मानसं

नः॥ ८॥ पश्यंतीषु श्रुतिषु परितः सूरिवृन्देन सार्द्धम्मध्ये कृत्यं त्रिगुणफलकं निर्मितस्थानभेदम्॥ विश्वाधीशप्रणयिनि सदाविभ्रमद्यूतवृत्तौ ब्रह्मेशाद्या दधति युवयोरक्षसारप्रचारम् ॥ ९॥ अस्येशाना त्वमसि जगतः संश्रयंती मुकुन्दं लक्ष्मीः पद्मा जलधितनया विष्णुपत्नीन्दिरेति॥ यन्नामानि श्रुतिपरिमलान्येवमावर्त्तयन्तो नावर्त्तन्ते दुरितपवनप्रेरिते जन्मचक्रे ॥१०॥ त्वामेवाहुः कतिचिदपरे त्वत्प्रियं लोकनाथं किंतैरंतः कलहमलिनैः किं चिदुत्तीर्य्य मग्नैः॥ तत्संप्राप्त्यै विहरति हरौ सम्मुखीनां श्रुतीनां भावारूढौ भगवति युवां दैवतं दम्पती नः॥ ११॥ आपन्नार्तिप्रशमनविधौ बद्धदीक्षस्य विष्णोराचख्युस्त्वां प्रियसहचरीमैकमत्योपपन्नाम्॥ प्रादुर्भावैरपि समतनुः प्राप्त मुन्नीयसे त्वं दूरोत्क्षिप्तैरिव मधुरता दुग्धराशेस्तरङ्गैः ॥ १२॥ धत्ते शोभा हरिमरकते तावकी मूर्तिराद्या तन्वी तुङ्गस्तनभरनता तप्तजाम्बूनदाभा॥ यस्यां गच्छत्युदयविलयैर्नित्य मानन्दसिन्धावुत्पद्यन्ते ललितलहरीविभ्रमं व्यक्तयस्ते॥ १३॥ आसंसारंविततमखिलं वाङ् मयं यद्विभूतिर्यद्भ्रूभंगात्कुसुमधनुषः किंकरो मेरुधन्वा॥ यस्यां नित्यं नयनशतकैरेकलक्ष्यो महेन्द्रः पद्मे तासां परिणतिरसौभावलेशैस्त्वदीयैः॥ १४॥ अग्रे भर्तुः सरसिजमये भद्रपीठे निषण्णामम्भोराशेरधि– गतसुधासम्प्लवादुत्थितां त्वाम्॥ पुष्पासारस्थगितभुवनैः पुष्कलावर्त्तकायैर्दीप्तारंभाः कनककलशैरभ्यसिंचन्गजेन्द्राः ॥१५॥ आलोक्यत्वाममृतसहजे

विष्णुवक्षः स्थलस्थां शापाक्रान्ताः शरणमगमन्सावरोधाः सुरेन्द्राः।। लब्ध्वा भूयस्त्रिभुवनमिदं रक्षितं त्वत्कटाक्षैः सर्वाकारस्थिरसमुदयां संपदं निर्विशन्ति।। १६।। आर्त्तत्राणव्रतिभिरमृता– सारनिम्नांबु– वाहैरंभोजानामुषसिमिषतामंतरङ्गैरपाङ्गैः। यस्यां यस्यां दिशि विहरते देवि दृष्टिस्त्वदीया तस्यां तस्यामहमहमिकां तन्वते सम्पदोघाः।। १७।। योगारम्भत्वरितमनसो युष्मदेकान्तयुक्तं धर्मप्राप्तं प्रथममिह ये धारयन्ते धनाय।। तेषां भूमेर्धनपतिगृहादम्बरादम्बुधेर्वा धारानिर्यात्यधिकमधिकं वांछितानां वसूनाम्।। १८।। श्रेयस्कामाः कमलनिलये चित्रमाम्नायवाचां चूडापीठं तव पदयुगं चेतसा धारयन्तः।। छत्रच्छायासुभगशिरसश्चामरस्मेरपार्श्वाः श्लाघाशब्दश्रवणमुदिताः स्त्रग्विणः सञ्चरन्ति ।। १९।। ऊरीकर्तुं कुशलमखिलं जेतुमादीनरातीन् दूरीकर्तुं दुरितमखिलं त्यक्तुमाद्यामविद्याम् ब्रह्मस्तम्बावधिकजननं ग्रामसीमांतरेखामालम्बंते विमलमनसो विष्णुकन्ते दयान्ते।। २०।। जाताकांक्षा जननि युवयोरेकसेवाधिकारे मायालीढं विभवमखिलं मन्यमानास्तृणाय।। प्रीत्यै विष्णोस्तव च कृतिनः प्रीतिमन्तो भजन्ते वेलाभंगप्रशमनफलं वैदिकं धर्मसेतुम्।। २१।। सेवे देवि त्रिदशमहिलामौलिमालार्चितं ते सिद्धिक्षेत्रं शमितविपदां सम्पदां पादपद्मम्।। यस्मिन्नीषन्नमितशिरसो ज्ञापयित्वा शरीरं वर्तिष्यन्ते वितमसि पदे वासुदेवस्य धन्याः।। २२।। सानुप्रायप्रकटितदयैः शांतवात्सल्यदिग्धैरंभः

स्निग्धैरमृतलहरीलब्धसदब्रह्मचर्यैः।। घर्मे तापत्रयविरचिते गाढतप्तं क्षणं मामाकिंचन्यग्लपितमनघैराद्रियेथाः कटाक्षैः।। २३।। संपद्यन्ते भवभयतमी भानवस्त्वत्प्रसादाद्भावाः सर्वे भगवति हरौ भक्तिमुद्वेलयन्तः।। याचे किन्त्वामहमिहयतः शीतलोदारशाली भूयो भूयो दिशसि महतां मङ्गलानां प्रबंधान्।। २४।। माता देवि त्वमसि कमले वासुदेवः पिता मे जातः सोऽहं जननि युवयोरेकलक्ष्यं दयायाः।। दत्तो युष्मत्परिजनतया देशिकैरप्यतस्त्वं किन्ते भूयः प्रियमिति किल स्मेरववक्त्रा विभासि।। २५।। कल्याणानामविकलनिधिः कापिकारुण्यसीमा नित्यामोदा निगमवचसा— मौलिमन्दारमाला।। संपद्दिव्या मधुविजयिनः सन्निधतां सदा मे सैषा देवी सकलभुवनप्रार्थनाकामधेनुः।। २६।। उपचित गुरुभक्तेरुत्थितं वेङ्कटेशात् कलिकलुषनिवृत्त्यै कल्प्यमानं प्रजानाम्।। सरसिजनिलयायाः स्तोत्रमेतत्पठन्तः सकलकुशलसीमासार्वभौमा भवन्ति।। २७।। कवितार्किकसिंहाय कल्याण गुणशालिने।। श्रीमते वेंकटेशाय वेदान्तगुरवे नमः।। २८।। इति कनकधारा श्रीलक्ष्मीस्तवराजः सम्पूर्णः।।

।। श्रीआदित्य हृदयस्तोत्रम्।।

ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। ॐ आदित्य हृदयभूतब्रह्मदेवतायै

नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। ॐरश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ। ॐ रश्मिमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास— ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट् ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। विनियोगः— ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप्छन्दः, ॐ आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्न तया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ॐ ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥ १॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा॥ २॥ राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥ ३॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।

जयावहं जपन् नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥ ४॥ सर्वमंगलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोक प्रशमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम्॥ ५॥ रश्मिवन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एषदेवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः॥ ७॥ एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः॥ ८॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनो मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणः ऋतुकर्त्ता प्रभाकरः॥ ९॥ आदित्यः सविता सूर्य्यः खगः पूषागभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥ १०॥ हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शंभुस्त्वष्टामार्तण्डकोंऽशुमान्॥ ११॥ हिरणयगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः॥ १२॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥ १३॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महतेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥ १४॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तुते ॥ १५॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥ १६॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहास्रांशो आदित्याय नमो नमः॥ १७॥ नमः उग्राय वीराय

सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥ १८॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥ १९॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नाय च देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥ २०॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१॥ नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥ २२॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥ २३॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमं प्रभुः॥ २४॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावासीदति राघव॥ २५॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्॥ एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति॥ २६॥ अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यासि। एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥ २७॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्ट शोकोऽभवत्तदा। धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥ २८॥ आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥ २९॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जायार्थं समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥ ३०॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥ इति

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

।। अथ नेत्रोपनिषत्।।

अथातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां चक्षूरोगहरां व्याख्यास्यामो यया चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति। अस्याश्चाक्षुषविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।। ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव मां पाहि त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय मम जातरूपं तेजो दर्शय यथाहमन्धो न स्यां तथा कृपया कल्याणं कुरु कुरु मम यानि यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्टकृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय अमृताय। ॐ नमो भगवते सूर्याय। अक्षितेजसे सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माममृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरूपं तपन्तं सहस्ररश्मिभिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॐ नमो भगवते आदित्याय अवाग्वादिने स्वाहा।। इति नेत्रोपनिषत्सम्पूर्णा।।

।। अथ सरस्वतीस्तोत्रम् ।।

ॐ अस्य श्रीसरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीसरस्वती देवता। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।। आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या। सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना।। १।। श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना। अर्चिता मुनिभिः सर्वैऋषिभिः स्तूयते सदा। एवं ध्यात्वा सदा देवीं वांछितं लभते नरः।। २।। शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।। ३।। या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निः शेषजाड्यापहा।। ४।। ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे। पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसंपादयित्रि प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे।। ५।। ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे रूपारूपप्रकाशे

सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे। न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे नापि विज्ञानतत्त्वे विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरनरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे।। ६।। ह्री ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्। विद्ये वेदान्तवेद्ये परिणतपठिते मोक्षेदे मुक्तिमार्गे मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे।। ७।। धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे। पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिमोदे।। ८।।। हूं हूं हूं हूं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि शुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये। मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्तविध्वंसमीडे गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धिसाध्ये।। ९।। स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित्त्यजेथा मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम्। मा मे दुःखं कदाचित्क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदापि।। १०।। इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मृष्टकण्ठः। स्यादिष्टाद्यर्थलाभैः सुतमिव सततं पातितं सा च देवी सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति।। ११।। निर्विघ्नं

तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रन्थबोधः कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षात्। दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो वाग्देव्याः संप्रसादात्त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु॥ १२॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः। सारस्वतो जनः पाठात्सकृदिष्टार्थलाभवान्॥ १३॥ पक्षद्वये त्रयोदश्यामेकविंशतिसंख्यया। अविच्छिन्नः पठेद्धीमान्ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम्॥ १४॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोकविश्रुतः। वाञ्छितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः॥ १५॥ ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्याः स्तवं शुभम्। प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥ १६॥ इति सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

सभी राशियो के अलग–अलग पन्द्रहा यन्त्र

८	१	६	राशि वृ.	८	३	४	राशि मि.	२	७	६	राशि क.	४	९	२	रा शि ध.
३	५	७	राशि कं.	१	५	९	राशि तु.	९	५	१	राशि वृ.	३	५	७	राशि मे.
४	९	२	राशि म.	६	७	२	राशि कु.	४	३	८	राशि मी.	८	१	६	राशि सिं.

पन्द्रहा यंत्र लिखने का मन्त्र– ॐ श्रीं क्लीं चामुंडा देव्यै नमः आला मेंख उवावृख काछा मिथुन डाहा माटा सिंह पाठा कन्या राता तुला नोजा वृश्चिक भाधा घोसा मकर गोशा कुम्भ दाचा मीन ह्याजा मीने पहठा टाणा कन्या विधीयते यवमंत्र विजानीयात् आलाई मेंख उच्यते १५

विविध उपयोगी यन्त्र

३० जंत्र तीसा गर्भ स्तंभन

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

३४ चौंतीसा

९	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

प्रेतबाधा निवारक यन्त्र

ॐ	३२	३२	३२	३२	ॐ
३२	१०	५	१४	३	३२
३२	१३	४	९	६	३२
३२	१	१२	७	१२	३२
३२	८	११	२	११	३२
ॐ	३२	३२	३२	३२	ॐ

आरोग्यवर्धक बतीसा यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

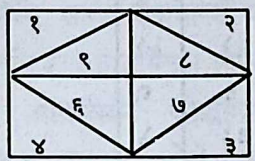

नव घर का बीसा

८	१	६
३	१०	७
४	९	२

इस बत्तीसा यंत्र को हल्दी से भोजपत्र पर अथवा शुद्ध कागज पर रविवार को व्रत रखकर अनार की कलम से लिखे। फिर रुई मिलाकर उस यंत्र की बत्ती बनाकर उसकी ज्योति जलाये और श्री सूर्यनरायण भगवान को दिखाये ओर हल्दी की माला से 'ओं ह्रीं हंसः' इस मंत्र का ११०० जप करे। ऐसा सात रविवार तक करने से दुःखों से मुक्ति मिलती है।

।। अथ सीता अष्टोत्तर नामावलिः।।

ॐ सीतायै नमः, जानक्यै, देव्यै, वैदेह्यै, राघवप्रियायै, रमायै, अवनिसुतायै, रामायै, राक्षसान्तप्रकारिण्यै, रत्नगुप्तायै, मातुलिंग्यै, मैथिल्यै, भक्ततोषदायै, पद्माक्षजायै, कंजनेत्रायै, स्मितास्यायै, नूपुरस्वनायै, वैकुण्ठनिलयायै, मायै २०, श्रियै, मुक्तिदायै, कामपूरिण्यै, नृपात्मजायै, हेमवर्णायै, मृदुलांग्यै, सुभाषिन्यै, कुशाम्बिकायै, दिव्यदायै, लवमात्रे, मनोहरायै,

हनुमद्वन्दितपदायै, मुग्धायै, केयूरधारिण्यै, अशोकवनमध्यायै, रावणादिकमोहिन्यै, विमानसंस्थितायै सुभ्रुवे सुकेश्यै, रत्नान्वितायै, रजोरूपायै, सत्त्वरूपायै, तामस्यै वह्निवासिन्यै, हेममृगासक्तचित्तायै, वाल्मीकाश्रमवासिन्यै, पतिव्रतायै, महामायायै, पीतकौशेयवासिन्यै, मृगनेत्रायै, बिम्बोष्ठ्यै, धनुर्विद्याविशारदायै, सौम्यरूपायै, दशरथस्नुषायै, चामरवीजितायै, सुमेधादुहित्र्यै, दिव्यरूपायै, त्रिलोकपालिन्यै, अन्नपूर्णायै, महालक्ष्म्यै, धिये, लज्जायै, सरस्वत्यै, शान्त्यै, पुष्ट्यै, शमायै, गौर्यै, प्रभायै, अयोध्यानिवासिन्यै, वसन्तशीतलायै, स्नानसन्तुष्टमानसायै, भद्रसंस्थायै, हेमकुम्भपयोधरायै, सुरार्चितायै, धृत्यै, कान्त्यै, स्मृत्यै, मेधायै, विभावर्यै, लघूदर्यै, वरारोहायै, हेमकङ्कणमण्डितायै, द्विजपत्न्यार्पितनिजभूषायै, राघवतोषिण्यै, श्रीरामसेवनरतायै, रत्नताटंकधारिण्यै, रामवामांगसंस्थायै, रामचन्द्रैकरंजिन्ये, सरयूजलसंक्रीडाकरिण्यै, राममोहिन्यै, सुवर्णकुलितायै, पुण्यायै पुण्यकीर्त्यै, कलावत्यै, कलकण्ठायै, कम्बुकण्ठाये, दम्भोरुवे, गजगामिन्यै, रामार्पितमनायै, रामवन्दितायै १०० रामवल्लभायै श्रीरामपदचिह्नांकायै रामरामेतिभाषिण्यै, रामांघ्रिक्षालिन्यै, रामपर्यंकशयनायै, कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै, मातुलिंगकरधृतायै, दिव्यचन्दनसंस्थायै, मूलकासुरमर्दिन्यै नमः १०८॥ इति श्रीसीताअष्टोत्तरशत नमावालि सम्पूर्णा॥

सद्यः आरोग्यकरं सूर्यार्घ्यविधानम्

सुदिने कृतनित्यक्रिय आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम अमुकस्य वा अमुकज्वरादिव्याधिसमूलनिरासद्धारा सद्य आरोग्यार्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं हंसादिसप्ततिनामभिः श्रीसूर्य्याय सप्तत्यर्घ्यदानमहं करिष्ये। इति संकल्पः।

भूतशुद्ध्यादि कृत्वा सामान्यार्घ्यं कल्पयेत्। विगृह्यपाणियुग्मेन ताम्रपात्रं सुनिर्मलम्। जानुभ्यामवनीं गत्वा परिपूर्य्य जलेन च॥ १॥ करवीरादिकुसुमैरर्क्तचन्दनमिश्रितैः। दूर्वाङ्कुरैरक्षतैश्च निक्षिप्तैः पात्रमध्यतः॥ २॥ दद्यादर्घ्यमनर्घाय सवित्रे ध्यानपूर्वकम्॥ उपमौली समानीय तत्पात्रे नान्यदिङ्मनाः॥ ३॥ प्रतिमन्त्रं नमस्कुर्यादुदयास्तमिते रवौ। अनया नामसप्तत्या महामन्त्ररहस्यया ॥ ४॥ एवमर्घ्यं प्रकल्प्य पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रणम्य यथोक्तविधिना प्रत्येकनाम्ना बृहत्पात्रे घटे जले वा अर्घ्यं दद्यात्। तद्यथा— ॐ हंसाय नमः॥ १॥ ॐ भानवे नमः॥ २॥ ॐ सहस्रांशवे नमः॥ ३॥ ॐ तपनाय नमः॥ ४॥ ॐ तापनाय नमः॥ ५॥ ॐ रवये नमः॥ ६॥ ॐ विकर्तनाय नमः॥ ७॥ ॐ विवस्वते नमः॥ ८॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥ ९॥ ॐ विभावसवे नमः॥ १०॥ ॐ विश्वरूपाय नमः॥ ११॥ ॐ विकर्त्रे नमः॥ १२॥ ॐ मार्तण्डाय नमः॥ १३॥ ॐ मिहिराय नमः॥ १४॥ ॐ अंशुमते नमः॥ १५॥ ॐ आदित्याय नमः॥ १६॥ ॐ उष्णगवे नमः॥ १७॥ ॐ सूर्याय नमः॥ १८॥ ॐ अर्य्यम्णे नमः॥ १९॥ ॐ व्रघ्नाय नमः॥ २०॥ ॐ दिवाकराय नमः॥ २१॥ ॐ द्वादशात्मने नमः॥ २२॥ ॐ सप्तहयाय नमः॥ २३॥ ॐ भास्कराय नमः॥ २४॥ ॐ अहस्कराय नमः॥ २५॥ ॐ खगाय नमः॥ २६॥ ॐ सुराय नमः॥ २७॥ ॐ प्रभाकराय नमः॥ २८॥ ॐ श्रीमते नमः॥ २९॥ ॐ लोकचक्षुषे नमः॥ ३०॥ ॐ ग्रहेश्वराय नमः॥ ३१॥ ॐ लोकेशाय नमः॥ ३२॥ ॐ लोकसाक्षिणे नमः॥ ३३॥ ॐ तमोरये नमः॥ ३४॥ ॐ शाश्वताय नमः॥ ३५॥ ॐ मुचये नमः॥ ३६॥ ॐ गभस्तिहस्ताय नमः॥ ३७॥ ॐ तीव्रांशवे नमः॥ ३८॥ ॐ तरणये नमः॥ ३९॥ ॐ सुमहोरुणये नमः॥ ४०॥ ॐ द्युमणये नमः॥ ४१॥ ॐ हरिदश्वाय नमः॥ ४२॥ ॐ अर्काय नमः॥ ४३॥ ॐ भानुमते

नमः॥ ४४॥ ॐ भयनाशनाय नमः॥ ४५॥ ॐ छन्दोऽश्वाय नमः॥ ४६॥ ॐ वेदवेद्याय नमः॥ ४७॥ ॐ भास्वते नमः॥ ४८॥ ॐ पूष्णे नमः॥ ४९॥ ॐ वृषाकपये नमः॥ ५०॥ ॐ एकचक्ररथाय नमः॥ ५१॥ ॐ मित्राय नमः॥ ५२॥ ॐ मन्देहारये नमः॥ ५३॥ ॐ तमिस्रहन्त्रे नमः॥ ५४॥ ॐ दैत्यहन्त्रे नमः॥ ५५॥ ॐ पापहर्त्रे नमः॥ ५६॥ ॐ धर्म्माय नमः॥ ५७॥ ॐ प्रकाशकाय नमः॥ ५८॥ ॐ हेलिकाय नमः॥ ५९॥ ॐ चित्रभानवे नमः॥ ६०॥ ॐ कलिघ्नाय नमः॥ ६१॥ ॐ तार्क्ष्य वाहनाय नमः॥ ६२॥ ॐ दिक्पतये नमः॥ ६३॥ ॐ पद्मिनीनाथाय नमः॥ ६४॥ ॐ कुशेशयकराय नमः॥ ६५॥ ॐ हरये नमः॥ ६६॥ ॐ घर्मरश्मये नमः॥ ६७॥ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः॥ ६८॥ ॐ चण्डांशवे नमः॥ ६९॥ ॐ कश्यपात्मजाय नमः॥ ७०॥ एभिः सप्ततिसंख्याकैः पुण्यैः सूर्यस्य नामभिः। प्रणवादिचतुर्थ्यैन्तैर्नमस्कारसमायुतैः॥ १॥ प्रत्येकमुच्चरन्नाम दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवाकरम्। एवं कुर्वन्नरो याति न दारिद्र्यं न शोकभाक्॥ २॥ व्याधिभिर्मुच्यते घोरैरपि जन्मान्तरार्जितैः। विनौषधैर्विना वैद्यैर्विना वश्यपरिग्रहैः॥ ३॥ कालेन निधनं प्राप्य सूर्यलोके महीयते॥ इति श्रीसूर्य्यार्घ्यविधानस्य सर्वव्याधिहरो विधिः सम्पूर्णः॥

॥ इति श्रीबृहत्कवचसंग्रहः सम्पूर्णः॥

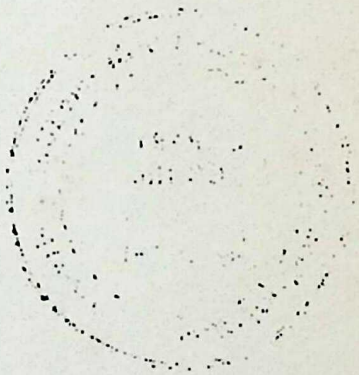

लघुसिद्धान्त कौमुदी : सुबोधिनी संस्कृत, हिन्दी टीका सहित, सम्पादक: हरेकान्त मिश्र Ed.1992 H.B.100.00 P.B.75.00

मृच्छकटिकम् : 'जयन्ती' संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित : आचार्य जगदीश प्रसाद पाण्डेय एवं मदन गोपाल बाजपेयी Ed.1993 H.B. 150.00 P.B. 80.00

दशकुमारचरितम् : (पूर्णपीठिका) प्रसंग प्रदीपिका संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित, व्याख्याकार : यमुनेश त्रिपाठी 'चातक' Ed.1992 10.00

तर्कसंग्रह : (गुटका)-पदकृत्य हिन्दी अनुवाद सहित, सम्पादक : पं० रामगोविन्द शुक्ल Ed.1997 10.00

चन्द्रालोक : (सम्पूर्ण) हिन्दी, संस्कृत व्याख्या सहित, सम्पादक : त्रिलोकीनाथ द्विवेदी Ed.1996 H.B. 60.00 P.B. 40.00

कुमारसम्भवम् : सम्पादक : पं० जितेन्द्राचार्य Ed.1993 1-2 सर्ग 20.00 5वां सर्ग 10.00

किरातार्जुनीयम् : (महाकवि भाघ) संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित, सम्पादक : अमलधारी सिंह एवं डा० चन्द्रमौली द्विवेदी Ed.1986 1-2 सर्ग 20.00

कर्पूरमञ्जरी : (राजशेखर कृत) संस्कृत छाया अन्वय मनोरमा संस्कृत, हिन्दी व्याख्या तथा विशेष टिप्पणियों सहित, सम्पादक : सुदर्शन लाल जैन Ed.1989

कादम्बरी : 'शुकनासोपदेश' (भानुचन्द्र सिद्धचन्द्र टीका भावानुवाद व्याकरणिक विशेषता सरल संस्कृत व्याख्या सहित व्याख्याकार : सुदेश नारंग) Ed.1990 20.00

कठोपनिषद् : मूल शांकरभाष्य हिन्दी, अंग्रेजी व्याख्या सहित : रामरंग शर्मा Ed.1995 30.00

ईशावास्योपनिषद : शांकरभाष्य अन्वयार्थ तथा हिन्दी व्याख्या एवं आंग्लानुवाद सहित : शशि मिश्रा Ed.1997 H.B. 75.00 P.B. 50.00

BHARTIYA VIDYA PRAKASHAN

1. 1, UB, Jawahar Nagar, Bunglow Road, Delhi-7
Phone : 2521570

1. P.B. No. 1108, Kachauri Gali Varanasi-221001 (U.P.)
Phone : 392579

लघुसिद्धान्त कौमुदी : सुबोधिनी संस्कृत, हिन्दी टीका सहित, सम्पादक: हरेकान्त मिश्र Ed.1992 H.B.100.00 P.B.75.00

मृच्छकटिकम् : 'जयन्ती' संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित : आचार्य जगदीश प्रसाद पाण्डेय एवं मदन गोपाल वाजपेयी Ed.1993 H.B. 150.00 P.B. 80.00

दशकुमारचरितम् : (पूर्णपीठिका) प्रसंग प्रदीपिका संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित, व्याख्याकार : यमुनेश त्रिपाठी 'चातक' Ed.1992 10.00

तर्कसंग्रह : (गुटका)-पदकृत्य हिन्दी अनुवाद सहित, सम्पादक : पं॰ रामगोविन्द शुक्ल Ed.1997 10.00

चन्द्रालोक : (सम्पूर्ण) हिन्दी, संस्कृत व्याख्या सहित, सम्पादक : त्रिलोकीनाथ द्विवेदी Ed.1996 H.B. 60.00 P.B. 40.00

कुमारसम्भवम् : सम्पादक : पं॰ जितेन्द्राचार्य Ed.1993 1-2 सर्ग 20.00 5वां सर्ग 10.00

किरातार्जुनीयम् : (महाकवि माघ) संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित, सम्पादक : अमलधारी सिंह एवं डा॰ चन्द्रमौली द्विवेदी Ed.1986 1-2 सर्ग 20.00

कर्पूरमञ्जरी : (राजशेखर कृत) संस्कृत छाया अन्वय मनोरमा संस्कृत, हिन्दी व्याख्या तथा विशेष टिप्पणियों सहित, सम्पादक : सुदर्शन लाल जैन Ed.1989 30.00

कादम्बरी : 'शुकनासोपदेश' (भानुचन्द्र सिद्धचन्द्र टीका भाषानुवाद व्याकरणिक विशेषता सरल संस्कृत व्याख्या सहित-व्याख्याकार : सुदेश नारंग) Ed.1990 20.00

कठोपनिषद् : मूल शांकरभाष्य हिन्दी, अंग्रेजी व्याख्या सहित : रामरंग शर्मा Ed.1995 30.00

ईशावास्योपनिषद : शांकरभाष्य अन्वयार्थ तथा हिन्दी व्याख्या एवं आंग्लानुवाद सहित : शशि तिवारी Ed.1997 H.B. 75.00 P.B. 50.00

BHARTIYA VIDYA PRAKASHAN

1. 1, UB, Jawahar Nagar
Bunglow Road, Delhi-7
Phone : 2521570

2. P.B. No. 1108, Kachauri Gali
Varanasi-221001 (U.P.)
Phone : 322376